सत्यमेव जयते

अभिव्यक्ति

नराकास (उपक्रम), कोलकाता की अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका, अंक-32, अगस्त 2025

अंक 32

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अध्यक्ष कार्यालय : कोल इंडिया लिमिटेड, कोल भवन, न्यूटाउन, राजरहाट, कोलकाता

नराकास (उपक्रम) कोलकाता को मिला द्वितीय पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 5 मार्च, 2025 को गुवाहाटी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस गरिमामयी अवसर पर नराकास (उपक्रम) कोलकाता को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह प्रतिष्ठित सम्मान असम के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा और माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय के कर कमलों द्वारा नराकास (उपक्रम), कोलकाता के अध्यक्ष डॉ. विनय रंजन को प्रदान किया गया। प्रशस्ति प्रमाण-पत्र समिति के सदस्य सह सचिव श्री राजेश कुमार साव ने ग्रहण किया।

यह पुरस्कार हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन, राजभाषा नीतियों के अनुपालन एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह सम्मान न केवल कोल इंडिया लिमिटेड बल्कि समस्त नराकास (उपक्रम), कोलकाता के लिए गर्व का विषय है। नराकास (उपक्रम) कोलकाता हिंदी भाषा के सतत् प्रोत्साहन एवं उसके संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत है और भविष्य में भी राजभाषा के समुचित क्रियान्वयन हेतु प्रतिबद्ध रहेगा।

डॉ. विनय रंजन
अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम), कोलकाता व
निदेशक (कार्मिक एवं औद्योगिक संबंध)
कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता

अध्यक्ष महोदय का संदेश

प्रिय पाठकों,

हिंदी पत्रिका अभिव्यक्ति के 32वें अंक के प्रकाशन के सुअवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

यह अंक विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि यह राजभाषा हिंदी की गौरवशाली यात्रा के 50 वर्षों की उपलब्धियों, संघर्षों एवं प्रेरणाओं का दस्तावेज़ है। हिंदी भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि हमारे संवेदनशील, सांस्कृतिक और भावनात्मक अस्तित्व की पहचान है। इन पाँच दशकों में हिंदी ने प्रशासनिक, साहित्यिक और तकनीकी क्षेत्रों में एक सशक्त भूमिका निभाई है, और इसकी प्रगति हम सभी के लिए गर्व का विषय है।

कोल इंडिया लिमिटेड एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता के समवेत प्रयासों ने कोलकाता स्थिति उपक्रमों एवं शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी के प्रचार-प्रसार को नए आयाम दिए हैं। अभिव्यक्ति पत्रिका उसी प्रयास का एक जीवंत उदाहरण है, जो न केवल भाषा को सशक्त करती है बल्कि कर्मचारियों की रचनात्मक ऊर्जा और प्रतिबद्धता को भी उजागर करती है।

मैं आशा करता हूँ कि यह अंक हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा देगा और हमें राजभाषा के उत्थान में सक्रिय भागीदारी के लिए और उत्साहित करेगा।

आप सभी का सहयोग एवं समर्पण सराहनीय है। आइए, हिंदी की इस अद्भुत यात्रा को आगे बढ़ाएँ और इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएँ।

धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।

वि० रंजन
(डॉ. विनय रंजन)

डॉ. विचित्रसेन गुप्त
उप निदेशक (कार्यान्वयन)
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र), कोलकाता
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

उप निदेशक (कार्यान्वयन) का संदेश

प्रिय साथियों,

“भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, यह हमारे विचारों, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना की आत्मा है। जब भाषा सशक्त होती है, तो राष्ट्र और भी सशक्त बनता है।”

यह अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता अपनी छमाही राजभाषा पत्रिका “अभिव्यक्ति” के 32वें अंक का प्रकाशन, राजभाषा हिंदी की स्वर्णिम यात्रा को समर्पित करते हुए कर रही है। यह अवसर, राजभाषा की पचास वर्षों की उपलब्धियों तथा उसके अंगीकरण की हीरक जयंती का उत्सव मनाने के साथ-साथ, राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों एवं भाषायी एकता के प्रति हमारे संकल्प को पुनः दृढ़ करने का भी है।

राजभाषा की इस गौरवशाली यात्रा को रेखांकित करने वाले इस अंक में सूचनाप्रद एवं बहुपयोगी रचनाएँ और आलेख शामिल हैं, जो न केवल पठन-सुख प्रदान करेंगे, बल्कि हिंदी के संवर्धन में भी प्रेरणादायक सिद्ध होंगे। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति है-एक ऐसा धागा जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत के लिए सुंदर हार का सृजन करता है एवं विविधता में एकता का सेतु बनाता है। इसकी सहजता, सरलता और समावेशिता ने इसे शिक्षा, तकनीक, व्यापार और प्रशासन के क्षेत्र में व्यापक स्वीकृति दिलाई है।

इस अवसर पर, मैं उन सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्वानों एवं भाषा सेवियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके समर्पण, निष्ठा एवं अथक प्रयासों से यह उपलब्धि संभव हुई है। मैं “अभिव्यक्ति” के सभी रचनाकारों, संपादन समिति के सदस्यों तथा इसके प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों, संगठनों और सदस्य कार्यालयों का भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

मुझे विश्वास है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता तथा सभी संबंधित कार्यालय इसी प्रकार हिंदी की सेवा में निरंतर संलग्न रहेंगे और क्षेत्रीय बाधाओं के बावजूद कार्यालयीन कार्यों में शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करेंगे। “अभिव्यक्ति” का यह अंक राजभाषा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के उत्थान के प्रति हमारे संकल्प का सशक्त दस्तावेज़ बने-यही मेरी मंगलकामना है।

(डॉ. विचित्रसेन गुप्त)

सदस्य सचिव एवं प्रधान संपादक का संदेश

राजेश वी. नायर
सदस्य सचिव एवं प्रधान संपादक, नराकास (उपक्रम)
कोलकाता व महाप्रबंधक (कार्मिक/राजभाषा)
कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता

प्रिय हिंदी प्रेमियों,

नराकास (उपक्रम), कोलकाता की हिंदी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 32वें अंक के प्रकाशन का यह अवसर मेरे लिए अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है। यह अंक विशेष रूप से राजभाषा हिंदी की गौरवशाली 50 वर्षों की यात्रा को समर्पित है-एक ऐसी यात्रा जिसने हमें भाषा के माध्यम से हमारी संस्कृति, संवेदना और आत्म-गौरव से जोड़ने का कार्य किया है।

बीते पाँच दशकों में राजभाषा हिंदी ने प्रशासनिक दक्षता के साथ-साथ साहित्यिक और सृजनात्मक ऊँचाइयों को भी छुआ है। यह मात्र भाषा नहीं, बल्कि हमारी साझी विरासत का जीवंत प्रतीक है। हिंदी ने संगठनात्मक संवाद को सरल बनाया है, साथ ही कर्मचारी वर्ग में रचनात्मकता, समर्पण और जुड़ाव को भी प्रोत्साहित किया है।

'अभिव्यक्ति' पत्रिका, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता के प्रयासों का प्रतिफल है, जिसमें विविध रचनात्मक योगदानों के माध्यम से हम राजभाषा हिंदी की शक्ति और सौंदर्य को उजागर करते हैं। यह मंच न केवल लेखन के माध्यम से सृजन को बढ़ावा देता है, बल्कि हिंदी के प्रति आत्मीयता और सामाजिक जागरूकता को भी मजबूत करता है।

इस विशेषांक के माध्यम से हम न केवल अतीत की उपलब्धियों को स्मरण कर रहे हैं, बल्कि भावी प्रयासों की दिशा भी निर्धारित करेंगे। मैं समस्त सहयोगियों, रचनाकारों और पाठकों को इस महत्वपूर्ण यात्रा के सहभागी बनने हेतु हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को और अधिक प्रभावशाली, व्यवहारिक और जन-प्रिय बनाएँ।

शुभकामनाओं सहित,

नायर

(राजेश वी. नायर)

संपादकीय

संजीव कुमार पाठक
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

प्रिय पाठकगण,

आपकी विद्वत्तापूर्ण पठन और लेखन क्षमता के आधार पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता निरंतर अपनी अर्घवार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का सफल प्रकाशन कर रही है। इसी क्रम को जारी रखते हुए राजभाषा हिंदी की गौरवशाली यात्रा के थीम के साथ इसका 32वाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक के माध्यम से हमारे लेखकों का विचार आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस अंक के प्रकाशन हेतु पत्रिका के संपादक मंडल की ओर से पूर्ण सहयोग प्राप्त होने के फलस्वरूप राजभाषा हिंदी की गौरवशाली यात्रा से संबंधित 32वें अंक के प्रकाशन का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है जिसके लिए मैं आभार प्रकट करता हूँ।

'अभिव्यक्ति' पत्रिका नराकास और इसके सदस्य कार्यालयों के बीच एक ऐसी कड़ी है जो राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में गतिशीलता प्रदान करने में महत्वपूर्ण सहयोग कर रही है और सदस्य कार्यालयों से इस पत्रिका के लिए उत्तम रचनाएं प्राप्त हो रही हैं जो यह दर्शाती है कि विभिन्न उपक्रमों में कार्यरत कर्मचारियों में हिंदी के प्रति कितनी अभिरूचि है। पत्रिका के इस अंक में नराकास एवं उसके सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत हिंदी लेख, कविता, कार्यालय क्रियाकलाप एवं उनके कार्यालयों में आयोजित राजभाषा संबधी गतिविधियों को समाहित किया गया है।

पत्रिका के थीम के अनुसार राजभाषा की गौरवशाली यात्रा के दौरान विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा गतिविधियों के निरंतर विकास और उसकी बढ़ती प्रतिष्ठा का पूर्ण रूप से ध्यान रखा गया गया है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन के सपनों को साकार कर रहे हैं और वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुसार अपनी पत्रिका का थीम बनाते हैं। इस पत्रिका में भी राजभाषा की गौरवशाली यात्रा पर तैयार की गई रचनाओं को स्थान दिया गया है ताकि इसके थीम को सही रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

'अभिव्यक्ति' केवल मात्र एक पत्रिका ही नहीं वरन विविध रचनाओं और राजभाषा गतिविधियों का श्रृंखलाबद्ध संकलन है जिसे धरोहर के रूप में सहेजा जा रहा है जो निकट भविष्य में नई पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का श्रोत बनेगा।

इस पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का यह प्रयास रहा है कि हिंदी का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार हो सके और सभी सदस्य कार्यालयों को एक सार्थक मंच प्रदान किया जा सके और उन सभी के योगदान से पत्रिका का प्रकाशन किया जा सके। समिति इसके लिए सदैव तत्पर है कि केवल मात्र समिति का नहीं बल्कि इसके सदस्य कार्यालयों में भी हिंदी का निरंतर विकास होता रहे और साहित्यिक हिंदी के साथ-साथ राजभाषा हिंदी का भी प्रचार-प्रसार सुनिश्चित किया जा सके।

मैं सभी रचनाकारों और पाठकों का आभार प्रकट करता हूँ जिनकी रचनाओं के बिना पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं हो पाता। साथ ही इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी सहयोगियों को उनके इस सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

आप सभी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि इस पत्रिका की रचनाओं पर आपकी प्रतिक्रिया व्यक्त करें और अपने सुझावों से हमें लाभान्वित करें ताकि आगे इसे और बेहतर बनाया जा सके।

साभार,

(संजीव कुमार पाठक)

यदि हिन्दी की उन्नति नहीं होती तो ये देश का दुर्भाग्य है। – बंकिमचन्द्र चटर्जी

संपादक मंडल

डॉ. विनय रंजन
अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम), कोलकाता तथा
निदेशक (कार्मिक एवं औद्योगिक संबंध)
कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता

श्री राजेश वी. नायर
सदस्य सचिव एवं प्रधान संपादक, नराकास (उपक्रम)
कोलकाता व महाप्रबंधक (कार्मिक/राजभाषा)
कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता

श्री राजेश साव
सदस्य सह सचिव, नराकास (उपक्रम)
प्रबंधक (रा.), कोल इंडिया लिमिटेड

श्री संजीव कुमार पाठक
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

श्री मनीष कुमार सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)
गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड

श्री प्रियांशु प्रकाश
उप प्रबंधक (राजभाषा)
कोल इंडिया लिमिटेड

श्री सौरभ मुस्कान
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा एवं मानव संसाधन)
ब्रिज एण्ड रुफ कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

सुश्री शैली साव
हिंदी सहायक
श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता

प्रकाशन सम्पर्क

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता

संयोजक कार्यालय : कोल इंडिया लिमिटेड, कोल भवन, एक्शन एरिया-1 ए, न्यूटाउन, कोलकाता-700156

अनुक्रमणिका

शुभ-संदेश

1	**डॉ. विनय रंजन,** अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम), कोलकाता तथा निदेशक (कार्मिक एवं औद्योगिक संबंध), कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता	3
2	**डॉ. विचित्रसेन गुप्त,** उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), कोलकाता	4
3	**श्री राजेश वी. नायर,** सदस्य सचिव व प्रधान संपादक, नराकास (उपक्रम), व उप महाप्रबंधक (का/रा), कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता	5
4	**संपादकीय : श्री संजीव कुमार पाठक,** वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, कोलकाता	6

गद्य-लेखन

5	नराकास (उपक्रम), कोलकाता की वर्ष 2024-25 की दूसरी अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक - जनवरी 2025		9
6	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में फरवरी 2025 से जुलाई, 2025 के दौरान आयोजित कार्यक्रम/ गतिविधियां		15
7	भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं खाद्य सुरक्षा	**राजीव रंजन,** कार्यकारी (सामान्य), केन्द्रीय भंडारगृह, रानीनगर	22
8	राजभाषा हिंदी को समर्पित राष्ट्रीय हिंदी पत्रिका : राजभाषा भारती	**शशि कुमार पृथ्वी,** उप प्रबंधक, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड	23
9	वित्तीय प्रबंधन : सफलता की नींव	**विजय सागर,** कनिष्ठ सहायक (राजभाषा), इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड	24
10	इस ट्रिक से आप भी हासिल कर सकते हैं 100% पत्राचार का लक्ष्य	**बिनय कुमार शुक्ल,** कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, कर्मचारी राज्य बीमा निगम	26
11	हिंदी-आत्मनिर्भर भारत की आत्मा और आवाज़	**श्वेतांशु,** उप प्रबंधक (कॉर्पोरेट योजना), ब्रिज एंड रूफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड	28
12	कुंभ मेला : भारत की सांस्कृतिक विरासत	**अजय कुमार साव,** हिंदी अधिकारी, भारतीय नौवहन निगम लिमिटेड	30
13	खोयी "मानसा" की मनसा	**अपर्णा दास,** तकनीकी सहायक, भारतीय खाद्य निगम	32
14	बच्चे को बच्चा ही समझिए	**नित्यानंद सिंह,** वरिष्ठ प्रबंधक (ओएच), हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड	33
15	मैं और तितली शिविर और सबको जोड़ता हिमालयन नेचर ऐडवेंचर फाउंडेशन	**रीना पाण्डेय,** प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय खाद्य निगम	34
16	राजभाषा हिंदी की गौरवशाली यात्रा	**आयोन घोष,** कार्यालय सहायक, ऑयल इंडिया लिमिटेड	37
17	हिंदी : आत्मा की आवाज़, कार्यालय की भाषा : एक भावनात्मक कथा	**जयश्री बंसल,** प्रबंधक (समन्वय), ब्रिज एंड रूफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड	39
18	राजभाषा हिंदी की स्वर्णिम यात्रा	**सौरभ मुस्कान,** वरिष्ठ प्रबंधक, ब्रिज एंड रूफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड	41
19	हिंदी के क्षेत्र में रोजगार के अवसर : एक विस्तृत विवरण	**प्रियांशु प्रकाश,** उप प्रबंधक (राजभाषा), कोल इण्डिया लिमिटेड	44
20	दुर्गापूजा और हिंदी पखवाड़ा संस्कृति और भाषा का अद्भुत संगम	**अतनु चट्टोपाध्याय,** प्रबंधक (राजभाषा), भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड	51
21	राजभाषा हिंदी की गौरवशाली यात्रा	**जुथिका दास,** तकनीकी सहायक, भारत खाद्य निगम	52
22	डिजिटल डिटॉक्स : एक कनेक्टेड दुनिया में संतुलन की खोज	**रिशिता चौधरी,** उप प्रबंधक (वाणिज्यिक), ब्रिज एंड रूफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड	55
23	प्रसन्नता	**वरुण कुमार पोद्दार,** लेखाकार, भारतीय पटसन निगम लिमिटेड	57

काव्यांजलि

24	टूट रहा है हौसला	**प्रसून कुमार,** सहायक महाप्रबंधक (पाइपिंग), इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड	25
25	बारिस की बूँदे	**सत्येन्द्र कुमार पाण्डेय,** सहायक महाप्रबंधक (कार्मिक व प्रशासन), एंड्रयू यूल एंड कंपनी लिमिटेड	29
26	हिंदी : एक सजीव सपना	**अमित कुमार साव गोंड,** कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड	43
27	पहलगाम	**गजानन कुमार दुबे,** उप प्रबंधक (वित्त), कोल इण्डिया लिमिटेड	59
28	बर्फ सी जिंदगी	**राकेश देवगड़े,** अनुवादक, कोल इण्डिया लिमिटेड	60
29	आँगन के हिस्सेदार	**शैली साव,** हिंदी सहायक, श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता	61
30	चिराग	**अमन कुमार शाह,** वरिष्ठ सहायक (राजभाषा), बामर लॉरी एण्ड कम्पनी लिमिटेड	61
31	हिंदी का परचम	**कुणाल कुमार,** राजभाषा प्रभारी, भारत संचार निगम लिमिटेड	62
32	बेलगाम पहलगाम	**श्रीरंग जाधव,** वरिष्ठ प्रबंधक (सतर्कता), भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण	63
33	हिंदी की गौरवगाथा	**कुणाल वैद्य,** प्रबंधक, भारत संचार निगम लिमिटेड	64
34	हिंदी की गौरवशील यात्रा	**दया शंकर,** सहायक श्रेणी-III (डिपो), भारतीय खाद्य निगम, मं.का. (पोर्ट डिपो)	65

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को सुनने के लिए QR कोड को अपने मोबाइल से स्कैन करें। यह QR कोड रचनाओं के हर पृष्ठ पर दिया गया है। बाई ओर ऊपर दिये गए QR कोड को स्कैन करके आप अनुक्रम में दिये गए सभी रचनाओं को सुन सकते है। नीचे अब तक प्रकाशित पत्रिकाएँ दिये गए है, आप उसे पीडीएफ़ या फ्लिप बुक में क्लिक करके देख सकते हैं।

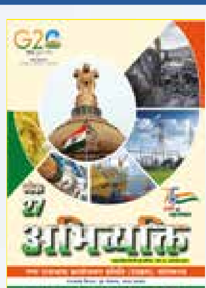

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए संपादक, प्रबंधकीय मंडल तथा नराकास प्रबंधन किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। निःशुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

नराकास (उपक्रम), कोलकाता की वर्ष 2024-25 की दूसरी अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक - जनवरी 2025

राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त कैलेण्डर के अनुसार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता की वर्ष 2024-25 की दूसरी समीक्षा बैठक दिनांक 22 जनवरी, 2025 को रॉयल पैवेलियन,होटल ताज ताल कुटीर, इको टुरिज्म पार्क, कोलकाता के प्रांगण में आयोजित की गई। समीक्षा बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष डॉ. विनय रंजन, निदेशक (का. एवं औ. सं.), कोल इंडिया लिमिटेड ने की।

मुख्य अतिथि के रुप में राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली से श्री राजेश श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक बैठक में उपस्थित हुए। इसके अतिरिक्त भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता से श्री ओम प्रकाश प्रसाद, अनुसंधान अधिकारी, हिन्दी शिक्षण योजना से श्रीमती सुमन साहा, सहायक निदेशक(पूर्व), श्री जितेन्द्र प्रसाद, उप निदेशक (टंकण), श्री लखन कुमार सिंह, सहा. निदेशक, श्री अनुप कुमार, सहा. निदेशक (टंकण), केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से श्री ध्रुव नारायण आजाद, सहायक निदेशक (पूर्व), श्री ए के श्रीवास्तव, सलाहकार बैठक में उपस्थित रहे।

बैठक में समिति के 62 सदस्य कार्यालयों से कार्यालय प्रधान सहित कुल 202 प्रतिभागियों की उपस्थिति दर्ज की गई। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। तत्पश्चात श्री राजेश वी नायर, महाप्रबंधक (का./नीति/राजभाषा) एवं सदस्य सचिव ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम के दौरान नराकास की पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 31वें अंक का विमोचन किया गया। वर्ष 2024-25 के दौरान नराकास की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता हेतु 18 सदस्य कार्यालयों को सक्रिय सहभागिता पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही नराकास के तत्वावधान में आयोजित काव्य-पाठ प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी पुस्तक समीक्षा पर पीपीटी प्रतियोगिता, यात्रा वृतांत / संस्मरण प्रतियोगिता और शार्ट फिल्म निर्माण प्रतियोगिता के विजेताओं को मंचासीन गणमान्य व्यक्तियों के कर कमलों द्वारा हिंदी भाषी एवं हिंदीत्तर भाषी दो वर्गों में पुरस्कृत किया गया।

बैठक के पश्चात विकसित भारत @ 2047 में हिंदी की भूमिका विषय पर व्याख्यान : उक्त विषय पर अपने विचार रखते हुए प्रो. (डॉ) राजश्री शुक्ला, कलकता विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग प्रमुख ने अपने संबोधन में कहा कि प्रयागराज में महाकुंभ मनाया जा रहा है। महाकुंभ दान का उत्सव है। नराकास (उपक्रम) कोलकाता की बैठक भी हिंदी का महाकुंभ है, यह हिंदी में विकास करने के लिए विचारों का महाकुंभ है और इसके सदस्य हिंदी के व्रती लोग हैं।

विकसित भारत @ 2047 में हिंदी की भूमिका विषय पर उन्होने कहा कि हिंदी की यात्रा, हिंदी के जीत; उसके जुझारूपन और लड़कर खड़े होने की शक्ति की यात्रा है। हिंदी रवि के रथ का घोड़ा है, जो विरोधों के बाद भी आत्मीयता एवं माधुर्य के साथ आगे बढ़ रही है। भारतीय भाषाओं में जितना साहित्य लिखा जाता है, हिंदी अनुवाद के माध्यम से उसे आत्मसात कर लेती है। हिंदी का विकास अन्य भारतीय भाषाओं के विकास के साथ होगा, उससे लड़कर नहीं। यह एक अकेले का संकल्प नहीं बल्कि इसमें सभी की भूमिका अपेक्षित है।

हमारे देश में ज्ञान-विज्ञान का भंडार है। औपनिवेशिक मानसिकता के कारण हम मानने लगे हैं कि हमारे देश में विद्यार्थियों को अंग्रेजी सीखना जरूरी है। सूर्य ग्रहण के पीछे का वैज्ञानिक कारण ऋषि-मुनि जानते थें, लेकिन उसे जनता को बताने के लिए पौराणिक कथा गढ़ी गई थी। विज्ञान के शोधार्थियों को चाहिए कि वह अखबारों में विज्ञान के लेख दें। युवा प्रयास करते हैं नई खोज के लिए, लेकिन मातृभाषा में अगर शिक्षा दें तो भारत आगे बढ़ सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि देश विकसित बन सकता है, जब उसको न्याय अपनी भाषा में मिलेगी। निचली अदालतों में भारतीय भाषाओं में बहस की स्वीकृति मिली है। भारत डिजिटल क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है, इसमें भाषाओं के प्रयोग से हम विकसित भारत बन सकते हैं। अंत में बच्चन जी की एक कविता के साथ उन्होंने अपनी बात समाप्त की – जो न करेगा सीना आगे पीठ उसे खींचेगी पीछे, जो ऊपर को उठ न सकेगा उसको जाना होना नीचे।

अनुवाद प्रशिक्षण संबंधी जानकारी : केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के श्री ए. के श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में बताया कि राजभाषा विभाग के चार प्रमुख स्तंभ हैं – राजभाषा कार्यान्वयन, हिंदी प्रशिक्षण, संसदीय राजभाषा समिति और अनुवाद ब्यूरो। अनुवाद ब्यूरो का प्रथम मुख्य कार्य कार्यालयों के मैनुअल्स का हिंदी अनुवाद करना और दूसरा कार्य है अनुवाद प्रशिक्षण देना ताकि कार्यालयों में हिंदी का कार्य सुगमता से किया जा सके। अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम भी दो प्रकार से चलाया जाता है। प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण जो पूर्णकालिक 30 कार्यदिवस का होता है और दूसरा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम जो 5 दिनों का होता है और कार्यालयों में जाकर आयोजित किया जाता है। ये सारे प्रशिक्षण अनिवार्य प्रशिक्षण हैं। दिल्ली में भी अनुवाद प्रशिक्षण दिया जाते हैं जो उच्च स्तरीय प्रशिक्षण होता है। उन्होंने सभागृह में उपस्थित सभी पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि अपने अपने कार्यालय से पदाधिकारियों को नामित करें। अंत में उन्होंने नराकास की बैठक के भव्य आयोजन के लिए सभी को साधुवाद दिया।

हिन्दी प्रशिक्षण संबंधी जानकारी : केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग की सहायक निदेशक श्रीमती सुमन साहा, ने अपने संबोधन में कहा कि भारत के राष्ट्रपति के आदेश के अनुसार वर्ष 2025 तक सभी कार्यालयों को हिंदी प्रशिक्षण पूरा कर लेना है। ऐसे में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार के प्रशिक्षण का लाभ लिया जा

सकता है। हिंदी शिक्षण योजना के तहत प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ व पारंगत तथा हिंदी टंकण व आशुलिपि का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। सभी से अनुरोध है कि इन सेवाओं का लाभ लेते हुए हिंदी शिक्षण के अपने कार्यालय का प्रशिक्षण लक्ष्य पूरा कर लें। इसके साथ ही श्री जीतेन्द्र प्रसाद, उपनिदेशक (टंकण) ने टंकण से संबंधी प्रशिक्षण की जानकारी प्रदान की।

सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट की समीक्षा : भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता के अनुसंधान अधिकारी श्री ओम प्रकाश प्रसाद ने सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कोलकाता नराकास की प्रशंसा करते हुए कहा कि हम सबका लक्ष्य है, राजभाषा कार्यान्वयन को तीव्र गति प्रदान करना और इस लक्ष्य को हम जरूर प्राप्त करेंगे। चूंकि यह साझा मंच है और इस मंच से मैं आग्रह करूंगा कि प्रत्येक कार्यालय जो राजभाषा क्षेत्र में कोई नवोन्मेंषी कार्य करता है तो उस कार्य को पीपीटी के माध्यम से इस मंच से प्रस्तुत किया जाए, जिससे कि हमें समावेशी एवं विकास के लिए एक नया स्वरूप मिले तथा इस साझा मंच का लाभ हम सब लें। सभी कार्यालय को एक मंच पर लाने के लिए कोल इंडिया लिमिटेड जो भूमिका अदा कर रही है, उसकी उन्होंने सराहना की जिसके तहत लगभग 90% कार्यालय के कार्यालय अध्यक्ष बैठक में उपस्थित होते हैं, इससे सभी नराकासों को सीखना चाहिए। उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग के जो पैमाने हैं उसे यह नराकास छूता हुआ दिखाई देता है और इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं क्योंकि नराकास केवल एक कार्यालय का नहीं बल्कि समस्त कार्यालय के संयुक्त प्रयास से आगे बढ़ती है। मैं विशेष रूप से आपको बधाई देता हूं कि क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के लिए इस नराकास का चयन किया गया है, यह आपकी लगातार प्रगति, आपके परिश्रम का फल है, हालांकि रसायन शास्त्र में एक बात की जाती है कि रिएक्शन के बाद एक प्रोडक्ट होता है, एक बाई प्रोडक्ट होता है, कोई भी रिएक्शन का मूल प्रोडक्ट है लेकिन जो अलग से मिल जाए, वह बाई प्रोडक्ट है। आप जो कार्य कर रहे हैं, समीक्षा कर रहे हैं, संगोष्ठी कर रहे हैं और अलग-अलग प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपने कार्मिकों को भी प्रशिक्षित कर रहे है वह प्रोडक्ट है, पुरस्कार तो आपके प्रोत्साहन के लिए है।

उन्होंने कहा कि जो कार्यालय तिमाही प्रगति रिपोर्ट समय पर नहीं भरते है तो उनका मूल्यांकन नहीं हो पाता है। उन्होंने सभी उपक्रमों के प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों से आग्रह किया कि तिमाही प्रगति रिपोर्ट समय से जमा करें और जो बैठक नराकास की होती है उसमें सभी कार्यालय प्रमुखों की उपस्थिति अनिवार्य है। संसदीय राजभाषा समिति सदैव यही इस विषय पर चिंता जाहिर करती है। उन्होंने इस बात पर दो पंक्तियां भी पढ़ी:
यहां बातों से सिर्फ कौन सीखा है, सबको एक हादसा जरूरी है

समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी पदों की रिक्ति एवं हिंदी प्रशिक्षण की सभी कार्यालयों में क्या स्थिति है उसे भी बताया जाए। उन्होंने कहा कि नराकास के मंच से पदों की रिक्तियों की एवं उसके भरे जाने की जरूर चर्चा की जाए। कुछ कार्यालय रिपोर्ट भेजने में देर करते हैं तो आप सभी से अनुरोध करूंगा कि आप अपनी रिपोर्टें तय समय में भेज दें। पत्रिका प्रकाशन बहुत से कार्यालय नहीं कर रहे हैं, पत्रिका प्रकाशन जरूर करें। ऑफलाइन माध्यम से हो या ऑनलाइन। क्योंकि पत्रिका आपके यहां निकलती है तो लोगों की रचनात्मक ऊपर आती है और लोग लिखते हैं और इससे लिखने वाला भी धनी होता है और पढ़ने वाला भी धनी होता। कुछ कार्यालय में यह देखने में आया है कि जो दस्तावेज धारा

3(3) में समाहित है उसको भी मूल पत्राचार में जोड़ देते हैं। हिंदी में केवल हस्ताक्षर होने से ही पत्र का स्वरूप हिंदी नहीं होता, पत्र का पूरा कलेवर हिंदी में हो तभी पूरा पत्र हिंदी में माना जाएगा। जिन कार्यालयों की उपस्थिति नहीं है उन्होंने सदस्य सचिव से अनुरोध किया कि उनको पत्र लिखकर उनसे अनुपस्थिति का कारण पूछा जाए।

विशिष्ट व्यक्तियों का सम्बोधन : श्री संजीव कुमार सिंह, निदेशक (खनन), हिंदुस्तान कॉपर लि. ने अपने संबोधन में तांबे के सार्वकालिक महत्व को उजागर करते हुए राष्ट्र के विकास में हिंदुस्तान कॉपर लि. का महत्व बताया। उन्होंने अपने कार्यालय में कर्मचारियों को सूचना प्रदान करने के लिए हिंदी में व्हाट्सएप के माध्यम के प्रयोग की बात का उल्लेख किया। हिंदी से सबको जोड़ने के लिए हमें भावी पीढ़ी को हिंदी से जोड़ना होगा। हमारे कार्यालय के विभिन्न विभागों में कर्मचारी स्वतः हिंदी टिप्पणियां कर रहे है। फ्रांस और चीन जैसे देशों ने अपनी भाषा के बल पर वैश्विक प्रगति की है, तो हम हमारी भाषा के माध्यम से विकास करने में पीछे क्यों रहें।

श्री अधीप नाथ पाल चौधरी, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, बामर लॉरी कंपनी लिमिटेड ने कहा कि नराकास का मंच उत्साह प्रदान करने वाला मंच है। नराकास की जो बैठक है, इसको हम बैठक के हिसाब से ना लेते हुए उत्सव के रूप में देख सकते हैं क्योंकि यहां हम लोग जितने उत्साह के साथ राजभाषा का काम कर रहे हैं और हमारे सारे 62 सदस्य कार्यालय जिस ऊर्जा के साथ इस कार्य में लगे हुए हैं और आज उन सब कार्यों की समीक्षा एक पर्व के रूप में ही दृष्टिगोचर होता है। हमारी कंपनी बामर एंड लॉरी भी किसी अन्य उपक्रमों से पीछे नहीं है। हमारे संगठन में भी पत्राचार, नोटिंग एवं बोर्ड की बैठकों में क्रमानुसार हिंदी के क्षेत्र में विकास हो रहा है। विगत 3 सालों से हमारे बोर्ड मीटिंग हिंदी में करते हैं। राजभाषा को हम लोग कंपल्शन के हिसाब से नहीं बल्कि चॉइस के हिसाब से देख रहे हैं, हम लोग हिंदी में ही काम करना पसंद कर रहे हैं। कोल इंडिया लिमिटेड के प्रबंधन को भी मैं साधुवाद देना चाहूंगा जिनके नेतृत्व में हम राजभाषा कार्यान्वयन में आगे बढ़ रहे हैं तथा बहुत बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

श्री अजय कुमार जौली, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारतीय पटसन निगम ने अपने संबोधन में कहा कि कोल इंडिया की अध्यक्षता में सभी सदस्य कार्यालय निरंतर प्रगति कर रहे हैं। हमारी राजभाषा का भविष्य अच्छा है। जूट कॉरपोरेशन किसानों के साथ काम करती है, घर-घर में जूट कॉरपोरेशन को लोग जाते हैं। हमारे लिए गर्व की बात है कि 100% टिप्पणियां द्विभाषी अथवा हिंदी में हो रही हैं। इसके पीछे है, अनुवाद टूल्स का इस्तेमाल। 32 वर्ष इंडियन नेवी में काम करने के बाद जूट कॉरपोरेशन में देखा कि बातचीत की भाषा भी हिंदी है। उन्होंने आगे कहा कि आईटी टूल्स के प्रयोग में सावधानी या ध्यान देने की आवश्यकता भी है। उन्होंने कहा कि अब पाश्चात्य भौतिकवादी मूल्यों की एक्सपाइरी डेट आ चुकी है। आज हम अंग्रेजी को भी मात दे सकते हैं। न्याय प्रणाली, शिक्षा, कामकाज में राजभाषा को अपनाना बहुत आवश्यक है।

मुख्य अतिथि का संबोधन : श्री राजेश श्रीवास्तव,

संयुक्त निदेशक(नीति), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने अपने संबोधन में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन को राजभाषा का महाकुंभ तथा नराकास (उपक्रम) कोलकाता की बैठक को लघु-कुंभ बताया। भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी के 5 प्रण में से एक अपनी विरासत पर गर्व करने का उल्लेख करते हुए उन्होंने हिंदी और भारतीय भाषाओं पर गर्व करने का उल्लेखनीय मुद्दा सबके समक्ष रखा। उन्होंने पौराणिक कथाओं के वैज्ञानिक आधार को स्पष्ट करते हुए अपनी संस्कृति और भाषा की उत्तरजीविता पर गर्व बोध करने पर जोर दिया। आज पुरी दुनिया भारतीय भाषाओं का लोहा मानने लगी है। संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाएं कंप्यूटर के लिए सबसे सुगम भाषा बनकर उभर रही है। भारतीय भाषाएं संसार की सर्वाधिक ध्वनियों के उच्चारण के साथ दुनिया में अद्वितीय है।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2024 में राजभाषा विभाग ने भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना की है और उसके लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं के पदों पर भर्ती भी आरंभ हुई है। इससे भविष्य में हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं में भी पत्र भेजना सरल हो जाएगा। इस दिशा में भी राजभाषा विभाग सी-डैक के साथ कार्यरत है, ताकि हिंदी के साथ-साथ सभी क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग सुनिश्चित किया जा सके। कंठस्थ की बात करें तो मैं उन्होंने बताया कि कंठस्थ में लोकल मेमोरी, ग्लोबल मेमोरी और न्यूरल मशीन अनुवाद जैसे 3 रूपों में अनुवाद की सुविधा प्रदान की गई है। कंठस्थ के आने से सरकारी दस्तावेजों की गोपनीयता सुनिश्चित हुई है और हम अनुवाद के क्षेत्र में निरंतर विकास कर रहे है। अनुवाद कार्य के सहयोग के लिए शब्द-सिंधु का भी विकास किया गया है, जिसे संसार का सबसे बड़ा शब्दकोश बनाए जाने पर बल दिया जा रहा है।

अध्यक्षीय संबोधन : नराकास (उपक्रम) कोलकाता के अध्यक्ष डॉ. विनय रंजन, निदेशक (कार्मिक एवं औद्योगिक संबंध), कोल इंडिया लिमिटेड ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में मंचासीन सभी कार्यालय प्रमुखों का अभिनंदन करते हुए कहा कि हमारे बीच दिल्ली से संयुक्त निदेशक श्री राजेश श्रीवास्तव जी आएं है; वे आज नराकास (उपक्रम) कोलकाता के राजभाषा कार्यान्वयन की शक्ति देखेंगे और इसकी सूचना दिल्ली तक पहुंचाएंगे कि कैसे नराकास (उपक्रम) कोलकाता निरंतर राजभाषा कार्यान्वयन के प्रगामी प्रयोग की ओर निरंतर अग्रसर है। जनवरी 2022 में कोल इंडिया को नराकास का दायित्व मिला है तब से अब तक हमने पूरे सम्मान के साथ नराकास के दायित्व का निर्वाह किया है और आगे भी करते रहेंगे।

नारी सशक्तिकरण पर आधारित नराकास की गृह पत्रिका अभिव्यक्ति के 31वें अंक के लिए उन्होंने नराकास संपादक मंडल के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई

दिया। इससे कार्यक्षेत्र में नारी शक्ति के बढ़ते महत्व को रेखांकित करने में सहायता मिलेगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में राजभाषा समीक्षा के लिए हमने एमएसटीसी के सहयोग से नराकास समीक्षा प्रणाली पोर्टल का विकास किया है, जिसे अब अन्य

नराकास भी मांग रहे है, जो हमारे नराकास के लिए गर्व का विषय है। हमें वर्क लाइफ बैलेस करने के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में 55% से आगे बढ़ते हुए 100% के लक्ष्य को प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करना चाहिए, ताकि हमें संसदीय राजभाषा समिति से निरंतर प्रशंसा-पत्र मिलते रहे। सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए अपनी वाणी को विराम देने से पहले उन्होंने पुनः सभी को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने की याद दिलाई ताकि सभी लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ते रहे।

कृत्रिम मेधा (ए आई) और हिंदी विषय पर श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच, माइक्रोसॉफ्ट इंडिया का तकनीकी सत्र

भोजनावकाश के बाद तृतीय सत्र हिंदी में तकनीकी प्रयोग के नाम रहा, जिसमें माइक्रोसॉफ्ट इंडिया, सेंटर ऑफ एक्सेलेंस के मार्केटिंग हेड,श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच द्वारा कृत्रिम मेधा के विविध प्रयोग के द्वारा हिंदी प्रयोग को बढ़ाने पर बड़े ही रोचक ढंग में प्रस्तुति दिया गया। नई प्रोद्योगिकी, एआई और हिंदी विषय पर ऑनलाइन माध्यम द्वारा बड़े सहज ढंग से महत्वपूर्ण

जानकारियां प्रदान की गईं और प्रतिभागियों के हिंदी में तकनीकी प्रयोग संबंधी जिज्ञासाओं का अभ्यासात्मक रूप से उत्तर दिया गया।

कवि सम्मेलन :

अंतिम सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नराकास (उपक्रम), कोलकाता के मंच पर पर पहली बार कवि सम्मेलन आयोजन किया गया जिसमें इंदौर से प्रख्यात व्यंगकार श्री गोविंद राठी, नैनीताल से प्रसिद्ध कवयित्री सुश्री गौरी मिश्रा एवं नई दिल्ली से उपस्थित डॉ. प्रवीण कुमार चौबे ने सभी श्रोताओं को अपने व्यंय-वाणों से भरी कविताओं और गीत से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज, जीवन, प्रेम और मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डाला। यह कार्यक्रम साहित्य, संस्कृति और हिंदी भाषा के प्रति समर्पण का परिचायक रहा।

इस बैठक सह संगोष्ठी का औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्री राजेश कुमार साव, प्रबंधक(रा.भा.), कोल इंडिया लिमिटेड ने कहा कि नराकास राजभाषा नीति को प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु वचनबद्ध है और सक्रियता से कार्य करती है चूंकि टीम वर्क महत्वपूर्ण होता है और यहां उपस्थित एक-एक अधिकारी टीम के रूप में कार्य करते है अत: सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

हिन्दी हमारी भारतीय संस्कृति की वाणी ही तो है। - शांतानंद नाथ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता के तत्वावधान में फरवरी 2025 से जुलाई 2025 के दौरान आयोजित कार्यक्रम / गतिविधियाँ

निबंध लेखन प्रतियोगिता : नराकास (उपक्रम) कोलकाता के तत्वावधान में इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा 14 फरवरी, 2025 को सभी सदस्य कार्यालयों हेतु निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी एवं हिंदीतर भाषी मिलाकर कुल 54 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में नराकास के सदस्य सचिव एवं विभागाध्यक्ष (राजभाषा), कोल इण्डिया लिमिटेड श्री राजेश वी नायर, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड के क्षेत्रीय प्रधान श्री सुदीप्त बनर्जी, प्रो. एकता हेला, श्री राजेश कुमार साव, प्रबंधक (राजभाषा), कोल इण्डिया लिमिटेड, श्री प्रियांशु प्रकाश उप प्रबंधक (राजभाषा), कोल इण्डिया लिमिटेड उपस्थित रहे।

राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता : दिनांक 18.02.2025 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता के सदस्य कार्यालयों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह आयोजन ऑनलाइन माध्यम से ऑयल इण्डिया लिमिटेड कार्यालय द्वारा आयोजित किया गया था। इस प्रतियोगिता में कुल 49 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य राजभाषा के संबंध में कार्मिकों के बीच ज्ञान में अभिवृद्धि करना था।

लघु नाटिका प्रतियोगिता : अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर पावरग्रिड पूर्वी क्षेत्र-2 द्वारा नराकास (उपक्रम) कोलकाता के तत्वावधान में 21 फरवरी 2025 को "लघु नाटिका प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ विनय रंजन, निदेशक (मा.सं.) कोल इंडिया व अध्यक्ष नराकास, श्री अशोक कुमार नाएक, मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी (पावरग्रिड पूर्वी क्षेत्र 2), डॉ. विचित्रसेन गुप्त, उप निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, राजभाषा विभाग, श्री राजेश वी नायर, महाप्रबंधक (मा.सं./राजभाषा) व सदस्य सचिव, नराकास द्वारा दीप प्रदीपन करके किया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में पंचलैट फिल्म की रंगकर्मी श्रीमती कल्पना ठाकुर झा और कोलकाता के सुप्रसिद्ध नाट्य निदेशक श्री दिनेश वडेरा आमंत्रित थे।

प्रतियोगिता में कोलकाता स्थित विभिन्न पीएसयू कार्यालयों के कार्मिकों ने नाट्य प्रस्तुतियां की। इस अवसर पर नराकास अध्यक्ष महोदय ने कहा कि लघु नाटिका का आयोजन एक अभिनव प्रयास है, इससे सदस्य कार्यालयों में हिंदी के प्रति रूचिपूर्ण माहौल बनेगा। उन्होंने पावरग्रिड को इस प्रकार की नवीनतम राजभाषा गतिविधियां आयोजित करने के लिए बधाई दी और अपील किया कि सदस्य कार्यालयों द्वारा आगे भी इस प्रकार की राजभाषा गतिविधियां आयोजित की जाए, क्योंकि सभी के सम्यक प्रयास से ही राजभाषा में उत्तरोत्तर विकास किया जा सकेगा। पावरग्रिड के प्रभारी श्री अशोक कुमार नाएक जी ने पावरग्रिड की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि पावरग्रिड विद्युत प्रसार के साथ-साथ राजभाषा प्रचार के लिए भी सदैव प्रतिबद्ध रहा है।

डॉ विचित्रसेन गुप्त ने कहा कि पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न नराकास की गतिविधियों के आलोक में, नराकास (उपक्रम) कोलकाता की गतिविधियां बेहद सराहनीय हैं और पावरग्रिड द्वारा लघु नाटिका का आयोजन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रेरणा एवं प्रोत्साहन का कार्य करेगी। आमंत्रित निर्णायकगण ने कहा कि सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने प्रशासन, समाज एवं कार्यालयीन जीवनशैली से अनुभव लेकर मातृभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा, स्त्री विमर्श, सामाजिक चेतना, मीडिया जगत आदि विषयों पर बेहतरीन नाटकीय प्रस्तुति दी। लघु नाटिका प्रस्तुति के माध्यम से टीमों ने थोड़े समय में ही अपने अभिनय के माध्यम से विचारणीय संदेश दिए। श्री राजेश कुमार साव, प्रबंधक (राजभाषा) कोल इंडिया एवं सह सचिव (नराकास) ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रतियोगिता का संचालन पावरग्रिड के श्री नारायण साव, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

आशुभाषण प्रतियोगिता : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता के तत्वावधान में दिनांक 19 मार्च, 2025 को सेल, केंद्रीय विपणन संगठन, मुख्यालय,कोलकाता द्वारा "आशुभाषण प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय,राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्या.) डॉ विचित्रसेन गुप्त विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस प्रतियोगिता में समिति के 36 सदस्य कार्यालयों के कुल 52 अधिकारियों एवं कर्मियों ने हिस्सा लिया। निर्णायक के रूप में कोलकाता महानगर के डॉ कमलकुमार, प्रोफेसर,उमेश चन्द्र कॉलेज एवं श्री एस पी दुबे, पूर्व राजभाषा अधिकारी, पूर्व रेलवे व सलाहकार एसआरएफटीआई, कोलकाता उपस्थित थे। अपने उद्बोधन में श्री गुप्त ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन से कार्मिकों के मनोबल में वृद्धि होती है तथा हिन्दी कार्यान्वयन के प्रति उनकी रुचि बढ़ती है। श्री राजामोहन ने कहा कि भाषा वह सेतु है जो विचारों, संस्कृतियों और लोगों को जोड़ती है। भाषा के माध्यम से ही हम अपने विचार व्यक्त करते हैं और परिवर्तन की प्रेरणा देते हैं। मेरा मानना है कि नराकास एक सशक्त मंच है जिसका उद्देश्य भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति सदस्य कार्यालयों को सजग करना है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में सेल,सीएमओ के कार्यपालक निदेशक श्री सुरेश राजामोहन तथा राजभाषा सर्वकार्य प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.) सुश्री बिजया मिश्रा ने विभिन्न उपक्रमों से पधारे सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन अजय शंकर मिश्र, राजभाषा अधिकारी ने किया।

हिन्दी विश्व की महानतम भाषा है। - राहुल सांकृत्यायन

पत्र एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिता : नराकास उपक्रम कोलकाता के तत्वावधान में दिनांक 25 मार्च, 2025 को बामर लॉरी एण्ड कं. लि. द्वारा पत्र एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न सदस्य कार्यालय से हिंदी एवं हिंदीतर भाषी वर्ग से 39 सम्माननीय प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ बामर लॉरी एण्ड कं. लि. के श्री सुमित धर, सह-उपाध्यक्ष (मा.सं-पूर्व) तथा नराकास के सदस्य सह-सचिव श्री राजेश कुमार साव द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत पत्र एवं टिप्पण उनके अभिव्यक्ति-कौशल और विचार-समृद्धि का परिचायक रहा।

कार्यकारी दल की बैठक : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता की कार्यकारी दल की बैठक दिनांक 09-04-2025 को समिति के सचिवालय कोल इंडिया लिमिटेड के कार्यालय परिसर में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता समिति के सदस्य सचिव श्री राजेश वी. नायर, महाप्रबंधक (मा. सं./नीति)/राजभाषा, सीआईएल ने की। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. विचित्रसेन गुप्त उपस्थित रहे। कार्यसूची के मदवार विविध विषयों के संबंध में विचार-विमर्श के उपरांत निर्णय किये गये।

संयुक्त कार्यशाला का आयोजन : दिनांक 05 मई, 2025 को नराकास कोलकाता (उपक्रम) के तत्वावधान में एचपीसीएल, पूर्वी अंचल कार्यालय द्वारा नई पहल करते हुए नराकास कार्यकारी दल के सदस्यों हेतु "राजभाषा के क्षेत्र में नराकास द्वारा उत्कृष्ट कार्य" विषय पर एक संयुक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया। महाप्रबन्धक (प्रभारी)-पूर्वी अंचल श्री विजय कुमार पटेल की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में उप निदेशक-राजभाषा, पूर्वी क्षेत्र, भारत सरकार डॉ. विचित्रसेन गुप्त मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुंबई (उपक्रम) नराकास के सदस्य सचिव श्री सलीम खान, गुवाहाटी (उपक्रम) नराकास के सदस्य सचिव श्री दीपक कुमार शाह, दिल्ली (उपक्रम) नराकास-2 के सदस्य सचिव श्री अशोक कुमार, कोलकाता (उपक्रम) नराकास के सह सदस्य सचिव श्री राजेश कुमार साव, नराकास सचिवालय से श्री प्रियान्शु प्रकाश तथा

कोलकाता (उपक्रम) नराकास के कार्यकारी दल के सभी सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत में एचपीसीएल के महाप्रबन्धक-एलपीजी, एसबीयू श्री गजेन्द्र सुनहरे ने सभी का स्वागत किया। उप निदेशक-राजभाषा, पूर्वी क्षेत्र, भारत सरकार डॉ. विचित्रसेन गुप्त ने सभी को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि यह एक नई पहल है, जिसके माध्यम से हम एक-दूसरे से सीख सकते हैं और दूसरे नराकास द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को अपने नराकासों में लागू कर सकते हैं। प्रमुख-राजभाषा श्री सलीम खान ने इस पहल को अत्यंत सराहनीय बताया और इसके लिए कोलकाता नराकास टीम को हार्दिक बधाई दी। कार्यक्रम में अध्यक्ष श्री विजय कुमार पटेल तथा महाप्रबन्धक (प्रभारी)-पूर्वी अंचल ने कहा कि एचपीसीएल कोलकाता नराकास का एक सक्रिय सदस्य है और हमारा यह दायित्व है कि हम ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करें, ताकि हमारे नराकास के सदस्य लाभान्वित हो सकें। आज इस प्रयास में भारत के तीन क्षेत्र क, ख एवं ग क्षेत्र से राजभाषा कीर्ति एवं क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले नराकास कार्यालयों को जोड़ा गया है।

कार्यक्रम के दौरान, "क" क्षेत्र में नराकास स्तर पर राजभाषा कीर्ति पुरस्कार तथा क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त नराकास, दिल्ली (उपक्रम) नराकास-2 के सदस्य सचिव श्री अशोक कुमार ने दिल्ली उपक्रम द्वारा किए जा रहे प्रयासों को साझा किया (ऑनलाइन)। "ख" क्षेत्र में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार एवं क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त नराकास, मुंबई (उपक्रम) नराकास में किए गए उत्कृष्ट प्रयासों को नराकास सदस्य सचिव श्री सलीम खान ने विस्तृत प्रस्तुतीकरण के माध्यम से साझा किया। "ग" क्षेत्र में राजभाषा कीर्ति एवं क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त गुवाहाटी (उपक्रम) नराकास के सदस्य सचिव श्री दीपक कुमार शाह ने गुवाहाटी नराकास द्वारा किए जा रहे प्रयासों को प्रस्तुत किया।

अंत में, कोलकाता (उपक्रम) नराकास के सह सदस्य सचिव श्री राजेश कुमार साव ने कोलकाता उपक्रम नराकास द्वारा किए जा रहे प्रयासों से सभी को अवगत कराया। इस कार्यशाला ने एक साझा मंच प्रदान किया, जहां भारत के विभिन्न क्षेत्रों में नराकास द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को साझा किया गया और यह सभी नराकास के कार्यप्रणाली को समृद्ध करने में सहायक साबित हुआ।

गीत गायन प्रतियोगिता : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता के तत्वावधान में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के क्षेत्रीय मुख्यालय-पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता द्वारा दिनांक 28 मई, 2025 को हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता हिंदी व हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए दो अलग-अलग वर्गों में आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में कोलकाता के विभिन्न उपक्रमों के कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय कार्यवाहक क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक श्री एच. एस. बिस्वास ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता के सदस्य-सचिव श्री राजेश

वी. नायर, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री सुशील कुमार गुप्ता ने भी दीप प्रज्वलन में भाग लेकर कार्यक्रम को सुशोभित किया। उपरोक्त के अतिरिक्त श्री राजेश कुमार साव, सदस्य-सह-सचिव, नाराकास (उपक्रम), कोलकाता एवं प्रबंधक (राजभाषा), सीआईएल, तथा कार्यकारी दल की सदस्याएँ श्रीमती साधना शर्मा एवं श्रीमती शिवानी गर्ग, सदस्य श्री प्रियण्शु प्रकाश तथा अन्य सम्मानित सदस्यगण भी बैठक में सादर एवं ससम्मान उपस्थित रहे। इस अवसर पर माननीय कार्यवाहक क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक, माननीय सदस्य-सचिव नराकास ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए सभी से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना बढ़-चढ़ कर योगदान करने का अनुरोध किया।

इस गीत गायन प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में डॉ. शुभ्रा उपाध्याय दूबे, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज कोलकाता, डॉ. इतु सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर खिदिरपुर कॉलेज, कोलकाता एवं सुश्री मोम राय, संगीत विशेषज्ञ, विद्या भारती स्कूल मोमिनपुर कोलकाता को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने अपने निष्पक्ष निर्णय से कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रतिभागियों ने अपनी भावपूर्ण कविताओं और गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर प्रतियोगिता को यादगार बना दिया। प्रतिभागियों, निर्णायकों और आयोजकों को स्मृति चिह्न व पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण श्री सुशील कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) द्वारा दिया गया। सभी कार्यक्रमों व प्रतियोगिता का संचालन व समन्वय कार्य श्री अरविन्द कुमार तिवारी, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) व उनकी पूरी राजभाषा

टीम द्वारा किया गया। प्रतियोगिता बहुत ही सफल और सार्थक रही।

चित्राभिव्यक्ति प्रतियोगिता : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता के तत्वावधान में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नेताजी सुभाष चन्द्र बसु अन्तरराष्ट्रीय हवाईअड्डा, कोलकाता द्वारा दिनांक 24 जून, 2025 को दो वर्गों (हिन्दी भाषी वर्ग एवं हिन्दीतर भाषी वर्ग) में 'चित्राभिव्यक्ति प्रतियोगिता' का आयोजन पीपीटी के माध्यम से किया गया। विमानपत्तन निदेशक, कोलकाता, डॉ. प्रभात रंजन बेऊरिआ द्वारा प्रतियोगिता का विधिवत उद्घाटन किया गया। श्री सुशील कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक(मानव संसाधन), भाविप्रा, कोलकाता हवाईअड्डा द्वारा सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया गया।

श्री राजेश कुमार साव, प्रबंधक(राजभाषा), कोल इंडिया लिमिटेड एवं सदस्य-सह सचिव, नराकास (उपक्रम), कोलकाता एवं श्री प्रियांशु प्रकाश, उप प्रबंधक(राजभाषा), कोल इंडिया लिमिटेड ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का प्रतिनिधित्व किया। श्री राजपाल यादव, वरिष्ठ कवि एवं पूर्व महाप्रबंधक (कार्मिक / राजभाषा), बीसीसीएल, कोल इंडिया लिमिटेड, डॉ. संजय जायसवाल, एसोसिएट प्रोफेसर, विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर एवं श्रीमती पूजा गुप्ता, सहायक प्रॉफेसर, बंगबासी मॉर्निंग कॉलेज, कोलकाता ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। प्रतियोगिता का संचालन सुश्री शिवानी गरगश, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), कोलकाता हवाईअड्डा द्वारा किया गया। नराकास (उपक्रम), कोलकाता के 62 सदस्य-कार्यालयों से प्रधारे प्रतिभागियों

ने उत्साहपूर्वक प्रतियोगिता में भाग लिया। यह प्रतियोगिता प्रतिभागियों के लिए प्रेरणादायक तो थी ही साथ ही इसका उद्देश्य न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना था, अपितु प्रतिभागियों की कल्पनाशीलता, चिंतन और

अभिव्यक्ति की कला को मंच प्रदान करने का भी एक उत्तम अवसर था।

शार्ट फिल्म निर्माण प्रतियोगिता : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता के तत्वावधान में, भारतीय पटसन निगम लिमिटेड द्वारा जुलाई, 2025 में 'पर्यावरण संरक्षण' विषय पर हिंदी में शॉर्ट फिल्म निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा दायित्वों के प्रति सजगता का संदेश देता है। प्रतियोगिता में विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों से आए प्रतिभागियों ने अपनी सृजनात्मकता, तकनीकी कौशल और सामाजिक संदेशों से परिपूर्ण लघु फिल्मों के माध्यम से न केवल दर्शकों को प्रभावित किया, बल्कि हिंदी भाषा की अभिव्यक्तिपरक शक्ति का भी सशक्त प्रदर्शन किया। यह रोचक एवं प्रेरणादायक प्रतियोगिता निर्णायक मंडल द्वारा अत्यंत सराही गई। प्रस्तुत हिन्दी शॉर्ट फिल्मों ने पर्यावरण संरक्षण के विविध आयामों को प्रभावशाली ढंग से उजागर किया तथा पर्यावरण एवं समाज के प्रति एक सकरात्मक संदेश भी प्रदान किया। प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागियों को

न केवल हिंदी में सृजनात्मक कार्य करने का अवसर मिला, बल्कि भाषा के माध्यम से विचारों को संप्रेषित करने की कला को भी बल मिला।

कार्यकारी दल की बैठक : दिनांक 30/7/2025 को नराकास (उपक्रम), कोलकाता के तत्वावधान में श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता ने "कार्यकारी दल" की बैठक का आयोजन किया। बैठक में एसएमपीके के उपाध्यक्ष श्री सम्राट राही ने अपने वक्तव्य में राजभाषा के कार्यान्वयन और इसकी महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। बैठक में कोल इंडिया के महाप्रबंधक श्री संजीव भारद्वाज, एनएचपीसी के महाप्रबंधक श्री मांझी और राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) डॉ विचित्रसेन गुप्त सहित सदस्य कार्यालयों के हिंदी अधिकारी/ कार्यपालक उपस्थित रहे और आगामी समीक्षा बैठक संबंधी विविध निर्णय लिए गए।

सुझाव समिति दौरा

नराकास (उपक्रम), कोलकाता के सदस्य कार्यालयों में कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में आ रही समस्याओं के समाधान हेतु दिनांक 18/04/2023 से एक सुझाव समिति का गठन किया गया है। दिनांक 22/01/2025 को आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान यह निर्णय लिया गया कि जिन सदस्य कार्यालयों की तिमाही प्रगति रिपोर्ट में कमी पाई गई है अथवा रिपोर्ट प्राप्त नहीं हो रही है, अथवा समीक्षा बैठक में अनुपस्थिति रही है, समिति उन कार्यालयों से संपर्क कर उनकी समस्या का समाधान करने का यथासंभव प्रयास करेगी। उक्त के तारतम्य में समिति ने विभिन्न कार्यालयों का दौरा किया एवं कार्यालय प्रमुखों से मिलकर अनुरोध किया गया कि वे समीक्षा बैठक में अवश्य शामिल हो। भारतीय कंटेनर निगम, एनपीसीसी, हुगली कोचिन शीपयार्ड तथा सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज कार्यालय को राजभाषा विभाग के वेबसाइट तथा नराकास के पोर्टल पर पंजीकरण करवाने में सहयोग किया गया ताकि समय पर रिपोर्ट प्राप्त हो सके। सभी कार्यालयों को हिंदी के प्रयोग से संबंधित आधुनिक तकनीकों / आई.टी टूल्स की जानकारी प्रदान की गई।

एनपीसीसी कार्यालय

हुगली कोचिन शिपयार्ड

एण्ड्रू यूल एंड कंपनी लिमिटेड

नाल्को लिमिटेड

सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया

खादी ग्रामद्योग आयोग

भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड

बीबीजे कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड

भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं खाद्य सुरक्षा में केन्द्रीय भण्डारण निगम का योगदान

राजीव रंजन
कार्यकारी (सामान्य)
केन्द्रीय भंडारगृह रानीनगर

भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं खाद्य सुरक्षा में केन्द्रीय भंडारण निगम रीढ़ का कम करता है। देश की लगभग 67% जनसंख्या की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार विभिन्न खाद्य वस्तुओं जैसे चावल, गेहूँ, चीनी आदि को सब्सिडी दरों पर वितरण करती है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को कारगार और विश्वनीय बनाने में केन्द्रीय भंडारण निगम भंडारण, वितरण और ट्रैकिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

केन्द्रीय भंडारण निगम की स्थापना 1957 में की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य देश की बदलते जलवायु आपात स्थितियों जैसे महामारी, युद्ध और बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना था। सार्वजनिक वितरण प्रणाली की सफलता इस पर निर्भर करती है कि खाद्यान्नों का भंडारण और परिवहन सुरक्षित और कुशलतापूर्वक किया जाए। इसी महत्वपूर्ण उदेश्य को निगम प्रभावी ढंग से निभाता है और देश में स्थित अपने 700 से अधिक गोदामों के माध्यम से सरकार द्वारा खरीदे गए खाद्यान्नों को सुरक्षित तरीके से संग्रहीत रख रखाव और वितरण करता है। निगम आधुनिक तरीके से अन्न का भंडारण करता है जिससे कीटों और नमी से अनाज की रक्षा होती है। निगम गोदाम प्रबंधन प्रणाली (NMS) का उपयोग भंडारण केन्द्रो में वस्तुओं के आगमन, भंडारण अन्न की गुणवत्ता जांच और निर्गमन में कर शून्य भ्रष्टाचार और पारदर्शिता को सुनिश्चित करता है।

"हर एक अन्न बचना मतलब हर एक अन्न उगाना" के तहत निगम भंडारण, हैंडलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम कर देश की खाद्य सुरक्षा प्रणाली और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाता है। "जनमानस को हो अन्न सहज करे व्यवस्था खास विकसित प्रबंधन प्रणाली कर पहुँचाए भोजन पाए। इसका भावार्थ है कि निगम ट्रैकिंग और वैज्ञानिक ढंग से गोदाम प्रबंधन कर हर जरूरतमन्द तक अन्न पहुँचाने का कम करता है। निगम भारतीय खाद्य निगम (एफ़सीआई) और राज्य सरकारों के लिए अनाज का भंडारण और गुणवत्ता नियंत्रण करता है, जो अंततः सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के माध्यम से गरीबों को सस्ती दर पर वितरित किया जाता है।

निष्कर्ष : "गोदामों में अनाज रखे निगम तकनीक संग चार वितरण प्रणाली में बंटे अन्न घर घर आहार' वास्तव में केन्द्रीय भंडारण निगम का कार्य भले ही अदृश्य लगे परंतु यह पूरे खाद्य वितरण तंत्र की रीढ़ है। वर्तमान में केन्द्रीय भंडारण निगम सरकार के दिशानिर्देश के अनुसार सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं खाद्य सुरक्षा को अधिक पारदर्शी और कुशल बनाने के लिए हर संभव सहयोग कर रही है। इसके अंतर्गत ई-गवर्नेंस गोदाम प्रबंधन प्रणाली (डबल्यूएमएस), कंप्यूटराइज्ड रिकॉर्ड और अन्य वैज्ञानिक उपायों के जरिए खाद्यानों के भंडारण और वितरण में निगम पूर्ण कुशलता से योगदान कर रहा है।

इस प्रकार केन्द्रीय भंडारण निगम भारत की खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक वितरण प्रणाली में महत्वपूर्ण स्तम्भ की तरह सरकार के उद्देश्य को पूरा करने में प्रयासरत है।

भाषा, सभ्यता और देश की रक्षा करना सच्चा धर्म यज्ञ है। - ठाकुरदत्त शर्मा

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रोत्साहन को समर्पित राष्ट्रीय हिंदी पत्रिका - राजभाषा भारती

शशि कुमार पृथ्वी
उप-प्रबंधक
भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड

राजभाषा भारती आर्थत विद्या की देवी माँ सरस्वती की वाणी की पत्रिका। राजभाषा भारती संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा प्रोत्साहन को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका है, जिसे राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका का प्रथम अंक अप्रैल, 1978 में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के प्रथम सचिव श्री रमाप्रसन्न नायक के कार्यकाल तथा श्री राजमणि तिवारी के सम्पादन में प्रकाशित हुआ था। राजभाषा विभाग के दायित्वों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक प्रमुख दायित्व है। यह पत्रिका न केवल उस दायित्व का निर्वाह करती है वरन सम्पूर्ण संघ सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/ कार्यालयों आदि में हिंदी संबंधी गतिविधियों के वृहत प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच भी प्रदान करती है। पत्रिका का वितरण केंद्र सरकार के मंत्रालयों / कार्यालयों आदि के बीच निःशुल्क किया जाता है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विगत 45 वर्षों से 'राजभाषा भारती' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका माननीय राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री/ केंन्द्र सरकार के मंत्रियों, संसद के माननीय सदस्यों, राज्यपालों / मुख्यमंत्रियों तथा केंद्र सरकार के कार्यालयों इत्यादि को भेजी जाती है।

अभी तक कुल इस पत्रिका के 170 अंक प्रकाशित हो चुके है, एवं प्रति त्रैमासिक को इस पत्रिका का विषय भी अलग अलग रखा जाता है ताकि समाज को हर विषय पर ज्ञान प्राप्त हो सके। राजभाषा संबंधी सविधानिक और कानूनी उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए जून, 1975 में गृह मंत्रालय के स्वतंत्र विभाग के रूप में राजभाषा विभाग की स्थापना की गयी थी। यह विभाग संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रगामी प्रयोग बढ़ाने के लिए सतत् प्रयासरत है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। प्रचार-प्रसार के सशक्त माध्यम के रूप में पत्रिका 'राजभाषा भारती' हिंदी सेवियों में बेहद लोकप्रिय है। राजभाषा भारती में देश भर से प्रतिष्ठित विद्वानो, लेखकों और शोध छात्रों से राजभाषा हिंदी सहित विभिन्न विषयों जैसे कृषि, विज्ञान, पर्यावरण, भूमंडलीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस पर प्राप्त रोचक, ज्ञानवर्धक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। उत्कृष्ट लेखों के साथ राजभाषा से संबन्धित विभिन्न गतिविधियों को शामिल कर 'राजभाषा भारती' निरंतर हिंदी प्रेमियों के लिए प्रेरणा स्रोत रही है।

राजभाषा भारती पत्रिका हिंदी भाषा भाषियों के लिए एक मील का पत्थर है। इसमे संकलित सभी लेख एवं सूचना सहरणीय है। विभिन्न सरकारी दफ्तरों, विभागों एवं प्रतिष्ठानों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग रहा, यह जानकारी राजभाषा भारती के माध्यम से हमे विस्तृत रूप से मिलती है। इस पत्रिका की कोशिश यह है कि देश भर में हिंदी के उत्थान हेतु उठाया गया कदम इसमे पूर्ण रूप से संकलित हो ताकि देश में जन-जन तक यह संदेश पहुंचे की हिंदी को छोड़ कर दूसरा कोई विकल्प नहीं है। एवं इस पत्रिका की यह भी कोशिश हैं कि जो भी सामाग्री इस पत्रिका में लिखी जाए उसकी भाषा आम बोल-चाल की भाषा एवं सरल हो ताकि कम पढे लिखे लोग भी उस संदेश के पीछे छुपी भावना को भली भाति समझ पाएँ और अपने जीवन में उसको अपना पाएँ।

हिंदी हमारी राजभाषा, इसपे हमे अभिमान है,
अपनेपन की मिश्री जैसी, प्यारी ये जुबान है।
सारी भाषों से देखो, कितनी ये आसान है,
हिंदी ही बने अंतर्राष्ट्रीय भाषा, बस यही अरमान है॥

वित्तीय प्रबंधन : सफलता की नींव

विजय सागर
कनिष्ठ सहायक ग्रेड-II (राजभाषा)
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड़

परिचय

आज के प्रतिस्पर्धी और तेज़ गति वाले युग में केवल धन अर्जित करना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उस कमाई का सही प्रबंधन भी उतना ही आवश्यक है। व्यक्तिगत हो या व्यावसायिक स्तर पर, वित्तीय प्रबंधन एक ऐसी प्रक्रिया है जो संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, भविष्य की योजना और आर्थिक स्थिरता का आधार बनती है।

वित्तीय प्रबंधन क्या है?

वित्तीय प्रबंधन का अर्थ है - धन की योजना, उसका नियंत्रण, विनियोजन (allocation), निवेश और निगरानी। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि उपलब्ध वित्तीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो और अनावश्यक जोखिमों से बचा जा सके।

मुख्य उद्देश्य

1. धन की उपलब्धता सुनिश्चित करना : वित्तीय प्रबंधन का सबसे पहला और मूल उद्देश्य धन की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करना है। किसी भी व्यक्ति, संस्था या व्यवसाय के लिए यह आवश्यक होता है कि उनके पास आवश्यक कार्यों और निवेशों के लिए पर्याप्त पूंजी उपलब्ध हो। धन की उपलब्धता केवल कमाई से नहीं, बल्कि सही योजना, बचत और निवेश नीति से सुनिश्चित होती है।

जब धन की सही मात्रा सही समय पर उपलब्ध होती है, तो

- व्यवसाय बिना रुकावट के संचालित होता है।
- अचानक आने वाले व्यय या आपात स्थितियों का आसानी से सामना किया जा सकता है।
- विकासात्मक योजनाएं स्थगित नहीं होतीं।
- ऋण पर निर्भरता कम होती है, जिससे आर्थिक स्वतंत्रता मिलती है।

2. समय पर निवेश और व्यय का नियोजन : वित्तीय प्रबंधन का दूसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि निवेश और व्यय दोनों ही सही राशि, सही स्थान तथा सही समय पर किए जाएँ। यदि धन उपलब्ध है, पर उसका उपयोग नियत समय पर नहीं हुआ, तो अवसर-लाभ हाथ से निकल सकता है, लागत बढ़ सकती है और परियोजनाएँ विलंबित हो सकती हैं।

3. लाभ और विकास को अधिकतम बनाना : वित्तीय प्रबंधन का तीसरा प्रमुख उद्देश्य है - लाभ (Profit) एवं विकास (Growth) को अधिकतम बनाना। केवल पूंजी का संरक्षण या व्यय की निगरानी पर्याप्त नहीं है, बल्कि उपलब्ध संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करना चाहिए कि वे अधिक से अधिक रिटर्न उत्पन्न करें और संगठन या व्यक्ति को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएं।

4. जोखिम और अनिश्चितता को कम करना : वित्तीय प्रबंधन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य है - जोखिम (Risk) और अनिश्चितता (Uncertainty) को कम-से-कम रखना। किसी भी व्यक्ति, परिवार, व्यवसाय या संस्था की आर्थिक स्थिरता तभी संभव है जब वह संभावित वित्तीय झटकों से बचने या उन्हें सहन करने में सक्षम हो। वित्तीय प्रबंधन इसी दिशा में मार्गदर्शन करता है।

5. भविष्य की आर्थिक ज़रूरतों के लिए योजना बनाना : वित्तीय प्रबंधन का पाँचवाँ और अत्यंत आवश्यक उद्देश्य है - भविष्य की आर्थिक ज़रूरतों के लिए समय से पहले योजना बनाना। जीवन में अनेक ऐसी अवस्थाएँ आती हैं जहाँ बड़ी धनराशि की आवश्यकता होती है - जैसे उच्च शिक्षा, विवाह, घर खरीदना, व्यवसाय विस्तार, स्वास्थ्य आपातकाल

या सेवानिवृत्ति। यदि इन आवश्यकताओं के लिए पहले से योजना न हो, तो अचानक आर्थिक संकट खड़ा हो सकता है।

वित्तीय प्रबंधन के प्रमुख घटक

1. बजट निर्धारण (Budgeting) : यह तय करना कि कहां, कितना और कब खर्च करना है। इस संबंध में बजट निर्धारण करना आवश्यक हो जाता है।

2. निवेश प्रबंधन : फिक्स्ड डिपॉजिट, म्यूचुअल फंड, शेयर बाजार या प्रॉपर्टी-इन सभी विकल्पों का विवेकपूर्ण चयन।

3. जोखिम प्रबंधन : बीमा, आपातकालीन कोष और विविध निवेश के माध्यम से जोखिम को नियंत्रित करना।

4. लिक्विडिटी प्रबंधन: आवश्यक खर्चों के लिए पर्याप्त नकदी बनाए रखना।

5. टैक्स योजना: कर नियोजन के माध्यम से बचत और वैध कर लाभ प्राप्त करना।

वित्तीय प्रबंधन के लाभ

- अनावश्यक ऋण से बचाव
- भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति
- मानसिक शांति और आत्मनिर्भरता
- व्यावसायिक स्थिरता और लाभप्रदता
- आपातकालीन स्थिति में तैयार रहना

निष्कर्ष : वित्तीय प्रबंधन कोई जटिल अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक सशक्त रणनीति है। यदि व्यक्ति या संस्था अपने धन का नियोजन, नियंत्रण और निवेश सही दिशा में करती है, तो वह न केवल आर्थिक रूप से सुरक्षित होती है, बल्कि दीर्घकालिक सफलता की ओर भी अग्रसर होती है।

आज के समय में, जब खर्च अधिक और संसाधन सीमित हैं, स्मार्ट फाइनेंशियल मैनेजमेंट ही किसी संस्था की स्थिरता और समृद्धि की असली चाबी है।

टूट रहा है हौसला

प्रसून कुमार
सहायक महाप्रबंधक (पाइपिंग)
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

नैया डोले बीच भँवर में,
दिखता नहीं किनारा है।

टूट रहा अब प्रभो हौसला,
तेरा मात्र सहारा है।

कल तक जो भी मीत बने थे,
दूर छोड़कर चले गए।

किस पर अब मैं करूं भरोसा,
नित ही सबसे छले गए।

घोर घटायें मुझे चिढ़ाये,
दुख का भरा पिटारा है।

टूट रहा अब प्रभो हौसला,
तेरा मात्र सहारा है।

उजड़ रहा बिटिया का जीवन,
माँगों में अंगार भरे।

धर्म पूछकर भाई मारे,
किस पर हम विश्वास करें।

सूख गए आँखों के आँसू,
सूना पड़ा दियारा है।

टूट रहा अब प्रभो हौसला,
तेरा मात्र सहारा है।

सूख रही जीवन की बगिया,
डाली भरती आहें हैं।

आस-निराशा मकड़जाल में,
उलझी-उलझी राहें हैं।

क्षणभंगुर से इस जीवन में,
हर पल तुझे निहारा है।

टूट रहा अब प्रभो हौसला,
तेरा मात्र सहारा है।

इस ट्रिक से आप भी हासिल कर सकते हैं 100% पत्राचार का लक्ष्य

बिनय कुमार शुक्ल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

भारत के संविधान के अनुसार केंद्र सरकार तथा इसके कार्यालयों में सरकारी कामकाज के लिए अंग्रेजी के साथ ही अधिकृत राजभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता प्राप्त है तथा संवैधानिक प्रावधानों के अनुसरण में राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी केंद्र सरकार तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख की है। इस क्रम में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किये गए उपायों में भाषा के अनुसार भारत को तीन क्षेत्रों में चिन्हित गया तथा इन चिन्हित क्षेत्रों के अनुसार प्रत्येक भाषाई क्षेत्र के कार्यालयों को हिंदी में मूल पत्राचार के लिए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार एक लक्ष्य दिया जाता है तथा वर्ष के अंत तक हर माह उस लक्ष्य को प्राप्त करना अपेक्षित होता है। हालांकि यह लक्ष्य प्राप्त करना बहुत ही आसान है पर 'मूल पत्राचार' में आने वाले कागजातों के बारे में सटीक जानकारी न होने के कारण गणना में भी दिक्कत आती है।

मूल पत्राचार का अर्थ है किसी विशेष कार्यालय या शाखा की ओर से लिखा जाने वाला पत्र। उदाहरण स्वरूप मान लिया जाए कि कोई कार्मिक छुट्टी पर जाता है और समय पर छुट्टी से वापस नहीं आता है। ऐसी परिस्थिति में प्रशासन द्वारा उस कार्मिक को कारण बताओ नोटिस या ज्ञापन दिया जाता है। चूंकि यह ज्ञापन या नोटिस स्वप्रेरण से सम्बद्ध शाखा द्वारा जारी किया जाता है अतः यह मूल पत्राचार की श्रेणी में आएगा। अब उस पत्र का जवाब कार्मिक की ओर से दिया गया पर वह संतोषजनक नहीं था अतः दुबारा उसे ज्ञापन दिया जा रहा है। अब दूसरी बार जारी किया जाने वाला यह पत्र मूल पत्र की श्रेणी में नहीं आएगा। इसी प्रकार दूसरा उदाहरण देखते हैं। यदि कोई कार्मिक दौरे की यात्रा के खर्च की प्रतिपूर्ति के लिए कागजात प्रस्तुत करता है और उसके कागजात उसकी शाखा/विभाग द्वारा अग्रेषण पत्र लगाकर भेजा जाता है तो वह पत्र कार्मिक की शाखा की ओर से जारी किया गया मूल पत्र माना जाएगा। इस पत्र पर प्रशासन शाखा अथवा रोकड़ या वित्त शाखा द्वारा की जाने वाली कार्रवाई के पश्चात जारी किया जाने वाला पत्र मूल पत्राचार की श्रेणी में नहीं गिना जाएगा क्योंकि यह किसी पत्र पर की गई कार्रवाई के अनुसरण में जारी पत्र होता है। पुनः एक बार यह दोहराना चाहूँगा कि यदि शाखा/विभाग अपनी ओर से कोई नेमी पत्र जारी करती है तो वह मूल पत्राचार की श्रेणी में गिना जा सकता है पर यदि किसी प्राप्त पत्राचार के संबंध में पत्राचार किया जाता है तो वह मूल पत्राचार में नहीं गिना जाएगा।

राजभाषा के भाषाई क्षेत्र के आधार पर पश्चिम बंगाल 'ग' क्षेत्र में आता है अतः इस वर्ष मूल पत्राचार का लक्ष्य '60%' निर्धारित किया गया है। यदि कार्यालय सही ढंग से देखे तो बमुश्किल एक माह में दस से पंद्रह या फिर अधिकतम 50 पत्र ही मूल पत्राचार की श्रेणी में जारी किये गए मिलेंगे। यदि हम विचार करें और थोड़ा सा प्रयास करें तो इतनी कम संख्या में जारी होने वाले पत्रों को हिंदी में लिखा ही जा सकता है या फिर उनका अनुवाद करवाकर द्विभाषी रूप में जारी कर साठ के स्थान पर शत प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

मूल पत्राचार का लक्ष्य प्राप्त करने के बाद अब टिप्पण के लक्ष्य प्राप्ति की बात करते हैं। टिप्पण लिखने की प्रक्रिया में तीन घटक होते हैं जिनमें पहला है मुद्दा या मामला दूसरा है डीए(सहायक/लिपिक या प्रस्तुत करने वाले अधिकारी) और इसके बारे में निर्णय लेने वाले अधिकारी जो मामले पर निर्णय देते हैं और उनके निर्णय के अनुसार पत्राचार का मसौदा या प्रारूप। इसमें सबसे अहम भूमिका होती है मुद्दा प्रस्तुत करने वाले डीए की। यदि वहाँ से फ़ाइल अंग्रेजी में शुरू की जाती है तो अंतिम पत्राचार तक की प्रक्रिया अंग्रेजी में ही हो जाती है। हालांकि कई बार अधिकारी को हिंदी का समुचित ज्ञान न होने के कारण ऐसा हो सकता है कि पूरी प्रक्रिया अंग्रेजी में ही की जाए पर बदलते समय के साथ यह समस्या एआई(AI) ने लगभग हल कर दिया है। टिप्पण अर्थात नोटिंग का लक्ष्य इस वर्ष 35% निर्धारित किया गया है। थोड़ा सा प्रयास यह लक्ष्य चुटकी में हासिल करवा देगा।

आम तौर पर जब हम किसी चीज को देखते हैं तो उसकी छवि हमारे मस्तिष्क के दृश्य कॉर्टेक्स तक पहुँचती है जहाँ पहचान और विश्लेषण किया जाता है इसके बाद इसका वर्णन करने के लिए मस्तिष्क के अग्र भाग में स्थित ब्रोका क्षेत्र (Broca's Area) में उसके विषय में लिखने की प्रक्रिया निर्धारित होती है। इसके

बाद मस्तिष्क की स्नायु तरंगें हाथों को इसे लिखने का आदेश देती है और लिखने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। अधिकांशतः हमारे स्नायु को आदेशित करने और क्रिया संचालन की यह प्रक्रिया मातृभाषा में ही होती है। आमतौर पर हम भारतवासी चाहे जितना भी पढ़े-लिखे क्यों न हो जाएँ हर चीज हमारा मस्तिष्क मातृभाषा में ही सोचता है। अब इसे यदि किसी अन्य भाषा में लिखना हो तो मस्तिष्क के बाएँ भाग में स्थित वर्निके क्षेत्र (Wernicke's Area) में भाषा को संसाधित और अनूदित करने की प्रक्रिया होती है और अंत में, हम जो लिखते हैं या बोलते हैं, वह मस्तिष्क के मोटर कॉर्टेक्स के माध्यम से नियंत्रित होता है, जिससे भाषा को सही ढंग से व्यक्त किया जाता है। कमोबेश कंप्यूटर में भी यही प्रक्रिया चलती है।

भारतीय होने के नाते हमारे अंदर यह क्षमता पहले से ही विद्यमान है कि हम अपने राज्य में चलने वाली राजभाषा के अतिरिक्त एकाध भाषा अवश्य जानते हैं। सिनेमा-मीडिया और सोशल मीडिया की पैठ घर-घर में होने के कारण न चाहते हुए भी हर व्यक्ति थोड़ा बहुत हिंदी तो समझ हो लेता है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के संबंध में सरकार का कहना है कि आसान वाक्य और आसान शब्दों का प्रयोग कर छोटे-छोटे वाक्यों से शुरुआत करें तथा सबसे बड़ी बात कि शुरुआत में हिंदी लिखते समय आपसे वर्तनी की अशुद्धि(spelling mistake) या वाक्य संरचना में गड़बड़ी हो भी सकती है पर जबतक सही भाव संप्रेषित होता है तबतक आपसे कोई प्रश्न नहीं किया जाएगा। अब आपको जो भी कहना है उसे मातृभाषा में सोचिए और फिर जिस रूप में हिंदी में प्रस्तुत कर सकते हैं लिख डालिए।

एक छोटे से उदाहरण से इस बात को स्पष्ट करना चाहूँगा। एक बार किसी कार्यालय में छुट्टी से वापस आकर एक सज्जन ने अंग्रेजी भाषा में अपना कार्यग्रहण रिपोर्ट प्रस्तुत किया। उस रिपोर्ट में उन्होंने यह लिखा था – "I am to give my joining report……" अब इस वाक्य का व्याकरणिक आधार पर विवेचना करने का प्रयास करें तो जिन वाक्यों में 'am to' का प्रयोग किया जाता है वहाँ क्रिया होगी ही यह सुनिश्चित नहीं होता है। कर्ता यदि चाहे तो उसे नहीं भी कर सकता है। जैसे – I am to go for a movie tonight(आज रात मैं सिनेमा देखने जाने वाला हूँ- अर्थात कोई बाध्यता नहीं, जा भी सकता हूँ और नहीं भी) अब कार्यग्रहण के मामले में उपर्युक्त वाक्य कहाँ तक जायज है। उसके बदले यदि हिंदी में यह लिखा होता, "कार्यग्रहण करता हूँ/कर रहा हूँ/कर लिया- तो मुझे नहीं लगता कि कोई अस्वीकार्य या गलत अर्थ संप्रेषित होता है।

समस्या यह नहीं कि हम लिख नहीं पाते, लिख तो लेते हैं पर बस इस संकोच से कि कहीं हिंदी गलत न लिख जाए, पढ़ने वाला मजाक उड़ाएगा। आप समय निकालकर कार्यालय में लिखी जाने वाली अंग्रेजी की व्याकरणिक दृष्टि से समीक्षा करके देखिए, काफी गलतियाँ रहती हैं पर बिंदास लिखते चले जाते हैं क्योंकि अंग्रेजी के बारे में हमें अपने ऊपर अति-विश्वास रहता है। यह भावना त्यागनी होगी और जैसे ही यह भावना त्यागकर हम शुरुआत करते हैं, आप महसूस करेंगे कि वर्ष के अंत में आप निर्धारित लक्ष्य से कहीं दूना हिंदी में लिख चुके होंगे।

संकोच निकल गया, आप लिखने भी लगे पर फिर भी एक समस्या और रह गई। कई ऐसे शब्द हैं जिनका हिंदी नहीं पता होता है या फिर समझ में नहीं आता उनका क्या?

ऐसे शब्दों के लिए आपको यह छूट है कि या तो उनका लिप्यंतरण(transliteration) कर लिया जाए जैसे Sundry के लिए संड्री –Legal का लीगल आदि या फिर इसको अंग्रेजी में ही रहने दिया जाए। यह भी स्वीकार कर लिया जाएगा। कभी-कभी न चाहते हुए भी लंबे वाक्य लिख ही जाते हैं ऐसे में ऑनलाइन अनुवाद टूल का सहयोग लिया जा सकता है। पर इनमें से भी आपको बड़ी सावधानी से टूल का चयन करना होगा अन्यथा गोलमाल होने की गारंटी है।

विगत कुछ वर्षों के अपने अनुभव के आधार पर मुझे जो अनुवाद का जो माध्यम अच्छा लगा क्रमानुसार उनका विवरण निम्नानुसार है:-

क) वर्ड डॉक्युमेंट में अनुवाद का विकल्प(राइट क्लिक करके) – इसमें आप एक बार में एक ही वाक्य का अनुवाद करें तो अनुवाद सही होने की संभावना है।

ख) को-पायलट – इसमें पूरे वाक्य का सही अनुवाद संभव है पर इसमें सही प्रॉम्पट(सुझाव या आदेश) देना आवश्यक है।

ग) गूगल अनुवाद – 40% सही बाकी आपको पढ़कर ठीक करना होगा।

घ कंठस्थ/भाषिनी – 30% सही बाकी आपको पढ़कर ठीक करना होगा।

यह अवश्य याद रखें कि किसी भी मशीनी अनुवाद को बिना पढ़े अंतिम न मानें अन्यथा आपकी हिंदी पढ़कर लोगों को आनंद तो खूब आएगा पर वह केवल हास्यमेव जयते का।

मैंने हिंदी क्रियान्वयन के लिए इन सबका प्रयोग करके देखा है और सफल भी हो रहा हूँ लोग आगे आकर हिंदी को अपना भी रहे हैं। आप भी करके देखिए, 100% लाभ की गारंटी है।

श्वेतांशु
उप प्रबंधक (कॉर्पोरेट योजना)
ब्रिज एण्ड रुफ कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

हिंदी - आत्म-निर्भर भारत की आत्मा और आवाज़

"हिंदी है भारत की आत्मा की भाषा,
इसके बिना अधूरी है विकास की परिभाषा"

हिंदी का ऐतिहासिक योगदान:

"क्रांति की बोली थी हिंदी, जनजन की थी पहचान,
स्वतंत्रता संग्राम में बनी देशभक्ति की जान"

हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम के समय भारत को एकजुट रखने में अतुलनीय योगदान दिया। हिंदी में लिखे गए क्रांतिकारी साहित्य, गीत और कविताएं जैसे कि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताएं, भारतेंदु हरिश्चंद्र और प्रेमचंद की कहानियां – इन सबने जनजागृति फैलाई और स्वतंत्रता की भावना को जन-जन तक पहुँचाया।

गांधी जी ने हिंदी को जनभाषा बताते हुए कहा था, "हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए।" हिंदी ने ही अंग्रेज़ी दासता के विरुद्ध सांस्कृतिक शक्ति का कार्य किया।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी की स्थिति:

"तकनीक के युग में बढ़े हिंदी के पंख,
डिजिटल क्रांति में उसका भी है रंग"

आज हिंदी केवल साहित्य या जनसंवाद की भाषा नहीं रही, बल्कि यह डिजिटल, तकनीकी, विज्ञान एवं व्यापार की भाषा बन चुकी है। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में वृद्धि के साथ ही हिंदी में कंटेंट की मांग भी तेज़ी से बढ़ी है।

यूट्यूब, फेसबूक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सप्प जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी में वीडियो, लेख और टिप्पणियां बड़ी संख्या में देखी जाती हैं। ई-गवर्नेंस, डिजिटलीकरण और मोबाइल एप्स के क्षेत्र में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ा है।

गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेज़न जैसे वैश्विक दिग्गजों ने हिंदी भाषा के लिए अनुकूलित सेवाएं शुरू की हैं। इससे साफ़ होता है कि हिंदी अब वैश्विक तकनीकी परिदृश्य में भी जगह बना रही है।

हिंदी और आत्मनिर्भरता का संबंध:

"हिंदी से ही जुड़ा है आत्मा का स्वर,
बिना भाषा के अधूरा है आत्मनिर्भर"

आत्मनिर्भर भारत का सपना तभी साकार हो सकता है, जब देश की अधिकांश जनसंख्या को अपनी भाषा में शिक्षा, रोजगार और सूचना उपलब्ध हो। आज भी ग्रामीण भारत की एक बड़ी आबादी हिंदी या हिंदी-समकक्ष भाषाओं में सहज होती है।

यदि नवाचार, विज्ञान, चिकित्सा, कानून और प्रशासन में हिंदी का समावेश बढ़ाया जाए, तो आम नागरिक तक नीतियों और सुविधाओं की पहुंच और भी सरल हो सकती है। हिंदी में व्यवसायिक प्रशिक्षण, तकनीकी शिक्षा और सरकारी दस्तावेज़ों की उपलब्धता आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की एक मजबूत नींव रखती है।

शिक्षा और हिंदी:

“अपनी ही भाषा में जब ज्ञान मिलेगा,
तभी भारत का सपना साकार बनेगा"

नई शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा में प्राथमिक

शिक्षा को प्राथमिकता देकर सही दिशा में कदम बढ़ाया है। जब छात्र हिंदी में विज्ञान, गणित और तकनीकी विषयों को समझेंगे, तो वे गहराई से सीख सकेंगे और नवाचार में भी बढ़त मिलेगी।

हिंदी में उच्चस्तरीय पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता, ऑनलाइन कोर्सेज़ और शोधपत्रों की संख्या बढ़ाकर हम युवाओं को वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार कर सकते हैं।

व्यापार, उद्योग और हिंदी:

"हिंदी जब व्यापार में, पाए अपना स्थान।
स्वावलंबी राष्ट्र का, सजे नया विधान"

भारत के भीतर के बाज़ार में यदि हिंदी को व्यापार की भाषा बनाया जाए, तो स्थानीय व्यापारियों, स्टार्टअप्स और कारीगरों को सीधे लाभ मिलेगा। डिजिटल पेमेंट, बैंकिंग सेवाएं, कृषि-संबंधी जानकारी और सरकारी योजनाएं जब हिंदी में उपलब्ध होंगी, तो इनका प्रभाव बढ़ेगा और आत्मनिर्भरता का दायरा विस्तृत होगा।

भविष्य की दिशा और संभावनाएं:

"हिंदी में छिपा है तकनीक का उजाला,
विश्व मंच पर अब इसका है निवाला"

अनुवाद तकनीक और एआई में हिंदी: मशीन ट्रांसलेशन, वॉइस रिकग्निशन और एआई आधारित टूल्स में हिंदी का अधिक समावेश करना आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर हिंदी का विस्तार: विश्व हिंदी सम्मेलन, हिंदी भाषा दिवस और भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार को और सशक्त किया जा सकता है। नवाचार और स्टार्टअप में हिंदी: लोकल-फॉर-वोकल के तहत हिंदी भाषी क्षेत्रों में तकनीकी स्टार्टअप्स को हिंदी में प्रोत्साहन देना चाहिए। हिंदी मीडिया और मनोरंजन का सशक्त उपयोग: ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म्स, रेडियो और पॉडकास्ट में हिंदी कंटेंट की गुणवत्ता और पहुंच को बढ़ाया जाए।

निष्कर्ष:

"हिंदी नहीं केवल भाषा का नाम,
यह है आत्मनिर्भर भारत का स्वाभिमान।"
"हिंदी में सोचें, हिंदी में बोलें,
नई सदी का सपना हिंदी में खोलें।"

हिंदी भाषा, आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में एक मजबूत स्तंभ के रूप में उभर रही है। यह भाषा न केवल भारत के सांस्कृतिक गौरव की प्रतीक है, बल्कि तकनीक, शिक्षा, व्यापार, शासन और जनकल्याण के हर क्षेत्र में प्रभावी भूमिका निभा सकती है।

अब समय आ गया है कि हम हिंदी को केवल 'हिंदी पखवाड़ा' तक सीमित न रखें, बल्कि इसे हर दिन के प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी विकास में सशक्त रूप से अपनाएं।

बारिस की बुँदे

सुना है हमने पेड़ों की पत्तियों की झंकार,
पेड़ों के पत्ते, उड़ने को हैँ बेकरार।
बादलों की गंभीरता, हवाओं की चंचलाहट।
चीड़ियों की घबराहट, नदियों की उफनाहट।
ठंडी हवाओं की मुस्कराहट, बादलों की
चकमकाहट।

ओह!
सोंधी मिट्टी की सुगंध,
मन को प्रफुल्लित करती, मोती सी बुँदे।
आह !
वो बारिस की बुँदे।

सत्येन्द्र कुमार पाण्डेय
सहायक महाप्रबंधक (कार्मिक व प्रशासन)
एंड्रयू यूल एंड कंपनी लिमिटेड

कुंभ मेला : भारत की सांस्कृतिक विरासत

अजय कु. साव
हिंदी अधिकारी
भारतीय नौवहन निगम लि.

कुंभ मेला का नाम सुनते ही हमारे अंतर्मन में आस्था, विश्वास, सौहार्द और भक्ति से परिपूर्ण संस्कृतियों के उस पवित्र मिलन स्थल का बिंब उभर कर सामने आ जाता है; जहाँ जाति, धर्म, लिंग,पंथ, सम्प्रदाय, क्षेत्र विशेष जैसे तमाम भेदभाव को भूलकर मोक्ष की कामना लिए लाखों लोग सदियों से विशेष तिथि-विधान में पवित्र नदियों में डूबकी लगाते आ रहे हैं। यह सिर्फ मोक्ष की कामना ही नहीं बल्कि ज्ञान, चेतना और उसका परस्पर मंथन कुम्भ मेले का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के खींच लाता है।

कुम्भ पर्व की शुरुआत इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं अपितु इसका इतिहास समय के प्रवाह के साथ स्वयं ही बनता चला गया। वैसे भी धार्मिक परम्पराएं हमेशा आस्था एवं विश्वास के आधार पर टिकती हैं न कि इतिहास पर। यह कहा जा सकता है कि कुम्भ जैसा विशालतम् मेला संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए ही आयोजित होता है।

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ कलश है। यहाँ 'कलश' का सम्बन्ध अमृत कलश से है। बात उस समय की है (सर्वाधिक मान्य पौराणिक कथा के अनुसार) जब महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण इन्द्र और अन्य देवता शक्तिहीन हो गए तो दानवों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त करने लगा तब देवतागण भगवान विष्णु के पास गए और श्राप से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने हेतु निवेदन किए और फिर भगवान विष्णु ने देवताओं को समुद्र मंथन से प्राप्त होने वाले अमृत का पान कर श्राप से मुक्त होकर अमर होने का सुझाव दिए। लेकिन समुद्र मंथन जैसा दुष्कर कार्य उस समय शक्तिहीन हो चुके देवताओं के लिए अकेले कर पाना संभव नहीं था। अतः दानवों के साथ संधि कर समुद्र मंथन में शामिल किया गया। इस प्रकार देव और दानव दोनों पक्ष समुद्र मंथन को राजी हुए। समुद्र मंथन जैसे अभीष्ट कार्य के लिए मथनी और नेति (मंथन कार्य का माध्यम) की आवश्यकता भी उसी हिसाब की चाहिए थी। ऐसे में मंदराचल पर्वत मथनी बना और नागवासुकि उसकी नेति। मंथन से चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई जिन्हें परस्पर बाँट लिया गया परंतु जब धन्वन्तरि ने अमृत कलश देवताओं को दे दिया तो पुनः युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। तब भगवान् विष्णु ने स्वयं मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की बात कही और अमृत कलश का दायित्व इंद्र-पुत्र जयंत को सौपा। अमृत-कलश को प्राप्त कर जब जयंत दानवों से अमृत की रक्षा हेतु भाग रहे थे तभी इसी क्रम में अमृत की बूंदे पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिरी- हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज। चूंकि विष्णु की आज्ञा से सूर्य, चन्द्र, शनि एवं बृहस्पति भी अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे और विभिन्न राशियों (सिंह, कुम्भ एवं मेष) में विचरण के कारण ये सभी कुम्भ पर्व के द्योतक बन गये। इस प्रकार ग्रहों एवं राशियों की सहभागिता के कारण कुम्भ पर्व ज्योतिष का पर्व भी बन गया। जयंत को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लगा था और माना जाता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है। यही कारण है कि कालान्तर में वर्णित स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुम्भ मेले का आयोजन होने लगा। (इसी क्रम में यह वर्ष (वर्ष 2025) महाकुम्भ के रूप में मनाया गया जो हर 144वें वर्ष (हर 12वाँ कुम्भ) में मनाया जाता है जिसका आयोजन प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक किया गया।)

कुम्भ का आयोजन ज्योतिष गणना के क्रम में चार प्रकार से माना गया है:

- बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार (उत्तराखंड) में गंगा-तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।
- बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में त्रिवेणी संगम तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।

"कवि संमेलन हिंदी प्रचार के बहुत उपयोगी साधन हैं।" - श्रीनारायण चतुर्वेदी।

- बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक (महाराष्ट्र) में गोदावरी तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।
- बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन (महाराष्ट्र) में शिप्रा तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।

धार्मिकता एवं ग्रह-दशा के साथ-साथ कुम्भ पर्व को तत्त्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, जिससे कुम्भ की उपयोगिता सिद्ध होती है। कुम्भ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्त्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है। प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है। कहा भी गया है "यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" अर्थात् जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इस लिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है-'कुम्भ', और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का प्रसाद है।

कुंभ की महत्ता :

कुंभ से सिर्फ धार्मिक, अध्यात्मिक और सांस्कृतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक और ज्योतिषीय महत्ता भी प्रदर्शित होती है। इन बिंदुओं को केंद्र में रखकर कुंभ का अध्ययन करना अनुसंधान का विषय है। अतः हम यहाँ कुंभ मेले के सांस्कृतिक महत्व को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते है:

1. आध्यात्मिक और धार्मिक केंद्र : कुंभ मेला में देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु और साधु-संत शामिल होते हैं, जो भारत की धार्मिक विविधता और आस्था को दर्शाता है। यह मानव जीवन में पुनर्जन्म, मोक्ष और पवित्रता के महत्व को दर्शाता है। मान्यता है कि यहाँ स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

2. संत परंपरा का समागम : कुंभ मेला साधु-संतों के विभिन्न संप्रदायों का संगम स्थल है। यहाँ नागा साधु, उर्ध्वबाहु साधु, और कई अन्य तपस्वी अपने जीवन दर्शन को प्रस्तुत करते हैं, जो भारतीय संस्कृति की गहन आध्यात्मिक परंपरा को उजागर करता है। यह संतों और आम लोगों के बीच संवाद का एक मंच प्रदान करता है।

3. सामाजिक और सांस्कृतिक मेलजोल : कुंभ मेला भारत की विविधता में एकता का प्रतीक है। यहाँ विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, और परंपराओं से जुड़े लोग एक साथ आते हैं। यह समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सामाजिक सद्भावना और एकजुटता को बढ़ावा देता है।

4. साहित्य, कला और संगीत का संरक्षण : मेले में धार्मिक प्रवचन, भजन, कीर्तन और कथाएँ भारतीय साहित्यिक और सांगीतिक परंपरा को सजीव बनाते हैं। यहाँ होने वाले धार्मिक अनुष्ठान और लोक कलाएं भारतीय लोक संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने का कार्य करती हैं।

5. वैज्ञानिक और खगोलीय महत्व : कुंभ मेले की तिथियों का निर्धारण खगोलीय गणनाओं के आधार पर होता है। यह भारत की प्राचीन खगोलशास्त्र और गणितीय परंपरा का प्रमाण है।

6. पर्यटन और वैश्विक पहचान : कुंभ मेला न केवल भारतीयों के लिए, बल्कि विदेशियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। यह भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करता है।

7. आध्यात्मिक ऊर्जा और शांति का अनुभव : कुंभ मेला आत्मनिरीक्षण, ध्यान और शांति के माध्यम से आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है, जो भारतीय दर्शन का अभिन्न अंग है।

निष्कर्ष : उक्त बिंदुओं पर विचार एवं मंथन के उपरांत यह समझा जा सकता है कि कुंभ मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत का उत्सव है, जो धर्म, आध्यात्म, विज्ञान, और समाज को एक साथ जोड़ता है। यह पर्व भारतीय इतिहास और परंपराओं की गहराई को समझने और उसे पुनर्जीवित करने का माध्यम है। यह पर्व हमारी जड़ों से जुड़ने, समाज में एकता और शांति का संदेश फैलाने, और भारतीय संस्कृति के गौरव को बनाए रखने का सशक्त माध्यम है। कुंभ मेला भारत की सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य रत्न है, जो आज भी समृद्ध परंपराओं और आध्यात्मिकता की भावना को जीवित रखे हुए है।

खोयी "मानसा" की मनसा

अपर्णा दास
तकनीकी सहायक-II
भारतीय खाद्य निगम

भूले-बिसरे देश के ऊँचे पहाड़ों के बीच बसा था एक गाँव – मधुपुर। वहाँ की हवाओं में फुसफुसाहटें थीं, जो यादों से भी पुरानी थीं, मानो वो झोके आपस में किलकारी लगाती थी। मधुपुर के लोग शांत स्वभाव के थे, जो ऋतुओं की चाल, वह रहने वाले पक्षी और जानवरों के जीवनशैली और बुजुर्गों की बातों के अनुसार जीवन जीते थे। वहाँ की परंपराएँ कपड़ों की तरह थीं- जड़ी-बूटियों से रंगे वस्त्र, चाँदनी रात में होने वाले अनुष्ठान, और वो लोरियाँ जो अब किसी स्कूल में नहीं सिखाई जाती थीं।

मधुपुर की सबसे पुरानी भाषा का नाम था "मानसा"। धीरे-धीरे वह भाषा मिट रही थी। हर साल, कम बच्चे उसे बोलते, और उससे भी कम समझते कि उन शब्दों का वज़न क्या है। वह सिर्फ एक जुबान नहीं थी-वह दुआ थी, मिठास थी, अलविदा थी, जन्म संस्कार था। वह पहचान थी।

मिनी नाम की 14 साल की लड़की, जिसकी आँखों में सवाल और दिल में जिज्ञासा थी, अपनी दादी अम्मा के पुराने संदूक में एक डायरी खोज निकालती है। उसके पन्ने पीले हो चुके थे, उनकी सिलाई खुलने लगी थी, स्याही हल्की हो चुकी थी,लेकिन शब्दों में अब भी आग थी। और वो भाषा थी " मानसा "।

दादी-अम्मा उसे वह डायरी पढ़ते हुए देखती हैं। उनकी आवाज़ थोड़ी झिझकती है, आँखों में कुछ आँसू आते पर उसमें आदर है।

"ये तुम्हारे परदादा की डायरी है," दादी -अम्मा फुसफुसा कर कहती हैं। "वो मानते थे कि अगर हम बोलना छोड़ दें, तो हम भूल जाएँगे कि हम क्या है, क्यों हैं।"

"हम क्यों हैं, दादी?" मिनी ने पूछा।

"याद रखने के लिए," दादी- अम्मा बोलीं। "और याद दिलाने के लिए।"

आने वाले महीनों में, मिनी " मानसा " सीखने लगी-सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि गीत, इशारे, मुहावरे और वह चुप्पियाँ जिनमें भी भाषा छुपी होती है। वह कविताएँ लिखने लगी, पुराने भजन गाने लगी, और अपने छोटे भाई को भी उनकी भाषा " मानसा " सिखाने लगी।

लेकिन गाँव बदल चुका था। पर्यटक आजकल सिर्फ तस्वीरें या सेलफ़ी लेते, कहानियाँ सुनने की इच्छा नहीं रखते। स्कूल अब विदेशी भाषाएँ सिखाते थे ताकि बच्चे विश्व की बड़ी शहरों में नौकरी पा सकें। बुज़ुर्ग एक-एक कर चले गए, और उनके साथ उनकी भाषा भी दफ़न होने लग गयी।

मिनी के दोस्त उसे चिढ़ाते:

"मर चुकी भाषा से क्या फायदा?"

"क्योंकि वो अब भी साँस ले रही है," मिनी जवाब देती। "बस हमे उसकी पुकार सुनने की ज़रूरत है।"

एक दिन, सरकार दफ्तर से एक अधिकारी आया। वह गाँव के पुराने जंगल में एक हाईवे बनवाना चाहते थे -उन ज़मीनों के ऊपर से जो कभी पूर्वजों की समाधि हुआ करती थीं।

"अब तो किसी को याद भी नहीं है कि ये ज़मीन क्या थी," उसने लापरवाही से कहा।

पर मिनी खड़ी हुई।

उसने अपने परदादा की डायरी से एक अंश " मानसा " में सुनाया:

"इन पेड़ों के नीचे हमारे आरंभ की अस्थियाँ हैं। अगर इन्हें छेड़ा गया, तो सिर्फ इतिहास नहीं, भविष्य की दिशा भी खो जाएगी।"

बुज़ुर्गों की आँखों में आँसू थे। गाँव वालों के दिल कांप उठे। उन्होंने फिर से वाद्य यंत्र निकाले, भाषा पाठशाला बनाई, और पुरानी कथाओं की दीवारों पर चित्र बनाए। उन्होंने विरोध किया- और जीत गए अपनी पूर्वजो के संपद और अस्तित्व को बचाने में।

कुछ साल बाद, मधुपुर केवल अपनी खूबसूरती के लिए नहीं, बल्कि इसलिए प्रसिद्ध हुआ कि वहाँ के लोग भूले नहीं।

अब मिनी एक शिक्षिका बन चुकी थी। उसके सामने बच्चे बैठे थे-जो "मानसा" वैसे ही बोलते थे जैसे लोग साँस लेते हैं।

"हम बोलते हैं," मिनी ने कहा, "सिर्फ सुने जाने के लिए नहीं-बल्कि जुड़ने के लिए। हमारी भाषा हमें हमारे मूल से जोड़ती है। और हमारी परंपराएँ? वो हमारे पूर्वजों के हाथ हैं-जो अब भी हमें थामे हुए हैं।"

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।" – कमलापति त्रिपाठी।

बच्चे को बच्चा ही समझिए

नित्यानंद सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक(ओएच)
हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड

खेल के मैदान में बच्चों की संख्या कम होती जा रही है। गली-मौहल्ले में अब पहले जैसी बच्चों की धमाचौकड़ी नहीं दिखती। यहाँ तक कि घर के अंदर भी उनका शोरगुल सुनाई नहीं देता। आपने कभी महसूस किया कि ऐसा क्यों है ?

आजकल के बच्चों की पीठ पर हमेशा बैग नजर आता है। स्कूल के अलावा ट्यूशन, हॉबी क्लास आदि के कारण उनके बैग का बोझ इतना है कि शाम के समय दोस्तों के साथ बाहर खेलना-कूदना भी बच्चे भूल ही गए हैं। आज अगर खाली समय बच्चों को मिलता भी है तो उनके हाथों में मोबाइल आ जाता है।

आजकल के अभिभावक भी इन चोजों पर ध्यान नहीं देते। आज छोटे बच्चों को भी अभिभावक स्कूल भेज कर और ट्यूशन पढ़ाकर निश्चिन्त हो जाते हैं जबकि सोचने की बात है कि केवल ट्यूशन टीचर से पढ़कर बच्चा नहीं सीख सकता। उसे खुद से सोचना और पढ़ना जरूरी है जिसमें माता-पिता के साथ और समय दोनों का सहयोग अति आवश्यक है। ये बच्चे के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी जरूरी है कि स्कूल, होमवर्क के बाद बच्चा बाहरी वातावरण में जाए, दोस्तों के साथ खेले-कूदे, मस्ती करे।

अध्ययन सीखने की सतत् प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में शिक्षक और माता-पिता का सहयोग बेहद जरूरी है। विद्यालय की पढ़ाई के बाद घर आने पर उससे उस दिन की पूरी दिनचर्या पर बातें कीजिए, उसकी जिज्ञासा में शामिल होकर उचित मार्गदर्शन कीजिए। इससे बच्चे के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जो बच्चे के स्वस्थ्य मानसिक विकास के लिए बहुत जरूरी।

बहुत से अभिभावक ट्यूशन के साथ-साथ बहुत सारे हॉबी क्लासेज लगा देते हैं जो सही नहीं है। बच्चे को बच्चा समझिए, मशीन नहीं। इतना भी दबाव मत डालिए कि बालपन कुंठित हो जाए।

बच्चे छोटा-सा पौधा है, उन्हें पल्लवित होने दीजिए। अपने बच्चों से संवाद बनाए रखिए, उसकी दूनिया में शामिल होइए। उसके बालपन को समझकर उसकी परवरिश की दिशा उसके अनुरूप तय करिए। “सबसे तेज” बनाने के चक्कर में उसे ट्यूशन कोचिंग या हॉबी क्लासेज के बोझ तले मत दबाइए। अपना थोड़ा-सा समय, थोड़ा-सा सहयोग देकर हम उनका सही तरीके से मार्गदर्शन कर सकते हैं।

कुछ विशेष बातें जो अभिभावक ध्यान रखें, जैसे- प्रतिदिन घर पर एक निश्चित समय तय कर बच्चे की पढ़ाई के बारे में जाने, होमवर्क में सहयोग करें। प्रतिदिन लिखने का अभ्यास भी करवाना चाहिए। बच्चे की कमजोरी पर ध्यान देकर उसे मनोरंजक तरीके से उस विशेष विषय या टॉपिक को समझाइए। बच्चे की किसी और से तुलना न करें उसे अपने आत्मविश्वास से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। बालपन को समझिए और बच्चे को एक स्वस्थ्य वातावरण में विकसित होने का अवसर दीजिए।

मैं और तितली शिविर और सबको जोड़ता हिमालयन नेचर ऐण्ड ऐडवेंचर फाउण्डेशन

रीना पाण्डेय
प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम

प्रकृति और हमारा संबंध अत्यंत गहन और अनिवार्य है; हम एक-दूसरे पर पूरी तरह से निर्भर हैं, जहाँ प्रकृति हमारे जीवन के लिए आवश्यक हर चीज़-साँस लेने के लिए हवा, पोषण के लिए भोजन, पीने के लिए पानी, और आश्रय के लिए संसाधन-प्रदान करती है। यह हमें मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य भी देती है, तनाव कम करती है और हमें भीतर से शक्ति देती है। हालाँकि, दुर्भाग्य से, मानव गतिविधियों ने इस नाजुक संतुलन को बिगाड़ दिया है, जैसे प्रदूषण, वनों की कटाई से जैव विविधता का नुकसान हुआ है, जिसने हमारे ग्रह और हमारे अपने अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। इस महत्वपूर्ण रिश्ते को बचाने के लिए दुनिया भर में कई स्वयंसेवी संस्थाएँ अथक प्रयास कर रही हैं। ये संगठन जागरूकता फैलाने, संरक्षण परियोजनाओं को लागू करने और स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (WWF) जैसी वैश्विक संस्थाएँ लुप्तप्राय प्रजातियों और उनके आवासों की रक्षा के लिए काम करती हैं, जबकि ग्रीनपीस (Greenpeace) जैसी संस्थाएँ पर्यावरणीय अन्याय के खिलाफ सक्रिय रूप से अभियान चलाती हैं और स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देती हैं। भारत में, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS) जैसे संगठन पक्षी संरक्षण और जैव विविधता अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि टेरी (TERI - द एनर्जी एंड रिसोर्स इंस्टीट्यूट) स्थायी विकास और ऊर्जा दक्षता पर अनुसंधान और नीति वकालत करता है। ये संस्थाएँ समुदायों को सशक्त बनाती हैं, सरकारों पर दबाव डालती हैं, और जमीनी स्तर पर संरक्षण के प्रयासों को लागू करती हैं। उनका सामूहिक कार्य प्रकृति के साथ हमारे संबंध को सुधारने, पर्यावरण को बहाल करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ ग्रह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति का संरक्षण केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व के लिए एक परम आवश्यकता है। इसी क्रम में यदि हम पश्चिम बंगाल क्षेत्र पर नजर डाले तो यहाँ भी कुछ ऐसी संस्थाएं हैं जो प्रकृति से सीधे तौर पर जुड़ी हुई है। एक ऐसी ही संस्था है जिससे मैं जुड़ी हूँ वह है "हिमालयन नेचर ऐण्ड ऐडवेंचर फाउण्डेशन", सिलीगुडी और मुझे लगता है इस तरह के महान कार्य को जिसमें लोग सीधे तौर से प्रकृति से जुड रहें है, अपने आप में मिशाल है। मैंने अभी हाल ही में इस संस्था द्वारा आयोजित "तितली शिविर" में भाग लिया था जिसके बारे में मै अपना अनुभग सांझा करना चाहुंगी। पर इससे पहले एक नजर हम "हिमालयन नेचर ऐण्ड ऐडवेंचर फाउण्डेशन" (एचएनएएफ) पर डालेंगें।

हिमालयन नेचर एंड एडवेंचर फाउंडेशन (HNAF), सिलीगुड़ी

हिमालयन नेचर एंड एडवेंचर फाउंडेशन (एचएनएएफ), सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल में स्थित एक प्रमुख गैर-सरकारी संगठन है जो प्रकृति संरक्षण, साहसिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और पर्यावरणीय शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। एचएनएएफ की स्थापना 1990 में हुई थी, जिसका पंजीकरण पश्चिम बंगाल सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के तहत हुआ है। यह संगठन इंडियन माउंटेनियरिंग फाउंडेशन, नई दिल्ली से भी संबंधित है। एचएनएएफ की स्थापना में हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट, दार्जिलिंग के पूर्व उप

"भाषा और राष्ट्र में बड़ा घनिष्ट संबंध है।" - (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह।

निदेशक नीमा ताशी का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संगठन की स्थापना इस क्षेत्र के लोगों में हिमालय की भव्य सुंदरता को समझने, प्रकृति के संरक्षण की जिम्मेदारी को महसूस करने और पारिस्थितिक जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता को समझते हुए की गई थी। पर्यावरण संबंधी मुद्दों को संबोधित करने की बढ़ती आवश्यकता ने एचएनएएफ के गठन का मार्ग प्रशस्त किया। 1990 में अपनी स्थापना के बाद से, एचएनएएफ एक अग्रणी गैर-सरकारी संगठन के रूप में उभरा है जिसका मुख्य उद्देश्य "साहसिक भावना के साथ प्रकृति का अन्वेषण, प्रेम और संरक्षण" करना है। इसके उद्देश्यों में से प्रमुख है - जैव विविधता को संरक्षित करना और प्रकृति में सभी जीवन का समर्थन करना, बच्चों और युवाओं के बीच प्रकृति शिक्षा का प्रसार करना, विशेष रूप से देश भर से आने वाले बच्चों और युवाओं के लिए, साहसिक खेल गतिविधियों को बढ़ावा देना, मानव निर्मित गंदगी से पर्यावरण को साफ करना और एक हरे-भरे ग्रह की दिशा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान संकट में फंसे समाज और राहत कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना, स्वस्थ बाहरी गतिविधियों को बढ़ावा देकर पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा देना, अनुभवजन्य शिक्षा के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों, विशेषतः शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों और बच्चों में आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की भावना पैदा करना। यह अपनी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है। यह संगठन नियमित रूप से बच्चों और युवाओं के लिए प्रकृति अध्ययन-सह-साहसिक शिविर आयोजित करता है। ये शिविर विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण बच्चों और युवाओं को प्रकृति के करीब लाने का अवसर प्रदान करते हैं। इनमें लंबी पैदल यात्रा, जंगल ट्रेकिंग और कैंप क्राफ्ट जैसे पाठ्यक्रम शामिल होते हैं। विभिन्न जनगणना, सर्वेक्षण, कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित करके प्रकृति और वन्यजीवों के संरक्षण के लिए लगातार काम कर रहा है। यह सिंघलीला राष्ट्रीय उद्यान, गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान, चापरमारी राष्ट्रीय उद्यान, नेओरा घाटी राष्ट्रीय उद्यान और बक्सा टाइगर रिजर्व जैसे विभिन्न वन्यजीव अभयारण्यों में वन्यजीव और पक्षी जनगणना का संचालन करता है। पिछले 15 वर्षों से, एचएनएएफ पश्चिम बंगाल के सबसे ऊंचे स्थान और भारत के जैव विविधता हॉटस्पॉट, संदकफू (3636 मीटर) के मार्ग पर गैर-बायोडिग्रेडेबल कचरे को साफ करने और वृक्षारोपण के लिए "क्लीन एंड ग्रीन सिंघलीला नेशनल पार्क" कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। यह एशियाई जलपक्षी जनगणना के हिस्से के रूप में प्रमुख जल निकायों में वार्षिक जलपक्षी गणना का भी आयोजन करता है। वन विभाग के सहयोग से वन्यजीवों को बचाने की मुहिम से जुड़ी हुई है यह संस्था। एचएनएएफ युवाओं के लिए साहसिक ट्रेकिंग और कैंपिंग पाठ्यक्रम प्रदान करता है, जिसमें उच्च ऊंचाई वाले ट्रेकिंग, कैंपिंग और विभिन्न प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में जीवित रहने का प्रशिक्षण शामिल है। इन्होंने तीस्ता नदी में वाटर स्पोर्ट्स और वैकल्पिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रिवर राफ्टिंग और कयाकिंग कोर्स भी आयोजित किए हैं। सिलीगुड़ी के सूर्य सेन पार्क में कृत्रिम स्पोर्ट क्लाइंबिंग वॉल के खुलने के बाद, एचएनएएफ ने स्पोर्ट क्लाइंबिंग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी आयोजित किया। संगठन प्राकृतिक आपदाओं के दौरान बचाव अभियान और राहत कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेता है, जो इसकी सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एचएनएएफ विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम और अभियान चलाता है, जैसे कि पटाखे विरोधी रैलियां, ताकि प्रदूषण मुक्त और शोर-मुक्त वातावरण को बढ़ावा दिया जा सके। एचएनएएफ का प्रकृति के साथ गहरा और बहुआयामी संपर्क है। इसका मुख्य उद्देश्य मानव को प्रकृति के करीब लाना और प्रकृति के प्रति सम्मान और जिम्मेदारी की भावना पैदा करना है।

वैसे तो मैं इस संस्था की एक सदस्या हूँ। इस वर्ष उनके द्वारा आयोजित चतुर्थ तितली शिविर में शामिल होने का मौका मिला। यह शिविर दो दिनों की थी जो दिनांक 09/5/2025 से आरम्भ हुई और जो कालिमपॉन्ग जिला के गोरूबथान ब्लॉक के डालिमतार गाँव में आयोजित की गई थी। हम सब लोगों को मिलाकर लगभग 30 की संख्या में कैम्पर थे जो सिलीगुडी के अलावा पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिला से उपस्थित हुए थे जैसे कोई कोलकाता से तो कोई कुचबिहार, कोई दुर्गापुर,

कोई कृष्णनगर और कोई जलपाईगुडी से थे। उन तीन दिनों में प्रकृति के साथ जुड़े रहने का आनंद ही कुछ और था। मेरी इस शिविर की अनुभूति यह दर्शाती है कि जब हम इस कॉन्क्रीट की शहर से निकलकर प्रकृति के सानिध्य में होते हैं तो शायद उसका अनुभव बयां करना बहुत ही कठिन होता है क्योंकि यह एक अनुभूति है जो सुनकर या देखकर नहीं बल्कि उसके सानिध्य में जाकर ही होता है। इन दो-तीन दिनों में मैंने उसे उपभोग किया। मैं अपनी सुपुत्री के साथ यहाँ आई थी। इस शिविर और एचएनएएफ के प्रमुख कर्णधार श्री अनिमेष बोस के नेतृत्व में सभी कैम्पर ने तितलियों के बारे में बहुत कुछ जाना। हम सभी सिलीगुडी से गनतव्य के लिए रवाना हुए। सभी के पास कैमेरा और बायनोकुलर भी था। हम सभी में कुछ विशेषज्ञ भी थे जिन्होंने तितलियों के बारे में बहुत सारी जानकारियाँ सांझा की। इनमें से एक तितली विशेषज्ञ थे श्री जुधाजीत दासगुप्ता। दिन की रौशनी में हम ट्रेकिंग पर निकल जाते थे और जंगलों में घूमते हुए विभिन्न तितलियों को देखते उनके बारे में जानते और रात को प्रोजेक्टर पर तितलियों के बारे में विशेष कार्यशालाओं के माध्यम से तितलियों के बारे में बहुत कुछ जानकारी पाते थी। इस अवधि के दौरान जिन तितलियों को हमने देखा उनमें से मुख्य थे – पैरिस पीकॉक, रेड हेलेन, चॉकलेट ऐलबैट्रोस, ब्लू टाइगर, येलो ऑरेंज, कॉमन मॉरमन, और भी बहुत सारे। इस शिविर अवधि के दौरान

कई सारे पक्षियों से भी मुलाकात हुई जिन्हें हम शहरों में नहीं देखते। तितली विशेषज्ञ में श्रीमती महुआ सिन्हा, डॉ. तुषार घोषाल ने भी अपने अनुभव हमें सांझा किया। इन विशेषज्ञों के माध्यम से यह जानने को मिला कि तितलियाँ क्यों इतनी रंगीन होती है?, क्यों विभिन्न फूलों पर बैठती हैं, कैसे वे अपना जीवन चक्र चलाते हैं, कैसे वे अपने शत्रुओं को झांसा देकर बच निकलते हैं। सच मानिए तो हम सभी को इस तरह के आयोजन में हिस्सा लेना चाहिए और अपनी भागदौड की जिंदगी से हटकर एक नई दुनिया को एक नए नजरिए से देखना चाहिए। इन सभी शिविरों में जाने का एक फायदा यह होता है कि हमें एक नई ऑक्शीजन उपहार के तौर पर मिलती है। बच्चों को बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

संक्षेप में हिमालयन नेचर एंड एडवेंचर फाउंडेशन (www.hnaf.in) सिलीगुड़ी एक महत्वपूर्ण संगठन है जो प्रकृति, साहसिक खेल और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में व्यापक कार्य कर रहा है, जिसका अंतिम लक्ष्य मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देना है। मैं भविष्य में इस तरह के आयोजन में सक्रिय रूप से हिस्सा लेना चाहुंगी। मेरा यह अनुभव अच्छा है यदि मैं इस शिविर की कुछ

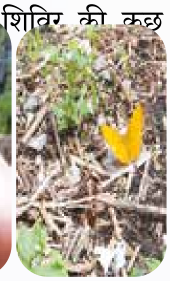

राजभाषा हिंदी की गौरवशाली यात्रा

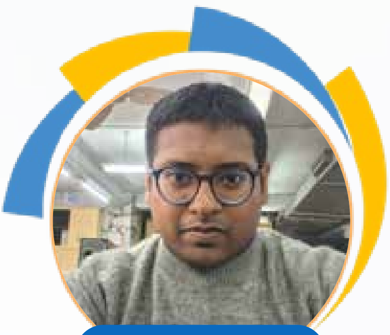

अयोन घोष
कार्यालय सहायक
ऑयल इंडिया लिमिटेड

प्रस्तावना

भाषा किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता की जीवंत वाहक होती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में, एक संपर्क भाषा का होना राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी ने इस भूमिका को बखूबी निभाया है और आज भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के बाद से लेकर आज तक की इसकी यात्रा अनेक गौरवशाली क्षणों से परिपूर्ण रही है। यह यात्रा न केवल हिंदी के विकास की कहानी है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की भाषाई सद्भावना और समन्वय की भी गाथा है।

हिंदी का उद्भव और विकास : हिंदी का उद्भव प्राचीन संस्कृत भाषा से हुआ, जो भारतीय साहित्य और संस्कृति की आधारशिला रही है। अपभ्रंश और प्राकृत जैसी भाषाओं के माध्यम से हिंदी ने धीरे-धीरे अपना स्वरूप ग्रहण किया। मध्यकाल में, खड़ी बोली के रूप में हिंदी ने अपनी पहचान बनाई, और भक्ति काल के कवियों जैसे कबीर, सूरदास, तुलसीदास और मीरा ने इसे लोकप्रिय बनाया। इन कवियों ने हिंदी को जन-जन की भाषा बनाकर इसे साहित्यिक और सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान की।

आधुनिक हिंदी का विकास 19वीं सदी में हुआ, जब भारत में राष्ट्रीय चेतना का उद्भव हो रहा था। भारतेंदु हरिश्चंद्र, जिन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है, ने हिंदी को एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित किया। उनके प्रयासों से हिंदी पत्रकारिता, नाटक और कविता ने नया रूप लिया। इसके बाद, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे साहित्यकारों ने हिंदी को और समृद्ध किया।

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका : हिंदी की गौरवशाली यात्रा की जड़े भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गहराई तक समाई हुई हैं। उस दौर में जब देश विभिन्न रियासतों और भाषाओं में बटा हुआ था, तब एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की गई जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरो सकें। हिंदी इस कसोटी पर खरी उतरी। महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल और अन्य कई स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को 'राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने पर बल दिया। गांधी जी ने हिंदी को जनमानस की भाषा कहा और इसके सरल स्वरूप हिंदुस्तानी का समर्थन किया। भारतेन्दु हरिचंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से हिंदी को जन-जन तक पहुँचाया और राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया। इस प्रकार, स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी राष्ट्रीय अस्मिता और एकता का प्रतीक बन गई।

संवैधानिक स्वीकृति और राजभाषा का दर्जा : भारत की स्वतंत्रता के पश्चात, संविधान सभा के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का चयन था। लंबी और गहन चर्चाओं के बाद, 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए

देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस निर्णय को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में अंकित किया गया। इसी ऐतिहासिक दिन की स्मृति में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है।

यह निर्णय भाषाई सौहार्द का एक उत्कृष्ट उदाहरण था, जहाँ हिंदी को राजभाषा का दर्जा देते हुए अन्य भारतीय भाषाओं के महत्व को भी स्वीकार किया गया और उन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिया गया।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी का विकास : राजभाषा बनने के बाद हिंदी की विकास यात्रा ने नई गति पकड़ी। सरकारी कामकाज में इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न संस्थाओं की स्थापना की गई। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग तथा राजभाषा विभाग जैसे निकायों ने हिंदी के मानकीकरण और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रारंभ में, गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में कुछ चुनौतियाँ और भाषाई विरोध भी देखने को मिले, लेकिन सरकार ने 'त्रिभाषा सूत्र' जैसे समावेशी कदमों के माध्यम से इन चिंताओं का समाधान करने का प्रयास किया। इसका उद्देश्य था कि हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं और अंग्रेजी का भी संतुलन बना रहे।

वैश्विक पटल पर हिंदी : आज हिंदी की गूंज केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक भाषा के रूप में अपनी पहचान बना रही है। विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगों जैसे देशों में बड़ी संख्या में हिंदी भाषी लोग रहते हैं। सिनेमा, संगीत और मीडिया ने हिंदी को दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाया है। बॉलीवुड आज हिंदी का सबसे बड़ा सांस्कृतिक दूत है।

डिजिटल युग और प्रौद्योगिकी ने हिंदी के विकास को नए पंख दिए हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया और मोबाइल तकनीक पर हिंदी की उपस्थिति तेजी से बढ़ी है। आज यूनिकोड और विभिन्न टाइपिंग टूल की उपलब्धता ने हिंदी में काम करना बेहद सुगम बना दिया है।

हिंदी का महत्व और चुनौतियाँ : हिंदी भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, जो देश की लगभग 40% आबादी द्वारा समझी और बोली जाती है। यह न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि भारतीय संस्कृति, साहित्य, और परंपराओं का वाहक भी है। हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड), साहित्य, और मीडिया के माध्यम से हिंदी ने विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। आज हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है।

हालांकि, हिंदी के समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैं। क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति बढ़ता आकर्षण, अंग्रेजी का प्रभुत्व, और तकनीकी क्षेत्र में हिंदी की सीमित उपस्थिति इसके विकास में बाधाएँ हैं। इसके बावजूद. सरकार और विभिन्न संगठनों द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं, जैसे कि हिंदी दिवस (14 सितंबर) का आयोजन, हिंदी में तकनीकी शब्दावली का विकास, और शिक्षा में हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहन।

निष्कर्ष : राजभाषा के रूप में हिंदी की यात्रा वास्तव में गौरवशाली रही है। स्वतंत्रता संग्राम को एक सूत्र में पिरोने से लेकर आज वैश्विक मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने तक, हिंदी ने एक लंबी और सफल यात्रा तय की है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की भावनाओं, संस्कृति और पहचान का प्रतीक है। भविष्य में हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होने वाली है। सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए, राजभाषा हिंदी को और अधिक समृद्ध और सशक्त बनाना हम सभी का साझा कर्तव्य है, ताकि यह ज्ञान-विज्ञान से लेकर विश्व शांति तक हर क्षेत्र में भारत की आवाज बन सके।

"सच्चा राष्ट्रीय साहित्य राष्ट्रभाषा से उत्पन्न होता है।" – वाल्टर चेनिंग।

"हिंदी : आत्मा की आवाज़, कार्यालय की भाषा"

(एक भावनात्मक कथा)

जयश्री बंसल
प्रबंधक (समन्वय)
ब्रिज एण्ड रुफ कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

कहानी का आरंभः एक सुबह की शुरुआत रवि, एक मध्यमवर्गीय परिवार से आया एक युवा अधिकारी, पहली बार सरकारी कार्यालय में नियुक्त हुआ था। उस सुबह वह माँ के हाथों बना गरमागरम नाश्ता खाकर तैयार हुआ। जाते-जाते माँ ने उसके सिर पर स्नेह से हाथ रखते हुए कहा, "ईमानदारी से काम करना, और जहाँ संभव हो, हिंदी में बोलना बेटा। रवि मुस्कराया, लेकिन मन में एक हल्की उलझन थी- "आजकल तो अंग्रेज़ी जरूरी है माँ, यहाँ हिंदी कौन समझेगा?"

कार्यालय में पहली मुलाकात : कार्यालय में पहले ही दिन रवि की मुलाकात एक वरिष्ठ अधिकारी से हुई, जिन्होंने मुस्कराकर कहा, "स्वागत है रवि जी! कार्यभार ग्रहण पत्र हिंदी में भर लीजिए।" यह सुनकर रवि थोड़ी हैरानी में पड़ गया। उसे लगा था कि सब कुछ अंग्रेज़ी में होगा, लेकिन जब उसने दफ़्तर की दीवारों पर नज़र डाली, तो बड़े अक्षरों में लिखा था: "हिंदी: कामकाज की आत्मा।" धीरे-धीरे रवि ने देखा कि वहाँ के लोग आत्मीयता और सहजता से हिंदी में संवाद कर रहे थे- चाहे मीटिंग हो, चाय पर चर्चा हो या नोटशीट तैयार करना। हर बातचीत में एक अपनापन था, कोई औपचारिकता या दिखावा नहीं। वरिष्ठ अधिकारी ने एक दिन मुस्कराते हुए कहा, "रवि जी, इस दफ़्तर में हम केवल काम नहीं करते, हम संवाद भी करते हैं और हमारे संवाद की आत्मा हिंदी है।"

एक पुरानी फ़ाइल में छुपी विरासत

कुछ सप्ताह बाद रवि को एक पुरानी फाइल सौंपी गई, जिस पर लिखा था: हिंदी विभाग की रिपोर्ट-1980-1 फाइल के भीतर उसे एक लेख मिला, जिसका शीर्षक था "हिंदी सिर्फ भाषा नहीं, संस्कार है।" यह लेख उस समय की हिंदी अधिकारी श्रीमती कमला वर्मा द्वारा लिखा गया था। लेख में बताया गया था कि कैसे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जय हिंद", "वंदे मातरम्", "स्वराज" जैसे नारे केवल शब्द नहीं थे, बल्कि आत्मा की पुकार बन गए थे। यह पढ़ते हुए रवि की आंखें नम हो गई। उसने पहली बार हिंदी को केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक जीवित विरासत की तरह महसूस किया।

हिंदी का मानवीय स्पर्श : एक दिन ऑफिस की सहायिका मीना दीदी ने कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया। मीना दीदी ऑफिस की साँसों की तरह थी हर किसी का हाल जानने वाली, हर समस्या का सहज हल सुझाने वाली। वे कभी अध्यापिका बनना चाहती थी, लेकिन ज़िंदगी ने उन्हें यहाँ पहुँचा दिया था, जहाँ वे हर नये अफसर में एक सृजनशीलता की लौ जलाना चाहती थीं।

रवि थोड़े संकोच के साथ बोला, "कॉलेज में लिखा था... पर अब शायद नहीं लिख पाऊँ।"

मीना दीदी मुस्कराईं और बोलीं, "रवि बेटा, कविता कोई मंच की शोभा नहीं होती, ये वो आईना होती है जिसमें हम अपना दिल देख सकते हैं। हिंदी कोई पाठ्यक्रम नहीं, ये तो दिल की जुबान है। जो महसूस करते हो, वही लिखो।"

उस रात रवि ने अपने जज़्बात कागज़ पर उतार दिए। उसने लिखाः

"माँ के आँचल में जो मिठास है,
दादी की कहानी में जो विश्वास है,
ऑफिस की फाइलों में जो सादगी है,
सब कुछ तो हिंदी ही है।
ये भाषा नहीं, वो साँसें हैं,
जिनमें हर पीढ़ी की यादें हैं।
संघर्ष की लौ, सपनों की छाया,
हिंदी में बसती है अपनी माया।
जब भी मन उलझे या भाव रुक जाए,
हिंदी की गोद में सब सुलझ जाए।
यह संवाद नहीं, यह स्पर्श है,
यह संस्कारों की अनकही परंपराओं का अर्थ है।
शब्दों से आगे जो भाव पिघलते हैं,
वो सब हिंदी के आँचल में पलते हैं।"

अगले दिन रवि ने मंच से यह कविता पढ़ी। कमरे में कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया, फिर तालियों की गूंज उठी। यहाँ तक कि वरिष्ठ अधिकारी की आँखों में भी नमी झलक रही थी। उन्होंने रवि से कहा, "आपकी कविता ने याद दिलाया... जब मैंने पहली बार हिंदी में अफसर बनकर भाषण दिया था, तब मेरे पिताजी गर्व से रो पड़े थे। आज वही भाव आपके शब्दों से लौट आया।"

तकनीक और हिंदी का संगम : रवि को अगंला प्रोजेक्ट सौंपा गया- "ऑफिस वेबसाइट का हिंदी संस्करण तैयार करना। उसने सबसे पहली जो पंक्ति टाइप की, वह यही थी जो उसकी माँ कहा करती थीः "सरल भाषा में सरल सेवा।" रवि ने वेबसाइट, ईमेल टेम्पलेट्स, चैटबॉट्स और विभागीय नोटिस हर जगह हिंदी को प्राथमिकता दी। जल्द ही साथियों की प्रतिक्रियाएं आने लगीं- अब समझना आसान हुआ, और "हिंदी में पढ़ना... दिल से जुड़ता है। अब ऑफिस में लोग सिर्फ औपचारिकता के तहत नहीं, बल्कि सम्मान, अपनापन और समझदारी के साथ हिंदी में संवाद करने लगे थे।

कहानी का अंत, या शुरुआत?

कुछ वर्षों बाद रवि खुद राजभाषा प्रभारी बन गया। उसकी टेबल पर आज भी वही कविता फ्रेम में रखी थी, जिसे उसने कभी मंच से पढ़ा था। जब कोई नया अधिकारी कार्यालय में जॉइन करता, तो रवि मुस्कराकर कहता, "यहाँ हिंदी कोई दस्तावेज़ नहीं यह दिल से दिल का पुल है। जव इसमें उतरोगे, तो शब्द नहीं, अपनापन पाओगे।"

उपसंहार

हिंदी केवल एक सरकारी भाषा नहीं है- यह वह अनमोल रिश्ता है जो माँ की गोद से शुरू होकर, दादी की कहानियों में गूंजता है और अब ऑफिस की फाइलों से निकलकर अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुँचता है। यह सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं, संस्कारों की परंपरा है। आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को केवल राजभाषा नहीं, हृदयभाषा बनाएं।

सौरभ मुस्कान
वरिष्ठ प्रबंधक
ब्रिज एण्ड रुफ कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष धातु से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है कहना या बोलना। भाषा केवल ध्वनि नहीं, अपितु विचार, अनुभव और भावनाओं के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है। यह अर्जित संपत्ति है, जिसे अभ्यास और संवाद से सीखा जाता है। जब कोई भाषा "राजभाषा" बनती है, तो वह केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मगौरव की प्रतीक बन जाती है। हिन्दी भारत की आत्मा, संस्कृति और पहचान की जीवंत अभिव्यक्ति है। महात्मा गांधी ने हिन्दी को जन-जन की भाषा मानते हुए इसे राष्ट्रभाषा बनाने पर बल दिया। अनेक आंदोलनों और प्रयासों के फलस्वरूप 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया। आज, जब हम राजभाषा हिन्दी की हीरक जयंती और राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती मना रहे हैं, यह समय है इस ऐतिहासिक यात्रा को गर्व, जागरूकता और नवसंकल्प के साथ आत्मसात करने का।

एक ऐतिहासिक दृष्टिपात:

राजभाषा हिन्दी की सांस्कृतिक एवं संघर्षशील यात्रा:

हिन्दी भाषा का उद्भव प्राचीन आर्य भाषाओं संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश से हुआ है। यह केवल भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, जनचेतना और आत्मगौरव की सजीव अभिव्यक्ति रही है। मध्यकाल में संत कवियों जैसे कबीर, तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई ने हिन्दी को भक्ति और समाज सुधार का माध्यम बनाया। उन्होंने इसे जनमानस की आत्मा में रचा-बसा दिया।

ब्रिटिश काल में हिन्दी ने नवजागरण और राष्ट्र चेतना का स्वरूप ग्रहण किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, महादेवी बर्मा जैसे महान साहित्यकारों ने हिन्दी को सामाजिक बदलाव, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता आंदोलन का सशक्त औजार बना दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिन्दी सम्पर्क और संकल्प दोनों का माध्यम बनी।

ब्रिटिश शासन में अंग्रेजी प्रशासन, न्याय और शिक्षा की भाषा बन गई, जिससे आम जन शासन से कट गए अंग्रेजी भाषा सीमित वर्ग की भाषा बनी, जबकि हिन्दी सहज संवाद की जनभाषा रही। विदेशी भाषा के बर्चस्व के विरुद्ध हिन्दी ने सामाजिक और वैचारिक स्तर पर सशक्त प्रतिरोध खड़ा किया।

महात्मा गांधी हिन्दी को राष्ट्र की आत्मा मानते थे। उन्होंने स्पष्ट कहा, यदि हिन्दी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती, तो राष्ट्र एक नहीं रह सकता। वे हिन्दी को देश की एकता और आत्मनिर्भरता का आधार मानते थे। उनके नेतृत्व में हिन्दी प्रचारिणी सभाएँ स्थापित हुई और दक्षिण भारत सहित पूरे देश में हिन्दी आंदोलन का विस्तार हुआ।

अंग्रेजों ने हिन्दी को दबाने का प्रयास किया, परन्तु हिन्दी जनमानस में जीवित रही। यही कारण था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब संविधान का निर्माण हुआ, तो यह सवाल सामने आया राजभाषा कौन अंग्रेजी या हिन्दी? और तब 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित कर एक ऐतिहासिक निर्णय लिया।

राजभाषा हिन्दी : संविधान सभा का ऐतिहासिक निर्णय स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जब भारत में संविधान निर्माण प्रारंभ हुआ, तब यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण था कि राष्ट्र की राजभाषा क्या होगी। यह निर्णय केवल भाषा का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक पहचान और प्रशासनिक सुलभता से जुड़ा हुआ था। गहन विचार-विमर्श के पश्चात 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत हिन्दी को देवनागरी लिपि में संघ की राजभाषा घोषित किया। इस ऐतिहासिक निर्णय की स्मृति में प्रति वर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है। यह दिन केवल भाषायी गौरव का नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और जनसंवाद की सशक्तता का प्रतीक वन गया है।

वर्ष 2024 हिन्दी की हीरक जयंती (75 वर्ष) और 2025 राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती (50 वर्ष) के रूप में मनाया जा रहा है जो अतीत के मूल्यांकन और भविष्य के नवसंकल्प का अवसर है। हिन्दी आज राष्ट्र की अस्मिता और संस्कृति की वाहक बन चुकी है।

हिन्दी की विकासगाथा हीरक जयंती वर्ष में राजभाषा का गौरव : 14 सितंबर 2024 को हिन्दी को भारतीय संविधान की राजभाषा घोषित हुए 75 वर्ष पूर्ण हुए। यह हीरक जयंती केवल भाषायी उपलब्धि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक एकता और प्रशासनिक सरलीकरण का प्रतीक बन गई है। अनुच्छेद 343 के अंतर्गत 1949 में राजभाषा का दर्जा प्राप्त कर हिन्दी ने शासन, शिक्षा, तकनीक और जनसंचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की।

सरकारी योजनाएँ, दस्तावेज और अधिसूचनाएँ हिन्दी में उपलब्ध होने से शासन जनता के निकट पहुँचा। शिक्षा व प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम ने ग्रामीण बुढाओं के लिए समान अबसर सृजित किए। डिजिटल युग में मोवाइल ऐप्स, पोर्टल्स और एआई टूल्स में हिन्दी की सहभागिता ने तकनीक को जनसुलभ बनाया।

हिन्दी अब केवल भाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय भावना, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक चेतना की बाहक बन चुकी है। यह हीरक यात्रा राष्ट्र निर्माण की अद्वितीय गाथा है।

राजभाषा हिन्दी की 75 वर्षों की यह गौरवपूर्ण यात्रा केवल अतीत का उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा का संकेत है। इस अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम हिन्दी को नवीन तकनीकों में समृद्ध करें, न्यायपालिका, चिकित्सा, उद्यमिता और रोजगार के क्षेत्र में इसका प्रयोग बढ़ाएँ।

राजभाषा नीति का प्रभावी क्रियान्वयन, हिन्दी साहित्य, रंगमंच, सिनेमा और पत्रकारिता को रचनात्मक समर्थन देना आज की आवश्यकता है। द्विभाषी सूत्र के माध्यम से हिन्दी ने प्रादेशिक भाषाओं और अंग्रेज़ी के बीच सेतु का कार्य किया है। आज मंत्रालयों, उपक्रमों, बैंकों में हिन्दी में कार्यवृत्त, प्रतिवेदन और सूचना तैयार की जा रही है। हिन्दी टूल्स और ऐप्स ने कार्यप्रणाली को सरल और सशक्त बनाया है।

राजभाषा विभाग : 50 वर्षों की सशक्त यात्रा : भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना वर्ष 1975 में हुई थी। इसका उद्देश्य था संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक वर्णित राजभाषा प्रावधानों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करना तथा प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को व्यावहारिक रूप से बढ़ाना राजभाषा नीति के अनुरूप संघ सरकार के कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करना, नीति निर्माण में सहयोग देना, समीक्षा करना तथा आवश्यक प्रशिक्षण व संसाधन उपलब्ध कराना।

डिजिटल युग में हिन्दी : नवचेतना की राह

आज हिन्दी तकनीक से हाथ मिलाकर नए युग की ओर अग्रसर है। सरकारी पोर्टलों से लेकर मोबाइल ऐप्स तक, हिन्दी अब डिजिटल भारत की मुख्यधारा भाषा बन चुकी है।

ई-ऑफिस, डिजिटल फाइलिंग, हिन्दी ई-मेल, ऑनलाइन प्रशिक्षण आदि के माध्यम से हिन्दी के प्रयोग को व्यवहारिक बनाया गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI),

कंठस्थ, मशीन ट्रांसलेशन, वॉयस असिस्टेंट जैसी तकनीकों में हिन्दी की उपस्थिति दिन-प्रतिदिन सशक्त हो रही है। सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग, पॉडकास्ट और यूट्यूब चैनलों के माध्यम से युवा वर्ग हिन्दी से जुड़ रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर हिन्दी की गूंज : आज विश्व के अनेक देशों में हिन्दी न केवल बोली जा रही है, बल्कि शैक्षणिक स्तर पर पढ़ाई भी जा रही है। विच हिन्दी सम्मेलन, विध हिन्दी दिवस, तथा भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से हिन्दी को वैश्विक स्तर पर पहचान मिल रही है। फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, नेपाल, अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा जैसे देशों में करोड़ों हिन्दीभाषी नागरिक रहते हैं। हिन्दी अब "लोकल टू ग्लोबल" की राह पर आगे बढ़ चुकी है।

राजभाषा के क्षेत्र में उपक्रमों और नाराकास की भूमिका: सार्वजनिक उपक्रमों, मंत्रालयों, कार्यालयों, बैंकों और निगमों ने राजभाषा हिन्दी के संवर्धन में अत्यंत सक्रिय भूमिका निभाई है। इन संस्थानों की राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ नियमित समीक्षा और सुधार के माध्यम से हिन्दी को जन-जन की कार्यभाषा बना रही हैं। नराकास (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति) ने विभिन्न नगरों में केन्द्र सरकार के कार्यालयों को एक मंच पर लाकर राजभाषा की क्रियान्वयन प्रक्रिया को संगठित, सुव्यवस्थित और सशक्त बनाया है।

राजभाषा हिन्दी की यह हीरक यात्रा गौरव और प्रेरणा का स्रोत है। अब समय है कि हिन्दी को केवल राजभाषा न मानकर राष्ट्र के आत्मबल के रूप में स्वीकार किया जाएँ। हमें मिलकर यह संकल्प लेना चाहिए।

हिंदी : एक सजीव सपना

अमित कुमार साव गोंड
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड

हिंदी, मेरी मातृभाषा, सजीव एक सपना,
सदियों से बहे जो, प्रेम का यह गहना।
गंगा की धारा में, बहे जो शुद्धता,
हिंदी की गूंज में, छिपी है संस्कृति की कथा।

कभी वेदों में गूंजती, कभी गीतों में बहे,
कवियों की कलम से, सदा नई राहें बने।
सूरदास की भक्ति में, तुलसी की रामकथा,
हिंदी ने दी हमें, जीवन की अनमोल कथा।

शिक्षा का माध्यम, संवाद का आधार,
हिंदी ने जोड़ा हमें, हर दिल के पास प्यार।
संस्कृति की पहचान, एकता का प्रतीक,
हिंदी की महिमा में, छिपा है हर एक गीत।

आज भी जब सुनता, हिंदी का मधुर स्वर,
दिल में उमड़ता है, एक नया सा असर।
गौरवशाली यात्रा, हिंदी की अनंत गाथा,
हर एक शब्द में बसी, हमारी पहचान की बात।

आओ मिलकर करें, हिंदी का सम्मान,
इसकी मिठास में बसी, हर एक इंसान की जान।
राजभाषा हिंदी, तुम हो गर्व का प्रतीक,
तुम्हारे बिना अधूरा, हर एक सपना, हर एक गीत।

हिंदी के क्षेत्र में रोजगार के अवसर : एक विस्तृत विवरण

प्रियांशु प्रकाश
उप प्रबंधक (राजभाषा)
कोल इंडिया लि. (मु.), कोलकाता

1. भूमिका

हिंदी भाषा, भारत की आत्मा और पहचान है। यह न केवल देश में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, बल्कि भारत की 22 आधिकारिक भाषाओं में से एक भी है। संसदीय कामकाज से लेकर न्यायिक और सरकारी संस्थानों तक, यह भाषा आधिकारिक संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। भारत की सीमाओं से परे भी हिंदी का महत्व बढ़ता जा रहा है। वैश्विक स्तर पर, चीनी भाषा के बाद हिंदी दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसके लगभग 500 मिलियन वक्ता और लगभग 900 मिलियन लोग इसे समझने की क्षमता रखते हैं। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, हिंदी लगभग 137 देशों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है और इसके अनुमानित एक बिलियन वक्ता हैं। भारतीय अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए कई विदेशी संस्थानों ने भी अपने यहां हिंदी सीखने के केंद्र स्थापित किए हैं, जिससे इस भाषा का वैश्विक महत्व और भी बढ़ गया है। यहां तक कि अमेरिका के कुछ स्कूलों ने भी विदेशी भाषा के रूप में हिंदी को अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया है, जो इसे एक वैश्विक पहचान दिलाता है।

वैश्वीकरण और निजीकरण के वर्तमान युग में, विभिन्न देशों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध तेजी से बढ़ रहे हैं। इस बढ़ते हुए अंतर्संबंध ने भाषाओं को सीखने की आवश्यकता को भी बढ़ाया है, और हिंदी इस परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में उभरी है। आज हिंदी भाषा का बढ़ता हुआ चलन और इसकी वैश्विक स्वीकृति ने रोजगार के अनेक नए द्वार खोल दिए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में इसकी बढ़ती हुई प्रयोजनीयता ने हिंदी को एक नए दृष्टिकोण से देखने पर मजबूर कर दिया है।

यह आलेख हिंदी भाषा के क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न रोजगार अवसरों का विवरण प्रस्तुत करती है। इस विश्लेषण में पारंपरिक करियर विकल्पों के साथ-साथ उन उभरते हुए क्षेत्रों को भी शामिल किया गया है जहां हिंदी भाषा की प्रवीणता महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक करियर विकल्प के लिए आवश्यक कौशल और योग्यताओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई है।

"समालोचना ही साहित्य मार्ग की सुंदर सड़क है।" – म. म. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी।

2. हिंदी भाषा में पारंपरिक करियर विकल्प

• **शिक्षण:**

- **सरकारी और निजी स्कूलों में हिंदी शिक्षक:** शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी भाषा के जानकारों के लिए हमेशा से अवसर मौजूद रहे हैं। अंग्रेजी के बढ़ते हुए महत्व के बावजूद, शुद्ध और स्पष्ट हिंदी बोलने, समझने और लिखने वाले शिक्षकों की मांग आज भी बनी हुई है। सरकारी और निजी स्कूलों में हिंदी अध्यापकों की आवश्यकता लगातार महसूस की जाती है। इसके लिए उम्मीदवारों को स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत बी.एड. की डिग्री और विभिन्न शिक्षक पात्रता परीक्षाओं जैसे एच-टेट, सी-टेट आदि को उत्तीर्ण करना होता है। अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के कारण, यह संभावना है कि हिंदी भाषा के शिक्षकों की मांग भविष्य में और बढ़ेगी, क्योंकि शिक्षा प्रणाली में भाषाई संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया जा रहा है।

- **कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर और व्याख्याता:** उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा के विद्वानों के लिए प्रतिष्ठित करियर विकल्प उपलब्ध हैं। स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद, उम्मीदवार राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) उत्तीर्ण करके कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में व्याख्याता के पद के लिए पात्र हो सकते हैं। जो छात्र शोध कार्य (पीएचडी) करना चाहते हैं, उनके लिए जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) के माध्यम से छात्रवृत्ति प्राप्त करने का भी प्रावधान है। कॉलेज स्तर पर अध्यापन करने के इच्छुक छात्रों को एमए के बाद एमफिल और पीएचडी जैसी उच्चतर डिग्रियां प्राप्त करना आवश्यक होता है। यह अकादमिक मार्ग हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में गहन ज्ञान और विशेषज्ञता विकसित करने का अवसर प्रदान करता है।

- **कोचिंग संस्थानों में हिंदी प्रशिक्षक:** शिक्षण के प्रति जुनून रखने वाले और हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ रखने वाले व्यक्ति निजी कोचिंग संस्थान भी खोल सकते हैं। यह उन लोगों के लिए एक अच्छा उद्यमिता विकल्प हो सकता है जो छात्रों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करना चाहते हैं या विशिष्ट परीक्षाओं की तैयारी में मदद करना चाहते हैं। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में हिंदी भाषा के ट्यूटर्स और प्रशिक्षकों की मांग बनी रहती है, खासकर उन छात्रों के बीच जो अपनी भाषाई कौशल को सुधारना चाहते हैं या परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करना चाहते हैं।

ऑनलाइन क्लासेस की शुरूआत के बाद अधिकांश संस्थान अपनी कंटेट की व्यापकता में वृद्धि करते हुए उसे विभिन्न भारतीय भाषाओं में अध्येता तक पहुँचा रहे है। जिस कारण हिंदी भाषा के जानकारों की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

- **अनुवाद और दुभाषिया:**

- **सरकारी और निजी संस्थानों में अनुवादक:** वैश्वीकरण के इस दौर में, विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद और सूचना के आदान-प्रदान की आवश्यकता बढ़ गई है, जिससे अनुवादकों और दुभाषियों की मांग में भी वृद्धि हुई है। सरकारी और निजी दोनों प्रकार के संस्थानों में हिंदी अनुवादकों की आवश्यकता होती है। केंद्र और राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों में हिंदी अनुवादकों के पद सृजित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीयकृत बैंकों और अन्य सरकारी संगठनों में राजभाषा अधिकारियों की नियुक्ति भी की जाती है, जो अपने कर्तव्यों के भाग के रूप में अनुवाद कार्य भी करते हैं। हिंदी भाषा की बढ़ती हुई वैश्विक मांग को देखते हुए, यह क्षेत्र उन लोगों के लिए स्थिर और विकासशील करियर अवसर प्रदान करता है जिनके पास भाषाई कौशल और सांस्कृतिक समझ है।

- **स्वतंत्र अनुवादक के रूप में अवसर:** अनुवाद के क्षेत्र में फ्रीलांसिंग भी एक लोकप्रिय विकल्प है। कई व्यक्ति स्वतंत्र रूप से अनुवाद कार्य करके अपनी आजीविका चलाते हैं और अपनी खुद की अनुवाद फर्म भी स्थापित कर सकते हैं। तकनीकी प्रगति ने घर बैठकर भी हिंदी ट्रांसलेटर के तौर पर काम करना संभव बना दिया है। यह उन लोगों के लिए विशेष रूप से आकर्षक हो सकता है जो लचीले काम के घंटे और स्थान की स्वतंत्रता चाहते हैं। फ्रीलांस अनुवादकों की मांग विभिन्न क्षेत्रों में रहती है, जिसमें साहित्य, व्यवसाय, तकनीकी दस्तावेज और मीडिया शामिल हैं।

- **विभिन्न क्षेत्रों में दुभाषिया की भूमिका:** दुभाषिया मौखिक रूप से एक भाषा को दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं। उनकी आवश्यकता राजनयिक मिशनों, संयुक्त राष्ट्र जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और विदेशी छात्रों के साथ काम करने के दौरान होती है। पर्यटन से जुड़े संस्थानों और बड़े होटलों में भी दुभाषियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जहां वे विभिन्न भाषाएं बोलने वाले लोगों के बीच संवाद स्थापित करने में मदद करते हैं। दुभाषियों को तत्काल और सटीक भाषांतरण करने की क्षमता की आवश्यकता होती है, और यह कौशल विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और बहुभाषी वातावरणों में अत्यंत मूल्यवान है।

3. मीडिया और संचार में अवसर

- **पत्रकारिता:**

- **प्रिंट मीडिया (समाचार पत्र, पत्रिकाएँ):** पत्रकारिता का क्षेत्र हिंदी भाषा के स्नातकों के लिए एक आकर्षक करियर विकल्प रहा है। आज भी हिंदी के समाचार पत्र और पत्रिकाएँ देश में व्यापक रूप से पढ़ी जाती हैं, और सबसे ज़्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में दो-तिहाई से अधिक हिंदी भाषा के हैं। यह इंगित करता है कि प्रिंट मीडिया में हिंदी पत्रकारों के लिए पर्याप्त अवसर मौजूद हैं। हिंदी साहित्य में डिग्री प्राप्त करने के बाद इस क्षेत्र में एक सफल करियर बनाया जा सकता है, जिसमें एंकर, न्यूज़ एडिटर, न्यूज़ राइटर और रिपोर्टर जैसे पद शामिल हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (टीवी, रेडियो): इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी हिंदी की मजबूत उपस्थिति है। समाचार चैनलों और अखबारों के अलावा भी अनेक हिंदी चैनल और पत्रिकाएँ हैं जो योग्य उम्मीदवारों का स्वागत करती हैं। मीडिया में करियर बनाने के लिए मास कम्युनिकेशन या जर्नलिज्म में डिग्री या डिप्लोमा कोर्स करना आवश्यक है। रेडियो पर प्रसारित होने वाले अधिकांश कार्यक्रम हिंदी में होते हैं, जिससे रेडियो जॉकी और समाचार वाचकों के लिए भी रोजगार की अच्छी संभावनाएं हैं।

- **डिजिटल मीडिया (ऑनलाइन पोर्टल):** इंटरनेट के विस्तार के साथ, डिजिटल मीडिया में हिंदी का महत्व भी बढ़ गया है। कई ऑनलाइन हिंदी वेबसाइटों के लिए घर बैठकर भी लेखन कार्य किया जा सकता है। विभिन्न हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के ऑनलाइन पोर्टल और ब्लॉग भी अब रोजगार के अवसर प्रदान कर रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर भी हिंदी का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। यह डिजिटल परिदृश्य हिंदी कंटेंट क्रिएटर्स और पत्रकारों के लिए नए अवसर खोल रहा है।

- **न्यूज एंकर, रिपोर्टर, संपादक आदि की भूमिकाएँ:** हिंदी पत्रकारिता में विशेषज्ञता हासिल करने वाले व्यक्ति के लिए इस क्षेत्र में करियर विकास की अच्छी संभावनाएं हैं। इन भूमिकाओं के लिए न केवल भाषा पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए, बल्कि समसामयिक घटनाओं की गहरी समझ और प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता भी आवश्यक है।

- **सामग्री लेखन और संपादन:**

- **विभिन्न ऑनलाइन और ऑफलाइन प्लेटफॉर्म के लिए सोशल मीडिया कंटेंट, ब्लॉग लेखन, मार्केटिंग कॉपी सामग्री का निर्माण:** आज के डिजिटल युग में कंटेंट राइटर और कॉपी एडिटर की मांग बहुत अधिक है। विभिन्न ऑनलाइन और ऑफलाइन प्लेटफॉर्म के लिए आकर्षक और त्रुटि रहित हिंदी सामग्री तैयार करने की आवश्यकता लगातार बनी रहती है। इसमें सोशल मीडिया कंटेंट, मार्केटिंग कॉपी और वेबसाइटों और पोर्टलों के लिए ब्लॉग लेखन जैसे कार्य शामिल हैं। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण, हिंदी में प्रभावी सोशल मीडिया कंटेंट बनाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, ब्लॉग लेखन और मार्केटिंग कॉपी भी महत्वपूर्ण हैं, जिनके माध्यम से विभिन्न उत्पादों और सेवाओं का प्रचार किया जाता है। सोशल मीडिया के माध्यम से अपने लेखन के द्वारा भी पैसा कमाया जा सकता है।

पुस्तकों और पत्रिकाओं का संपादन: प्रकाशन उद्योग में भी हिंदी भाषा के जानकारों की आवश्यकता होती है। विभिन्न प्रकाशनों में पाठ्यपुस्तकों, उपन्यासों, नाटकों और कविताओं जैसी सामग्री को संपादित करने और त्रुटि मुक्त बनाने के लिए कुशल संपादकों की जरूरत होती है। प्रत्येक प्रकाशन को व्याकरण संबंधी सटीकता और पर्याप्त सामग्री सुनिश्चित करने के लिए लेखकों और संपादकों की आवश्यकता होती है।

- **भाषण लेखन:**

- **राजनीतिक नेताओं, मंत्रियों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के लिए भाषण लेखन:** आज के समय में अंग्रेजी में भाषण लिखने वाले तो बहुत हैं, लेकिन हिंदी में प्रभावी भाषण लिखने वालों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। इसलिए, हिंदी में भाषण लेखकों की मांग बढ़ रही है। बड़े-बड़े नेताओं, मंत्रालयों और मंत्री कार्यालयों में भी भाषण लेखन के लिए आवेदन किया जा सकता है। आजकल राजनेता भी अपने लिए भाषण लेखकों की नियुक्ति करते हैं।
- **सरकारी और निजी क्षेत्रों में अवसर:** भाषण लेखन का कार्य केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सरकारी और निजी क्षेत्रों में भी इसकी मांग है। विज्ञापन एजेंसियों और कॉर्पोरेट जगत में भी ऐसे पेशेवरों की आवश्यकता होती है जो प्रभावी हिंदी भाषण लिख सकें।
- **रेडियो जॉकी और समाचार वाचक:** रेडियो जॉकी के क्षेत्र में भी कई प्रतिभाशाली व्यक्ति हिंदी भाषा के माध्यम से नाम और पैसा कमा रहे हैं। यदि आपकी भाषा पर अच्छी पकड़ है और आपकी आवाज आकर्षक है, तो यह आपके लिए एक अच्छा करियर विकल्प हो सकता है। समाचार वाचन भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है जिसके लिए संयमित और प्रभावशाली आवाज में समाचार पढ़ने की आवश्यकता होती है। रेडियो जॉकी का काम करते हुए छात्र अन्य शिक्षा या कोर्स भी जारी रख सकते हैं।
- **वॉयस ओवर कलाकार :** आज मनोरंजन उद्योग में वॉयस ओवर कलाकारों की मांग बढ़ रही है। फिल्मों, रेडियो स्टेशनों, पॉडकास्ट और विज्ञापनों में इस तरह के नौकरी के अवसर आसानी से मिल सकते हैं।

विदेशी फिल्मों और कार्टूनों को हिंदी में डब करने के लिए भी वॉयस ओवर कलाकारों की आवश्यकता होती है।

4. सरकारी क्षेत्र में रोजगार

- **राजभाषा अधिकारी :** सरकारी क्षेत्र में हिंदी भाषा के जानकारों के लिए एक महत्वपूर्ण पद राजभाषा अधिकारी का है। केंद्रीय संस्थानों और कार्यालयों में इन अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है, जिनका मुख्य कार्य हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना होता है। बैंकों और अन्य सरकारी संस्थानों में भी राजभाषा अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है। इनकी प्रमुख जिम्मेदारी ग्राहकों की सहायता करने के साथ-साथ दैनिक कार्यों में राजभाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करना और आधिकारिक दस्तावेजों का हिंदी में अनुवाद करना है। इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए उम्मीदवारों को हिंदी विषय में परास्नातक होना आवश्यक है और उन्हें विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं को भी उत्तीर्ण करना होता है।
- **हिंदी टाइपिस्ट और स्टेनोग्राफर :** सरकारी विभागों में हिंदी टाइपिस्ट और स्टेनोग्राफर की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है। जिन लोगों की हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ है, वे अपनी टाइपिंग गति बढ़ाकर स्टेनोग्राफर टाइपिस्ट के रूप में भी अच्छा करियर बना सकते हैं। सरकारी क्षेत्र की नौकरियों में हिंदी स्टेनोग्राफर और टाइपिस्ट की मांग कई दशकों से चली आ रही है। हिंदी टाइपिंग सीखने के बाद इन पदों के लिए आवेदन किया जा सकता है। तकनीकी संवर्द्धन के बाद इन पदों की प्रासंगिकता में कमी आई है लेकिन सरकारी कार्यालयों में अब भी नियुक्तियाँ हो रही है।

5. रचनात्मक और साहित्यिक क्षेत्र

उपन्यासकार, लेखक और कवि : रचनात्मक लेखन में रुचि रखने वाले लोगों के लिए उपन्यासकार, लेखक और कवि के रूप में करियर बनाने की भी संभावनाएं हैं। यदि आपके पास कल्पनाशीलता है और आप अपनी कहानियों को प्रभावी ढंग से लिख सकते हैं, तो यह क्षेत्र आपके लिए उपयुक्त हो सकता है। साहित्यिक विधा में निपुणता हासिल करने पर प्रकाशक भी लेखकों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। ऑडियोबुक और ई-पुस्तकों के बढ़ते प्रचलन ने इस क्षेत्र में करियर को एक नया आयाम दिया है।

- **पटकथा लेखन :** फिल्म और टेलीविजन उद्योग में भी हिंदी भाषा के अच्छे ज्ञान वाले लोगों की मांग है। ओटीटी प्लेटफॉर्म के उदय के बाद इस क्षेत्र में करियर की संभावनाएं और भी बढ़ गई हैं। यदि आपकी हिंदी अच्छी है, तो आप प्रोडक्शन हाउस और मीडिया हाउस के लिए स्क्रिप्ट, डायलॉग या गाने भी लिख सकते हैं। हालांकि, एक सफल पटकथा लेखक बनने के लिए हिंदी में बीए करने के बाद स्क्रीन राइटिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन करना फायदेमंद हो सकता है।

6. उभरते हुए करियर विकल्प

तकनीकी लेखन (Technical Writing) हिंदी में: तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी की मांग बढ़ रही है। यूनिकोड के विकास ने हिंदी के उपयोग को तकनीकी प्लेटफॉर्म पर और आसान बना दिया है। हिंदी सॉफ्टवेयर की बढ़ती आवश्यकता के कारण, हिंदी भाषी छात्रों के लिए इस क्षेत्र में अच्छे अवसर मिल रहे हैं। तकनीकी क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा देने के लिए ई-महाशब्दकोश ऐप और ई-सरल हिंदी वाक्य कोश जैसे उपकरण विकसित किए गए हैं। यह इंगित करता है कि तकनीकी लेखन के क्षेत्र में भी हिंदी जानकारों के लिए संभावनाएं मौजूद हैं।

- **वैश्विक बाजार में अनुवाद और स्थानीयकरण (Translation and Localization in the Global Market):** विदेशों में भी हिंदी की मांग

में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वैश्विक स्तर के प्रकाशक अब हिंदी भाषा की पुस्तकों के प्रकाशन को महत्व दे रहे हैं। बहुसंस्कृतिवाद और सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में विभिन्न भाषाओं के साहित्य के अनुवाद की आवश्यकता है। यह इंगित करता है कि वैश्विक बाजार में हिंदी अनुवाद और स्थानीयकरण सेवाओं की मांग बढ़ रही है।

- **वॉयस असिस्टेंट (Voice Assistant) के लिए हिंदी भाषा विशेषज्ञ:** प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, वॉयस असिस्टेंट का उपयोग भी बढ़ रहा है। टेलीसेल्स और ग्राहक सेवा जैसे क्षेत्रों में हिंदी में वॉयस असिस्टेंट की अधिक आवश्यकता है। कॉल सेंटर, ग्राहक सेवा और बीपीओ जैसे उद्योगों में हिंदी भाषी पेशेवरों के लिए नौकरी के अवसर उपलब्ध हैं। यह क्षेत्र उन लोगों के लिए नए अवसर प्रदान करता है जिनके पास अच्छी संवाद कौशल और तकनीकी समझ है।

7. विशिष्ट क्षेत्रों में हिंदी

- **बैंकिंग (ग्राहक सेवा, दस्तावेज़ीकरण) :** बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व लगातार बढ़ रहा है। बैंकों में राजभाषा अधिकारियों की नियुक्ति होती है जो ग्राहकों की सहायता करते हैं और हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देते हैं। वे सभी आधिकारिक दस्तावेजों का हिंदी में अनुवाद भी करते हैं। निजी क्षेत्र के बैंक भी अब उपनगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय लोगों को भर्ती कर रहे हैं और उन्हें स्थानीय भाषा में प्रशिक्षित कर रहे हैं ताकि बैंकिंग सेवाओं का विस्तार किया जा सके।

विज्ञापन और जनसंपर्क : विज्ञापन उद्योग भारत में तेजी से विकसित हो रहा है, और हिंदी विज्ञापन बाजार विशेष रूप से बढ़ रहा है। जनसंपर्क कंपनियां कॉर्पोरेट संचार का प्रबंधन करती हैं, और इस क्षेत्र में हिंदी भाषियों के लिए अच्छे करियर अवसर मौजूद हैं।

- **पर्यटन (गाइड, सामग्री निर्माण) :** पर्यटन उद्योग में भी हिंदी भाषा के जानकारों के लिए अवसर हैं। पर्यटन स्थलों पर हिंदी भाषी टूरिस्ट गाइड और होटलों में दुभाषियों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, पर्यटन संबंधी जानकारी और विभिन्न संस्कृतियों के इतिहास आदि के बारे में हिंदी में सामग्री बनाने की भी आवश्यकता होती है।

9. निष्कर्ष : हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है, जो पारंपरिक भूमिकाओं से लेकर आधुनिक और उभरते हुए क्षेत्रों तक फैली हुई है। नौकरी बाजार में हिंदी का महत्व लगातार बढ़ रहा है, खासकर भारत में, और वैश्विक स्तर पर भी इसकी पहचान मजबूत हो रही है। हिंदी में प्रवीणता रखने वाले व्यक्तियों के लिए इन विभिन्न विकल्पों का पता लगाना और अपनी रुचियों और कौशल के अनुसार एक उपयुक्त करियर का चयन करना संभव है। सरकार और निजी क्षेत्र दोनों ही हिंदी भाषा के जानकारों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान कर रहे हैं, और यह प्रवृत्ति भविष्य में भी जारी रहने की संभावना है।

हिंदी भाषा में करियर विकल्प और आवश्यक योग्यताएँ

करियर विकल्प	आवश्यक योग्यताएँ
हिंदी शिक्षक	हिंदी में स्नातक, बी.एड., शिक्षक पात्रता परीक्षा (जैसे एच-टेट, सी-टेट) उत्तीर्ण
प्रोफेसर/व्याख्यात (कॉलेज/विश्वविद्यालय)	हिंदी में स्नातकोत्तर, नेट/जेआरएफ, एमफिल/पीएचडी (वांछनीय)
अनुवादक/दुभाषिया	हिंदी और किसी अन्य भाषा पर मजबूत पकड़, अनुवाद में डिप्लोमा/ सर्टिफिकेट (वांछनीय)
पत्रकार (प्रिंट/इलेक्ट्रॉनिक/डिजिटल)	पत्रकारिता या मास कम्युनिकेशन में डिग्री/डिप्लोमा, हिंदी में उत्कृष्ट लेखन और बोलने की क्षमता, समसामयिक घटनाओं की जानकारी
कंटेंट राइटर/एडिटर	हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़, रचनात्मक लेखन कौशल, विभिन्न विषयों की जानकारी
भाषण लेखक	हिंदी भाषा पर उत्कृष्ट पकड़, प्रभावी लेखन शैली, राजनीतिक और सामाजिक विषयों की समझ (वांछनीय)
रेडियो जॉकी/समाचार वाचक	हिंदी में अच्छी संवाद क्षमता, आकर्षक आवाज, कार्यक्रम की विषयवस्तु की जानकारी
वॉयस ओवर कलाकार	अच्छी आवाज, स्पष्ट उच्चारण, विभिन्न प्रकार के पात्रों के लिए आवाज बदलने की क्षमता
राजभाषा अधिकारी	हिंदी में परास्नातक, प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण
हिंदी टाइपिस्ट/स्टेनोग्राफर	हिंदी टाइपिंग का ज्ञान, अच्छी टाइपिंग गति
उपन्यासकार/लेखक/कवि	रचनात्मक लेखन कौशल, साहित्यिक रुचि
पटकथा लेखक	हिंदी में अच्छी पकड़, पटकथा लेखन का ज्ञान/कोर्स (वांछनीय)
तकनीकी लेखक (हिंदी)	हिंदी भाषा और तकनीकी विषय का ज्ञान
ऑनलाइन सामग्री निर्माता/प्रबंधक	हिंदी में उत्कृष्ट लेखन कौशल, डिजिटल मीडिया की समझ
वॉयस असिस्टेंट (हिंदी विशेषज्ञ)	हिंदी भाषा की अच्छी समझ, संवाद कौशल

दुर्गापूजा और हिन्दी पखवाड़ा संस्कृति और भाषा का अद्भुत संगम

अतनु चट्टोपाध्याय
प्रबन्धक-राजभाषा
भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

सितंबर का महीना कोलकाता के लिए सिर्फ एक मौसम का बदलाव नहीं, बल्कि एक भावनाओं का महापर्व लेकर आता है। बरसात के बाद आसमान में छिटपुट बादल और हवा में घुली नमी, पंडाल निर्माण की खटखटाहट, कलाकारों के ब्रश से उभरती माँ दुर्गा की दिव्य आकृति - ये सब मिलकर एक ऐसे उत्सव की प्रस्तावना लिखते हैं जिसे पूरी दुनिया में अपनी भव्यता और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए जाना जाता है- दुर्गापूजा। यह न केवल सम्पूर्ण बंगाल, बल्कि भारत की सांस्कृतिक राजधानी कोलकाता का सबसे बड़ा उत्सव है, जिसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर का दर्जा प्रदान किया है।

दुर्गापूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि शक्ति, एकता और सामूहिकता का प्रतीक है। यहाँ हर व्यक्ति, चाहे उसका धर्म, भाषा या पृष्ठभूमि कुछ भी हो, इस पर्व का हिस्सा बन जाता है। मूर्ति-निर्माण से लेकर पंडाल सज्जा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों से लेकर भोग वितरण तक - हर कार्य सामूहिक सहभागिता और समर्पण की मिसाल है। दिन रात सभी धर्म के लोग इस महापर्व में शामिल होते हैं, उत्सव मनाते हैं।

दुर्गापूजा के कुछ दिन पूर्व ही हमारे कार्यालय में मनाया जाता है हिन्दी पखवाड़ा - एक ऐसा अवसर, जो हमें हमारी राजभाषा के महत्व की याद दिलाता है और कार्यक्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करता है। जिस तरह दुर्गापूजा में हम माँ दुर्गा की शक्ति से प्रेरणा लेकर बुराई पर अच्छाई की विजय का उत्सव मनाते हैं, उसी प्रकार हिन्दी पखवाड़ा हमें हमारी भाषाई पहचान को संजोने, संरक्षित करने और निखारने का अवसर प्रदान करता है। कोलकाता अंचल कार्यालय सहित हमारे सभी कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा एक उत्सव की तरह मनाया जाता है, जिसमें सभी कर्मचारी उत्साहपूर्वक भाग लेकर भाषा और संस्कृति के इस अद्भुत संगम को जीवंत करते हैं।

दुर्गापूजा एक सार्वजनीन उत्सव है, जिसमें सभी धर्म, भाषा और जाति के लोग एक साथ घुल-मिल जाते हैं। ठीक उसी तरह, हिन्दी पखवाड़े में भी सामूहिक भागीदारी सुनिश्चित की जाती है और सभी कर्मचारी उत्साहपूर्वक इसमें भाग लेते हैं। दुर्गापूजा जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संगम है, वहीं हिन्दी पखवाड़ा तकनीक और भाषा के अद्भुत मेल का उदाहरण प्रस्तुत करता है। दुर्गापूजा में प्रत्येक पंडाल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की छटा बिखरती है, तो हिन्दी पखवाड़े में साहित्यिक एवं भाषाई रचनात्मकता के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की विविधता देखने को मिलती है। दुर्गापूजा में जहाँ लोग उल्लास से झूम उठते हैं, वहीं हिन्दी पखवाड़े में पुरस्कार प्राप्त कर प्रतिभागीगण आनंद और गर्व का अनुभव करते हैं।

जब कोलकाता की गलियाँ माँ दुर्गा की प्रतिमाओं और पंडालों से सज रही होती हैं, तब हमारे कार्यालय के सभागार और दीवारें हिन्दी पखवाड़े के पोस्टरों, निबंधों, कविताओं और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं की ऊर्जा से सराबोर होते हैं। दोनों ही जगह एक ही भावना झलकती है - हम साथ हैं, हम अपनी जड़ों से जुड़े हैं।

दुर्गापूजा हमें सिखाती है कि शक्ति तभी सार्थक है जब वह सबके कल्याण के लिए प्रयुक्त हो। हिन्दी पखवाड़ा हमें सिखाता है कि भाषा तभी जीवंत रहती है जब हम उसे अपने दैनिक जीवन और कार्य में अपनाते हैं। इस वर्ष, जब हम माँ दुर्गा की आराधना और विजयादशमी का उल्लास मनाएँ, तो साथ ही हिन्दी पखवाड़े के मंच पर भी अपनी रचनात्मकता, ज्ञान और भाषा-प्रेम का प्रदर्शन करें।

आइए, इस सितंबर हम दुर्गापूजा और हिन्दी पखवाड़े को एक ही सूत्र में पिरोकर मनाएँ—जहाँ आस्था और भाषा, परंपरा और आधुनिकता, संस्कृति और कार्य - सभी का संगम हो। इस तरह हम न केवल त्योहार और उत्सव मनाएँगे, बल्कि अपने भीतर की शक्ति और अपनी मातृभाषा तथा राजभाषा के प्रति गर्व को भी जागृत करेंगे।

राजभाषा हिन्दी का गौरवशाली यात्रा

जुथिका दास
तकनीकी सहायक-II
भारतीय खाद्य निगम

संस्कृत से जन्मी है हिन्दी,
शुद्धता का प्रतीक है हिन्दी।
लेखन और वाणी दोनो को,
गौरान्वित करवाती हिन्दी।
उच्च संस्कार, वियिता है हिन्दी,
सतमार्ग पर ले जाती हिन्दी।
ज्ञान और व्याकरण की नदियाँ,
मिलकर सागर सोत्र बनाती हिन्दी।
हमारी संस्कृति की पहचान है हिन्दी,
आदर और मान है हिन्दी।
हमारे देश की गौरव भाषा,
एक उत्कृष्ट अहसास है हिन्दी॥

हिंदी का अर्थ है "हिन्द की भाषा", अर्थात् भारत की भाषा. हिंदी, जिसको "हिन्द की भाषा" कहा जाता है, भारत की एक प्रमुख भाषा है, जिसे भारत में सबसे अधिक लोग बोलते और समझते हैं।हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। आधुनिक मानक हिंदी में संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी–फारसी शब्द कम हैं।

हिन्दी दीर्घकाल से अखंड भारत में जन–जन के पारस्परिक सम्पर्क का भाषा रही है। अनेक संत कवियों ने हिन्दी में साहित्य रचना की और लोगों का मार्गदर्शन किया। केवल उत्तरी भारत की नहीं, बल्कि दक्षिण भारत की आचार्यो ने भी इसी भाषा के माध्यम से ही अपना अपना मतों का प्रचार किया था।अहिन्दी भाषी राज्यों के भक्त–सन्त कवियों ने हिन्दी को ही अपने धर्म-प्रचार और साहित्य का माध्यम बनाया था।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार, भावनाएं, और ज्ञान को बोलकर, सुनकर, पढ़कर और लिखकर दूसरों के साथ साझा करते हैं। यह एक संचार प्रणाली है जो हमें एक-दूसरे से जुड़ने, बातचीत करने, और दुनिया को समझने में मदद करती है.

- भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक प्रणाली है जो हम एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए उपयोग करते हैं।
- भाषा का उपयोग संस्कृति को व्यक्त करने और समझने के लिए भी किया जाता है।
- भाषा का मुख्य उद्देश्य अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करना और दूसरों की भावनाओं को समझना है।
- हिंदी भाषा के उद्भव और विकास की यात्रा को विद्वानों ने संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के रूप में देखने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार, ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में हिंदी भाषा के विकास की कहानी आरंभ होती है। हिंदी की

"हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है।" - ग्रियर्सन।

लिपि देवनागरी है। ग्यारहवीं सदी से अपनी यात्रा आरंभ कर आज हिंदी हमारे सामने जिस रूप में है उससे हम सभी परिचित हैं।

हिंदी शब्द के तीन प्रमुख अर्थ

(1) भाषा: यह एक भाषा है जो भारत में बोली जाती है और भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में से एक है। हिंदी भाषा को भारत में व्यापक रूप से बोला और समझा जाता है। यह एक सरल और सुगम भाषा है, जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के बीच संवाद स्थापित करने में मदद करती है।

(2) साहित्य: हिंदी भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें कई प्रसिद्ध लेखक और कवि शामिल हैं, जैसे कि कविता, उपन्यास, नाटक और कहानियाँ। हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति और मूल्यों को दर्शाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(3) संस्कृति: हिंदी भारतीय संस्कृति का भी एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो लोगों के बीच संवाद और सांस्कृतिक मूल्यों को व्यक्त करने में मदद करता है। हिंदी के माध्यम से लोग अपनी संस्कृति और विरासत को दूसरों के साथ साझा करते हैं।

इतिहास : इसे 1000 ईस्वी से भी पहले की अवधि में अपभ्रंश भाषा से विकसित माना जाता है. समय के साथ-साथ, हिंदी ने कई अन्य भाषाओं से शब्दों और प्रभावों को ग्रहण किया, जैसे कि फारसी, अरबी और अंग्रेजी. आज, हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली और समझी जाने वाली भाषाओं में से एक है.

- संस्कृत, जो आर्यों की मूल भाषा थी, से विभिन्न प्राकृत भाषाओं का विकास हुआ, जिनमें से एक अपभ्रंश भाषा थी, जो प्राकृत का अंतिम रूप था, 1000 ईस्वी के आसपास हिंदी का आधार बना.
- आदिकाल (1000 ईस्वी से 1500 ईस्वी तक) में, हिंदी के कई रूप विकसित हुए, जैसे कि डिंगल, पिंगल आदि, मध्यकाल (1500 ईस्वी से 19वीं शताब्दी तक) में ब्रजभाषा, अवधी और खड़ी बोली जैसे विभिन्न हिंदी के रूप विकसित हुए। आधुनिक काल (19वीं शताब्दी से वर्तमान तक) में खड़ी बोली मानक हिंदी के रूप में विकसित हुई, और हिंदी साहित्य ने तेजी से विकास किया।
- हिंदी ने समय के साथ कई अन्य भाषाओं से शब्द और प्रभाव ग्रहण किए, जैसे कि फारसी, अरबी, और अंग्रेजी. हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया, और यह अब भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली और समझी जाने वाली भाषाओं में से एक है।

निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति के मूल,
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटत ना हिय का शुल
(स्वतंत्र प्रतिभा)

गौरवशाली यात्रा

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- हिंदी का विकास प्राचीन भारत में हुआ और यह अनेक क्षेत्रीय भाषाओं का आधार बनी।
- 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रस्तावित किया गया था।
- 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया।

संविधान में मान्यता:

- संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी के संबंध में प्रावधान किए गए हैं।
- हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया और देवनागरी लिपि को इसकी लिपि के रूप में मान्यता दी गई।

राजभाषा के रूप में विकास:

- हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाने से भारत में संचार और एकता को बढ़ावा मिला।
- यह भाषा सरकारी कामकाज, शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है।
- हिंदी के विकास के लिए कई संस्थाएं और संगठन काम कर रहे हैं, जैसे कि राजभाषा विभाग और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति।

हिंदी दिवस:

- हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है, जो हिंदी को राजभाषा घोषित किए जाने की याद दिलाता है।

हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और एकता का प्रतीक है। यह हमें हमारे समृद्ध इतिहास, साहित्य और परंपराओं से जोड़ती है। यह भाषा हमें एकता के सूत्र में बाँधती है।

हिंदी हमारा साहित्य है हम सबके लिए वंदनीय है
हिंदी मेरी महान है,हिन्दवासी की शान है
हिंदी सर्वत्र है अखंड है॥

गौरवशाली यात्रा : स्वतंत्रता पूर्व

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य / संघ राज्य क्षेत्र
18वीं शताब्दी :	भरतपुर राज्य तथा पूर्वी राजस्थान के कई राजवाड़े हिन्दी (ब्रजभाषा) में कार्य कर रहे थे।
1826 :	हिन्दी के पहले समाचारपत्र उदन्त मार्तण्ड का कलकत्ता से प्रकाशन, पण्डित युगलकिशोर शुक्ल द्वारा
1835 :	बिहार में हिन्दी आन्दोलन शुरू हुआ था। इस अनवरत प्रयास के फलस्वरूप सन् 1875 में बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिन्दी प्रतिष्ठित हुई।
1873 :	महेन्द्र भट्टाचार्य द्वारा हिन्दी में पदार्थ विज्ञान की रचना।
1875 :	बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिन्दी प्रतिष्ठित हुई।
जनवरी, 1900 :	सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ। (इण्डियन प्रेस, प्रयाग से)
1905 :	: बाल गंगाधर तिलक ने काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अधिवेशन में देवनागरी को सभी भारतीय भाषाओं की संपर्क भाषा (राष्ट्रलिपि), तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का आह्वान किया।
1918 :	मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में घोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना
1930 का दशक :	हिन्दी टाइपराइटर का विकास (शैलेन्द्र मेहता)
1937 :	हरि गोविन्द गोविल (1899 -1956) द्वारा देवनागरी के लिए एक नए टाइपफेस का आविष्कार

डिजिटल डिटॉक्स : एक कनेक्टेड दुनिया में संतुलन की खोज

रिशिता चौधरी
उप प्रबंधक (वाणिज्यिक)
ब्रिज एण्ड रुफ कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

आज के अति-कनेक्टेड कार्यस्थल में, पेशेवर अक्सर स्वयं को अपने डिजिटल उपकरणों से बंधे हुए पाते हैं, जिससे ना केवल सूचना अतिभार बल्कि कम उत्पादकता और मानसिक थकान भी होती है। स्वयं की भलाई और कार्य की प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए डिजिटल डिटॉक्स की प्रथाओं को लागू करना आवश्यक हो गया है। आधुनिक पेशेवरों को प्रौद्योगिकी के साथ एक स्वस्थ संबंध बनाने में मदद करने के लिए यहां एक व्यापक मार्गदर्शिका दी गई है-

डिजिटल अतिभार को समझना

ईमेल, संदेशों, सूचनाओं और आभासी बैठकों का लगातार प्रवाह, निरंतर आंशिक ध्यान की स्थिति पैदा कर सकता है, जहां हम हमेशा चीजों से जुड़े तो रहते हैं लेकिन कभी भी पूरी तरह से अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते। यह डिजिटल अतिभार कई चीजों को बढ़ावा देता है, जैसे की बढ़ा हुआ तनाव स्तर, संज्ञानात्मक प्रदर्शन में कमी, नींद की खराब गुणवत्ता, भावनात्मक खुशहाली में कमी और व्यक्तिगत संबंधों में तनाव।

व्यावहारिक डिजिटल डिटॉक्स रणनीतियां-

1. संरचित डिवाइस-मुक्त समय

- विशिष्ट घंटों को "टेक-फ्री जोन" के रूप में नामित करें और उनका पालन करें
- प्रत्येक दिन की शुरुआत और अंत स्क्रीन-मुक्त 30 मिनट के साथ करें
- माइंडफुल इटिंग को बढ़ावा देने के लिए डिवाइस-मुक्त भोजन करें
- परिवार के साथ समय बिताते हुए तकनीक एवं टेक डिवाइस से दूरी बनाए रखें

2. कार्यस्थल संगठन

- कार्य करते समय, एक समय में एक ही विंडो खुली रखें
- केंद्रित कार्य अवधि के दौरान वेबसाइट ब्लॉकर का उपयोग करें
- कार्य और व्यक्तिगत उपयोग के लिए अलग अलग प्रोफाइलस् का प्रयोग करें
- दृश्य अव्यवस्था या विसुअल क्लटर को कम करने के लिए अपनी डिजिटल फाइलों को समय-समय पर ठीक से सजाकर रखें, जैसे हम अपनी अलमारी या डेस्क को साफ-सुथरा रखते हैं। इससे आपको काम करने में आसानी होगी।

3. संचार प्रबंधन

- ईमेल जांचने के लिए विशिष्ट समय निर्धारित करें (जैसे, दिन में तीन या चार बार)
- "दो-मिनट का नियम" लागू करें: यदि किसी कार्य को करने में दो मिनट से कम समय लगता है, तो उसे अभी करें
- कुछ घंटों के दौरान "नो-ईमेल" का नियम लागू करें
- अपेक्षाओं को प्रबंधित करने के लिए ऑटो-रेस्पॉन्डर का उपयोग करें। जैसे ईमेल में ऑटो-रिप्लाई का इस्तेमाल करें, जो दूसरों को अपने आप बता दे कि आप कब तक जवाब देंगे। उदाहरण के लिए: जब आप छुट्टी पर हों या किसी महत्वपूर्ण मीटिंग में व्यस्त हों या फिर कोई बड़ा प्रोजेक्ट कर रहे हों

तो आप ऑटो-रिप्लाई सेट कर सकते हैं, जैसे: "धन्यवाद, मैं अभी छुट्टी पर हूं और 20 फ़रवरी को वापस आऊंगा। जरूरी मामलों के लिए कृपया (सहयोगी का नाम) से संपर्क करें।" इससेएस दूसरे लोगों को पता रहेगा कि उन्हें जवाब कब मिलेगा, आपको बार-बार ईमेल चेक करने की चिंता नहीं होगी और काम का बेहतर प्रबंधन हो सकेगा।

4. जागरूक डिवाइस उपयोग

- गैर-आवश्यक या "नॉन इसैन्शल" सूचनाएं बंद करें
- स्क्रीन पर आकर्षण को कम करने के लिए "ग्रेस्केल मोड" का उपयोग करें
- सोते समय कमरे में मोबाइल फोन, लैपटॉप, टैबलेट जैसे डिजिटल उपकरणों को न रखें।
- 20-20-20 नियम का अभ्यास करें: हर 20 मिनट में, 20 फीट दूर की किसी चीज को 20 सेकंड के लिए देखें

डिजिटल डिटॉक्स दिनचर्या बनाना

सुबह की दिनचर्या

- सुबह उठकर सबसे पहले फोन चेक करने के बजाय 10 मिनट के ध्यान को प्राथमिकता दें
- डिजिटल डिवाइस के बजाय पेपर वाली किताब को पढ़ें या जर्नल लिखें
- स्ट्रेचिंग या हल्का व्यायाम करें
- अपने दिन की प्राथमिकताएँ और कार्य पहले से तय करें, ताकि आप डिवाइस पर समय बर्बाद न करें और बेहतर तरीके से अपना समय प्रबंधित कर सकें।

कार्य समय के दौरान

- हर 90 मिनट में नियमित स्क्रीन ब्रेक लें
- ब्रेनस्टॉर्मिंग के लिए पेपर वाली नोटबुक का उपयोग करें
- जब संभव हो तो व्यक्तिगत मीटिंग्स करें
- डेस्क व्यायाम और स्ट्रेचिंग का अभ्यास करें

शाम का आराम

- सोने से 1-2 घंटे पहले स्क्रीन का उपयोग बंद कर दें और ऐसे काम करें जो डिजिटल न हों (पढ़ाई, क्राफ्टिंग, बातचीत)
- तनाव कम करने के लिए कुछ उपाय करें, जैसे ध्यान, गहरी सांस लेना, या साधारण योग, ताकि मानसिक और शारीरिक आराम मिल सके।
- टेक्नोलॉजी के बिना दिन भर की सफलताओं पर विचार करें। अर्थात आप बिना किसी डिजिटल उपकरण के, केवल अपने मन और शांति के साथ दिन भर में जो कुछ भी आपने प्राप्त किया, उस पर विचार करें और उसे सराहें।

डिजिटल डिटॉक्स के लाभ

नियमित डिजिटल डिटॉक्स अभ्यास से धीरे धीरे आप को कई क्षेत्रों में बदलाव का अनुभव होगा जैसे की बेहतर एकाग्रता और रचनात्मकता, बेहतर नींद की गुणवत्ता, बेहतर व्यक्तिगत संबंध, कम चिंता और तनाव, बढ़ी हुई उत्पादकता, बेहतर "काम जीवन संतुलन" या "वर्क लाइफ बैलन्स" और बेहतर भावनात्मक खुशहाली का अनुभव होगा। सोशल मीडिया से भी दूरी बनी रहेगी जिससे मानसिक संतुलन और व्यक्तिगत संतुष्टि भी प्राप्त होगी।

लेकिन हमें एक चीज याद रखनी है की डिजिटल डिटॉक्स का लक्ष्य प्रौद्योगिकी को समाप्त करना नहीं है, बल्कि इसके साथ एक स्वस्थ एवं संतुलित संबंध बनाना है। इन प्रथाओं को लागू करके, हम तनाव कम कर सकते हैं, फोकस को बेहतर बना सकते हैं, बेहतर कार्य-जीवन संतुलन बना सकते हैं, और अपनी समग्र भलाई को बढ़ा सकते हैं।

"मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है।" - मुकुन्दस्वरुप वर्मा।

प्रसन्नता

वरुण कुमार पोद्दार
लेखाकार
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

प्रसन्नता का अर्थ केवल किसी विशेष उपलब्धि या स्थिति तक पहुंचने में नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षण में आनंद और संतोष का अनुभव करने में है। प्रसन्नता गंतव्य या वस्तु नहीं है जिसे प्राप्त किया जा सके, बल्कि यह हमारे अंदर है जिसे जानने और अनुभव करने की आवश्यकता है।

प्रसन्नता को प्राय: बाह्य करकों जैसे – संपत्ति, सफलता और प्रतिष्ठा से जोड़ा जाता है। लोग यह सोचते हैं कि जब हम इन वस्तुओं को प्राप्त कर लेंगे, तभी हमें प्रसन्नता मिलेगी। किंतु यह विचार वास्तविकता से बहुत दूर है। प्रसन्नता बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक स्थिति है। यह हमारे मानसिक और भावनात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, न कि भौतिक उपलब्धियों पर।

बुद्ध, विवेकानंद और महात्मा गांधी जैसे महान विचारकों ने भी प्रसन्नता के आंतरिक श्रोत पर बल दिया है। उन्होंने यह सिखाया कि वास्तविक प्रसन्नता केवल तभी मिल सकती है, जब हम अपने भीतर ही शांति और संतोष प्राप्त करेंगे।

वर्तमान युग में, जहां लोग धन, शक्ति और प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ में लगे हुए हैं, वहां प्रसन्नता की खोज और भी जटिल हो गई है। लोग सोचते हैं कि यदि वे अधिक धन अर्जित करेंगे, अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, तो वह प्रसन्नता को प्राप्त कर सकेंगे। यद्यपि यह मानसिकता उन्हें निरंतर असंतोष और तनाव की स्थिति में धकेलती है।

भारत जैसे विकासशील देश में भी, जहां आर्थिक और सामाजिक समस्याएं मूल रूप से अभी भी विद्यमान है, वहां प्रसन्नता की खोज महत्वपूर्ण हो जाती है। आज जहां लोग आर्थिक सुरक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं, वहीं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे भी एक प्रमुख समस्या के रूप में उभरा है। वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के अनुसार भारत का स्थान प्रसन्नता के स्तर में बहुत पीछे है, जो यह दर्शाता है कि हमें प्रसन्नता को समझने और उसे अपने जीवन में शामिल करने की आवश्यकता है।

मनोविज्ञान में प्रसन्नता को 'सकारात्मक मनोविज्ञान' के दृष्टिकोण से देखा जाता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मार्टिन सेलिगमन ने सकारात्मक मनोविज्ञान के सिद्धांत को प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने बताया कि प्रसन्नता जीवन के तीन महत्वपूर्ण स्तंभों पर आधारित है – आनंद, संलग्नता और अर्थपूर्ण जीवन।

आनंद : जब हम छोटे-छोटे पलों में खुशी पाते हैं।

संलग्नता : जब हम अपने काम और रिश्तों में पूर्ण रूप से शामिल होते हैं।

अर्थपूर्ण जीवन : जब हम अपने जीवन को एक उद्देश्य की ओर दिशा देते हैं।

यदि हम उन तीन तत्वों पर ध्यान दें तो हम प्रसन्नता को एक मार्ग के रूप में अपना सकते हैं और इसे केवल एक लक्ष्य के रूप में देखने से बच सकते हैं।

भारत की प्राचीन परंपराएं, विशेष रूप से योग प्रसन्नता को जीवन का अभिन्न हिस्सा मानती है। पतंजलि योग सूत्र 2.42 'संतोषादनुत्तमसुखलाभ:' अर्थात् संतोष से परम सुख प्राप्त होता है। योग मानसिक शांति और आंतरिक प्रसन्नता

के साधन है। यह हमें बाह्यजगत के तनावों और चिंताओं से ऊपर उठने में मदद करता है तथा हमें यह सिखाता है कि प्रसन्नता आंतरिक विषय है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से भारत ने विश्व में प्रसन्नता और मानसिक शांति की इस परंपरा को प्रसारित किया है।

प्रसन्न और सुखी रहना हमारे प्राकृतिक स्वभाव में है, परंतु हम दु:ख को आकर्षित कर सुख को छोड़ देते हैं। यदि प्रसन्नता किसी बाह्यवस्तु से प्राप्त होती तो हमारा उस वस्तु से लगाव हमेशा एक समान रहता, क्षीण नहीं होता रहता। जैसे कस्तूरी मृग के अंदर होता है परंतु वह अज्ञानवश पूरे वन में भटकता रहता है। ठीक वैसे ही प्रसन्नता हमारे अंदर ही है, परंतु हम इसे भौतिक पदार्थों में ढूंढते रहते हैं।

भारतीय दर्शन में प्रसन्नता को मोक्ष यानि आत्मा की मुक्ति के रूप में देखा जाता है। यह जीवन चक्र से मुक्त होने की स्थिति है, जहां व्यक्ति पूर्ण शांति और आनंद की प्राप्ति करता है। श्रीमद्भागवद गीता के अनुसार जब व्यक्ति फल की अपेक्षा किए बिना कर्म करता है, तब उसे वास्तविक प्रसन्नता मिलती है। यह विचार आधुनिक समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जहां लोग अपने कार्यों के परिणामों को लेकर चिंतित रहते हैं और तनाव को आमंत्रित करते हैं।

प्रसन्नता केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामूहिक और सामाजिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। एक समाज जहां लोग संतुलन और प्रसन्नता के साथ जीवन जीते हैं, वह समाज स्थिर तथा समृद्ध होता है। भारत जैसे देश में जहां आर्थिक और सामाजिक असमानताएं व्याप्त है, वहां प्रसन्नता पर ध्यान केंद्रित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकार, समाज और व्यक्ति सभी को मिलकर प्रसन्नता की दिशा में कार्य करना चाहिए ताकि हर नागरिक मानसिक शांति तथा संतोष का अनुभव कर सके।

भूटान में 'ग्रोस नैशनल हैप्पिनिस' (GNH) को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) से अधिक महत्व दिया जाता है। भूटान ने यह आदर्श प्रस्तुत किया है कि आर्थिक विकास केवल एक साधन है, न कि अंतिम लक्ष्य। इसी प्रकार भारत सहित दूसरे देशों को भी अपने नागरिकों में प्रसन्नता को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रसन्नता बाह्य नहीं बल्कि आंतरिक तत्व है। प्रसन्ता केवल एक लक्ष्य नहीं है जिसे प्राप्त किया जा सके, बल्कि यह एक सतत् यात्रा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपनाना चाहिए। प्रसन्नता को अपने अंदर पहचानना चाहिए। जीवन का प्रत्येक क्षण प्रसन्नता का श्रोत हो सकता है, हमें उसके प्रति समुचित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

'खुशी कोई पहले से बनी-बनाई चीज़ नहीं है।
यह आपके अपने कर्मों से आती है।'
– दलाई लामा

गजानन कुमार दूबे
उप प्रबन्धक (वित्त)
कोल इंडिया लिमिटेड

पहलगाम

निर्मल घाटी मे फिर फैल गया
घनघोर निराशा हर वासी का।

श्वेत रंग के बर्फ़ की चादर
बनी कफ़न देश के वासी का।

धरती के स्वर्ग मे दाग लगा है
निर्दोष रक्त के छिटों का।

शीतल खुशबू मंद रमण जो
दुर्गंध भरा दुष्कर्मो का।

काम किया जो बिना धरम का
वो पूछ रहा था धरम यहाँ।

निर्मम हत्या करने वाले
बोल धरम मे लिखा कहाँ।

कुत्सित कायर हरकत से तुम
बदनाम कर रहे धरम यहाँ।

भारत माँ के माथे का सिंदूर बहा
इस दुष्कर्म की निंदा मे सारा जहाँ।

खत्म कहानी तेरी होगी फिर
खैर नहीं अब तेरे सहकारी का।

पहलगाम मे पहल किया
वह बेहद घृणित हैवानी का।

फिर ऐसे कैसे जाने देते
उस बहे रक्त की बलिदानी का।

माथे का सिंदूर बना तब
प्रबल बारूद जलाने का।

सीमा पार फिर दलन किया
आतंकी के कई ठिकाने का।

घाटी मे खून बहाने वाले
तरसो अब पानी पाने का।

अब से सुधरो भाड़े के आतंकी
चुन अमन चैन से रहने का।

बल दो ईश्वर आहत परिवारों को
इस अपूर्ण हानि को सहने का।

जय हिंद ! जय भारत!

बर्फ सी जिंदगी

राकेश देवगड़े
अनुवादक
कोल इंडिया लिमिटेड

बर्फ समान ये ज़िंदगानी हैं, एक दिन तो पिघल जानी है
तेरी हो या मेरी हो , हम सब की यही तो कहानी हैं ॥

जिंदगी जीने के लिए होती हैं, हम सोचने मे गुजार देते हैं
मालूम होता हैं सब कुछ, मगर करते वो ही नादानी हैं ॥

किसी की यादों में गुज़रेगी, किसी के ख़यालों मे गुज़रेगी
जिंदगी न रुकी हैं, न थमी हैं, जीवन तो बहता पानी हैं ॥

जिंदगी हैं जनाब, उलझेगी नहीं तो, सुलझेगी कैसे ?
सवरने के लिए, निखरने के लिए, ठोकरे तो खानी हैं ॥

उन लम्हों को बुरा न समझो, जो तुम्हें ठोकर देते हैं
उन लम्हों की कदर करो, वो तो उम्मीदों की निशानी हैं ॥

यकीन मानिए, वक्त सबका बदल जाता हैं, एक न एक दिन
समय को भी समय दीजिये, वक्त का मिजाज तो रवानी हैं ॥

ज़िंदगी आसान नहीं होती हैं, हर कदम पे इम्तिहान होता हैं
कभी मुश्किलों भरा सफर, तो कहीं सपने आसमानी हैं ॥

जिंदगी हसते, मुस्कुराते, प्रेम से गुजरे, यहीं ख्वाईश रहे हर दिन
वक्त गुजरता हैं, कब खत्म हो जाए, जान भी एक दिन गवानी हैं ॥

हालत तो सुधर जाते है, कुछ लोग दिल से उतर जाते हैं
इसी बहाने से मगर, रिश्तों की जान पहचान, हो जानी हैं ॥

जिंदगी दुबारा वापस नहीं मिलती, ये व्यर्थ बर्बाद हो न जाये कहीं
प्रेम से इसे गुजारो, इसके जैसा न कोई, इसका न कोई सानी है ॥

बात गहरी हैं मगर, इसे समझना सबके बस की बात नहीं
मीरा तो दीवानी है, उसके लिए तो जहर भी पानी हैं ॥

हंस के जियो तो गीत ये ज़िंदगानी है
दिन ये खूबसूरत हैं, रातें भी सुहानी है ॥

भाषा को लेकर विदेशी लोगों का अनुकरण न किया जाय। - भीमसेन शर्मा

शैली साव
हिंदी सहायक
श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता

आँगन के हिस्सेदार

एक आँगन था हमारे घर के भीतर जिसके भीतर थी छः माँओ की ममता
जँहा नन्हें पाओ से चलने वाला हर कोई था उनका बच्चा

ज़िन्दगी की कश्म-ओ-कश की धूप हम पर वहाँ कभी पड़ी नहीं थी।
अभी ज़िन्दगी की समझदारियों की समझ हम पर चढ़ी नहीं थी।

बड़े हो रहे थे हम वहां भाई बहन चाचा और 8 बुआओं के साथ
उठते थे हम वहां हर सुबह दादा दादी की दुआओं के साथ।

एक थाली से ना जाने कितने निवाले बट जाया करते थे
हम किसी को फ़साने के लिए एक जुट हो जाया करते थे।

शैतानी बदमाशी और परेशानियों को माँयें अपने आँचल में छुपा लिया करती थी
कभी कभी पापा के ओझल होते ही दो चार थपड़ लगा दिया करती थी।

कहने को आज वह आंगन मेरे घर से सिर्फ 8 रूपए की दुरी पर है
पर
मैं जानती हूँ उन तमाम सालों की कीमत जिन्हें अब खरीदने की मेरी औकात नहीं है
अब उस आँगन के सूखे बर्तन और खालीं बाल्टियों में कोई जज़बात नहीं हैं।

आज भी मैं हर रोज़ उस आँगन को निहारने चली जाया करती हूँ
बचपन के शरारतों को मायूसी में लिपटा पाती हूँ।

अब वहां बचपन के साथी नहीं बस सम्पत्ति के हिस्सेदार रहते है,
जो अपनेपन की रिश्वत देते है।

अब उस खोखले आँगन का वीरान हो जाना ही अच्छा है
अब उस बचपन के सपने का टूट जाना ही अच्छा है
वरना पनपेंगे वहां रिश्तो के ज़हरीले सांप और कड़वाहटों की फसल।

अमन कुमार शाह
वरिष्ठ सहायक (राजभाषा)
बामर लॉरी एण्ड कं. लिमिटेड

चिराग

आजाद परिंदा था मैं तब,
चिंता न कोई फिकर थी जब
हर जगह चाह थी करने को सफर,
आसान-सा लगता था वह डगर
क्या करने से कब क्या होगा,
जो भी होगा अच्छा होगा
संपुर्ण ज्ञान यही था तब
जैसे-जैसे बचपन गुजरा
जीवन का अनुभव उभरा।
क्या करना था, क्या करते थे,
हम कितने नादान थे तब,
युवावस्था में जब किया प्रवेश,
कुछ करने की आस जगी मन में
सब कुछ संभव-सा लगता था,
हर मंजिल अपने पास लगी।
सहसा वह दिन भी पास दिखा,
अबतक हमने क्या सीखा
क्या खोया है, क्या पाया है,
सबकुछ अपने आप दिखा।
जीवन जो बचा हुआ है शेष
अब मान ले उसको ही विशेष,
आने पर अंत समय के
रह जाता है केवल अवशेष,
आजाद परिंदा था मैं तब
चिंता न कोई फिकर थी जब।

कुणाल कुमार
राजभाषा प्रभारी
बीएसएनएल, कोलकाता टेलीफोन्स

हिंदी का परचम

आज समय मिला है तो, आप सबको, एक बात बताता हूँ।
हिंदी को जनमानस की भाषा बनने पर, आभार जताता हूँ॥

वर्तानी हुकूमत की मार इतनी थी, कि भारत भर में फैला आक्रोश था।
चारों ओर प्रतिशोध की ज्वाला, जन-जन में आजाद होने का जोश था॥

स्वतंत्र होने की रणभेरी, चारों ओर से बजने लगी।
भारत माता की शान में, कटने को शीश सजने लगी॥

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, विद्रोह की आग चारों ओर जलने लगे।
वर्तानियों के दांत खट्टे करते, आजाद भारत के सपने पलने लगे॥

आंदोलन चारों ओर पनपा था मगर, बहुभाषी होने पर हम बिखरे थे।
संपर्क भाषा एक हो, इसकी वकालत पर, गांधी जी भी निखरे थे॥

नतीजा ये था कि, हमारा आज एक, संप्रभु अखंड भारत वर्ष हैं।
बहुभाषी होकर भी हमें, एक भारत श्रेष्ठ भारत पर हर्ष है॥

इसलिए तो,
संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को, हिंदी राजभाषा स्वीकार किया।
26 जनवरी 1950 को फिर संविधान में, राजभाषा हिंदी को दर्जा दिया॥

संविधान सभा ने हिंदी को, संघ की भाषा बनाने का प्रावधान किया।
भारत सरकार ने फिर हिंदी को, राजभाषा होने का विधान दिया॥

सरकारी काम काजों में, राजभाषा हिंदी की तूती अब बोलने लगी।
राजभाषा हिंदी भी अपनी आंचल में, सभी भाषा को लेकर डोलने लगी॥

सरकार ने भी राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में, नराकास बनाया।
हिंदी जैसे समुद्र में समाहित हो, वो शब्दसिंधु का आकाश बनाया॥

तकनीकों में भी राजभाषा हिंदी का परचम, लहरा रहा है।
देश क्या विदेशों में भी, हिंदी का समुचित पहरा रहा है॥

पुस्तकें और अभिधान भी अब, हिंदी के शब्दों को जोड़ रही है।
संवाद का बेहतर माध्यम हिंदी, संपर्क की बाधाओं को तोड़ रही है॥

हिंदी हमारी राजभाषा अब, राष्ट्रभाषा बनने को देखो निकल पड़ी है।
बहुभाषी राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाली, हिंदी ही उसकी लड़ी है॥

ये राजभाषा हिंदी की, गौरवशाली यात्रा की अमर कहानी हो।
हम आप तो क्या फिरंगियों की भी, ये कहानी मुंह मुंहजुबानी हो॥

नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है। – गोपाललाल खत्री

श्रीरंग जाधव
वरिष्ठ प्रबंधक (सतर्कता)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,

बेलगाम पहलगाम

अरे सुना क्या पहलगाम पर हमला हुआ,
आतंकियों ने खून का नंगा नाच किया।

धर्म क्या है पूछ कर गोली चलाई,
धर्मनिरपेक्ष सोच की होली जलाई।

मैंने पहले ही कहा था सेकुलर विचार यहां नहीं टिकेंगे,
मौका मिलते ही इस्लामी आतंकी हिंदुओं को मिटाएंगे।

रुक जा दोस्त इतना अधीर मत हो जाना,
कट्टरतावादी लोगों के नफरत भरे प्रचार में यू मत को जाना।

तूने देखा आतंकियों का हमला,
पर हिंदुओं को बचाते हुए शहीद हुए सईद को तू क्यों भूला।

धर्म पूछा धर्म पूछा क्यों चिल्लाते हो,
घायलों को किसने अस्पताल पहुंचाया यह क्यों नहीं सोचते हो।

हां गुस्सा आता है मुझे भी आता है।
फर्क इतना है कि तुम्हें दूसरे धर्म पर आता है और मुझे पाकिस्तान पर आता है।

हिंदू मारे गए हिंदू मारे गए यह रोना बंद करो,
आतंकियों को क्यों और किसने भेजा इस पर विचार करो।

हर धर्म ने समझा है भारत को अपना,
सभी धर्म के लोग देखते हैं यहां एक साथ आगे बढ़ने का सपना।

यही एकता और अखंडता नहीं सहन कर पा रहा है पाकिस्तान,
इसीलिए नफरत फैला कर भारत को बनाना चाहता है कब्रिस्तान।

नफरत से कभी कोई देश आबाद नहीं होता,
अगर होता तो सीरिया के साथ-साथ पाकिस्तान भी आज आबाद होता।

धर्म पूछ कर गोली चलाई होगी पाकिस्तान के आतंकियों ने

लेकिन बिना धर्म पूछे हिंदुओं की मदद की हिंदुस्तानी मुसलमानो ने।
इसीलिए दोस्त नफरत नहीं विचार करो,
धर्म जात जैसी छोटी सोच को दिल से निकाल बाहर करो।

क्या बचपन में कभी दोस्त से पूछी थी उसकी धर्म-जात,
या शिक्षक अध्यापकों से की थी कभी उनके मजहब की बात

या डॉक्टर से पूछते हो इलाज से पहले उसका धर्म,
या कभी जख्मों पर लगाने से पहले सोचते हो की किसने बनाया होगा मरहम।

सभी भारत मां के बच्चे हैं कोई ना यहां पराया है
चलिए सब मिलजुल कर रहेंगे भारत को महान बनाना है।

भारत को महान बनाना है।
भारत को महान बनाना है।

कुनाल वैद्य
प्रबंधक (आंतरिक लेखापरीक्षा)
ब्रिज एण्ड रुफ कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

हिन्दी की गौरवगाथा

अनादि काल से बहती धारा, संस्कृति की अमर कहानी,
संस्कृत की लाड़ली बेटी, जनभाषाओं की महारानी।

शौर्य-भूमि के वीरों की वाणी, मीरा की प्रेम पुकार,
सूर की भक्ति, तुलसी का रामचरित, जन-जन का आधार।

खड़ीबोली का लेकर रूप, अवधी, ब्रज का संबल साथ,
पाली, प्राकृत से सींची गई, बढ़ती गई हर एक घात।

उन्नीसवीं सदी में नव-जागरण, भारतेंदु का वरदान,
द्विवेदी युग में परिमार्जित हो, पाया अनुपम स्थान।

1918 में गांधी ने देखा, एकता का इसमें सार,
राष्ट्रभाषा का सपना बोया, फैलाया इसका विस्तार।

स्वतंत्रता के स्वर्णिम पथ पर, एकीकरण का शुभ संदेश,
14 सितंबर 1949, बना राजभाषा का आदेश।

देवनागरी की गोद में पलकर, बढ़ी सहज, सुकुमार,
अनुच्छेद 343 से लेकर, पावन हुई हर एक पुकार।
आठवीं अनुसूची में शोभित, 22 भाषाओं संग विराग,
किंतु हिन्दी को मिला गौरव, राजभाषा का शुभ फाग।

तकनीकी क्रांति के इस युग में, नहीं रही वो पीछे कहीं,
इंटरनेट पर, सोशल मीडिया पर, गूंज रही है हर कही।

विदेशों में भी इसके प्रेमी, कर रहे अब यश गान,
वैश्विक मंच पर बढ़ रही है, भारत का यह स्वाभिमान।

सरल सुवोध और वैज्ञानिक, हर क्षेत्र में इसका काम,
साहित्य, विज्ञान और कला में, करती है ऊंचा नाम।

यह सिर्फ भाषा नहीं है, यह है हमारी पहचान,
राजभाषा हिन्दी की गौरवशाली यात्रा, करती हमको महान।

हर साल सितंबर 14 को मनाते हिन्दी दिवस का पर्व,
यह स्मरण कराता है हमको, अपनी भाषा पर गर्व।

ये यात्रा अविराम चलेगी, भविष्य में भी उज्ज्वल प्रभा,
राजभाषा हिन्दी का यह सुकुट रहेगा सदैव अनबुआ।

हिन्दी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है। – मौलाना हसरत मोहानी

दया शंकर
स.श्रे- III (डिपो)
भारतीय खाद्य निगम,मंडल कार्यालय (पोर्ट डिपो)

हिंदी की गौरवशील यात्रा

वैदिक संस्कृत से जन्मी हिन्दी की कहानी
प्राकृत और अपभ्रंश से विकसित हुई वाणी,
खड़ी बोली के रूप मे मध्य युग मे आई
हिन्दी भाषा के रूप मे आज पहचान बनाई।

हिन्दी की यात्रा, गौरवशाली राह,
संस्कृति की धरोहर सभ्यता की चाह,
देवनागरी लिपि, शब्दों की रानी
भारत की आत्मा हिन्दी की वाणी।

महात्मा गांधी की चाह, राष्ट्रभाषा की आवश्यकता बताती,
हिन्दी के लक्षण, सरलता और व्यापकता को दर्शाती।
विविधता मे एकता हिन्दी का संदेश
राष्ट्रभाषा का गौरव हर हृदय मे प्रवेश।

चौदह सितंबर की तारीख, इतिहास में स्वर्णिम,
मिला राजभाषा का दर्जा, याद रहे यह दिन
महाकवियों की रचनाएँ, हिन्दी को गौरव दिलाती
स्वतंत्रता संग्राम से आजादी तक हिन्दी की जरूरत बताती।

संविधान की धारा 343, राजभाषा की व्यवस्था बताती,
हिन्दी के साथ अंग्रेजी, कुछ समय तक साथ निभाती।
राष्ट्रपति का आदेश, हिन्दी को प्राधिकार दिलाता,
संसद का कार्य, हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में चलाता।

नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को सम्मान,
हिंदी के प्रति नई दिशा का निर्माण।
संयुक्त राष्ट्र महासभा मे भी हुई मंजूरी,
हिंदी भाषा के प्रति वैश्विक समर्थन भी हुई पुरी।

अब हमें हिन्दी को अपनाकर आगे बढ़ना होगा
देश हित मे हर हिन्दुस्तानी को जगना होगा,
हिन्दी की गौरवशाली यात्रा को एक सम्मान तक पहुचाएंगे
हिन्दी के साथ भारत को एक नया हिन्द बनाएंगे।

इंजीनियरिंग उत्कृष्टता के छह दशकों का महोत्सव

ईआईएल गत 60 वर्षों से
भारत की ऊर्जा अवसंरचना में अग्रणी रहा है।

7000
परियोजनाएं जिनका मूल्य
200 बिलियन अमेरिकी डॉलर
से अधिक है

200 एमएमटीपीए
की भारत में संयुक्त
रिफाइनिंग क्षमता

91
मुख्य रिफाइनरी
परियोजनाओं सहित
10 ग्रीनफील्ड परियोजनाएँ

13000 किमी
तरल, 10000 किमी गैस,
2000 किमी एलपीजी
पाइपलाइन परियोजनाएँ

41
आधारभूत संरचना
परियोजनाएँ

150
वेल प्लैटफार्म,
40 प्रोसैस प्लैटफार्म,
4500 सब-सी पाइपलाइन

33
खनन एवं धातु
परियोजनाएँ

12
उर्वरक परियोजनाएँ

इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)

YEAR OF TRANSFORMATION

Follow us : | www.engineersindia.com

जी आर एस ई
GRSE
गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड
Garden Reach Shipbuilders & Engineers Ltd.
(भारत सरकार का उपक्रम)
61, गार्डन रीच रोड, कोलकाता – 700024
दूरभाष: +91-33-2469 8105, फैक्स: +91-33-2469 8150
100+ युद्धपोतों के निर्माता
100+
अदम्य उत्साह और अविचल प्रतिबद्धता का संगम
पोतनिर्माण के 65 गौरवशाली वर्ष
भारत के सशस्त्र बलों एवं मैत्रीपूर्ण विदेशी राष्ट्रों को 111 युद्धपोतों की सुपुर्दगी
प्रोजेक्ट 17A फ्रिगेट्स
नेक्स्ट जनरेशन ऑफशोर पैट्रोल वेसल्स
सर्वे वेसल्स (बड़े)
एएसडब्ल्यू शैलो वॉटर क्राफ्ट्स
एकॉस्टिक रिसर्च शिप
ओशियन रिसर्च वेसल
कोस्टल रिसर्च वेसल
मल्टी पर्पस वेसल्स
टीएसएच ड्रेजर
हाइब्रिड फेरी
• हम हैं राष्ट्र के सेवक • हम हैं युद्धपोतों के निर्माता • हम हैं ब्रिजों के निर्माता
युद्धपोत एवं वाणिज्यिक पोत
। फ्रिगेट्स । एएसडब्ल्यू कार्वेट्स । मिसाइल कार्वेट्स । लैंडिंग शिप टैंक्स (बड़े) । ओपीवी ।
। सर्वे वेसल्स (बड़े) । नेक्स्ट जनरेशन ऑफशोर पैट्रोल वेसल्स । लैंडिंग क्राफ्ट यूटिलिटी शिप्स ।
। एएसडब्ल्यू शैलो वॉटर क्राफ्ट्स । फास्ट अटैक क्राफ्ट्स । मल्टी-पर्पस वेसल्स ।
। ओशियन रिसर्च वेसल । एकॉस्टिक रिसर्च शिप । कोस्टल रिसर्च वेसल । ड्रेजर । अन्य वेसल्स ।
इंजीनियरिंग उत्पाद
। प्री-फैब्रिकेटेड स्टील ब्रिज । रेललेस हेलो ट्रैवर्सिंग सिस्टम । डेक मशीनरी आइटम्स ।
डीज़ल इंजन असेंबली / टेस्टिंग / ओवरहॉलिंग । 30 मिमी नेवल सरफेस गन्स
जीआरएसई से जुड़ी नवीनतम जानकारी के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें
हर काम देश के नाम
MAKE IN INDIA
किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :
marketing@grse.co.in
हमें फॉलो करें: grsekolkata | officialgrse | OfficialGRSE | garden-reach-shipbuilders-&-engineers | www.grse.in
पोतनिर्माण में उत्कृष्टता एवं गुणवत्ता की दिशा में अग्रसर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

सभी के लिए स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

फेनियोल कीटाणुनाशक

450 मिलि.
1 लि.
5 लि.
20 लि.

कैंथराडीन हेयर ऑयल

100 मिलि.
200 मिलि.
400 मिलि.

नेफ़थलीन बॉल्स

100 ग्रा.
200 ग्रा.
1 किलो.

यूथेरिया

20 ग्रा.

व्हाइट टाइगर फ़्लोर क्लीनर

500 मिलि.
5 लि.

एक्वा टाइकोटिस

100 मिलि.
400 मिलि.

बंगाल केमिकल्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उपक्रम)

CIN No. : U24299WB1981GOI033489

पंजीकृत कार्यालय : 6, गणेश चन्द्र एवेन्यू, कोलकाता - 700 013 संपर्क करें: (033) 2237 1525/26

164, मानिकतला मेन रोड, कोलकाता - 700054

4, बी.टी. रोड, पी.ओ. पानीहाटी, 24 परगना (उत्तर) कोलकाता - 700114

84/23, फैक्टरी एरिया, फजलगंज, कानपुर - 208012 उत्तरप्रदेश

वेबसाइट : www.bengalchemicals.co.in

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

1 राष्ट्र
ग्रिड
फ्रिक्वेंसी

पावरग्रिड
POWERGRID
विद्युत पारेषण के साथ जीवन उन्नयन
विश्व की सबसे बड़ी विद्युत
पारेषण उपयोगिताओं में से एक

पावरग्रिड का व्यवसाय

पारेषण
- पारेषण लाइनें - 1,80,849 सर्किट किमी
- सब-स्टेशन-286
- परिवर्तन क्षमता-5,74,331 एमवीए

परामर्श सेवाएं
- 250 से अधिक घरेलू क्लाइंट्स को पारेषण संबंधी परामर्श
- 23 देशों में वैश्विक उपस्थिति के साथ 30 से अधिक क्लाइंट्स
- पावरग्रिड लीडरशिप एकेडमी-दुनिया भर के प्रतिभागियों के लिए 550+ पाठ्यक्रम

टेलिकॉम
- 74,109 कि.मी. टेलिकॉम नेटवर्क का स्वामित्व एवं प्रचालन
- एनकेएन एवं एनओएफएन क्रियान्वयन में प्रमुख परामर्शदाता

भविष्योन्मुखी
- नवीनतम तकनीक द्वारा संचालित
- अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर

पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का एक महारत्न सार्वजनिक उपक्रम है, जो देश भर में पारेषण योजनाओं के नियोजन, डिजाइनिंग, वित्तपोषण, निर्माण, प्रचालन तथा विद्युत अनुरक्षण में संलग्न है और टेलिकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में भी प्रभावी उपस्थिति रखता है।

ET NOW
BEST ORGANISATIONS FOR WOMEN 2024

पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
केन्द्रीय कार्यालय : "सौदामिनी", प्लॉट नं.-2, सेक्टर-29, गुरुग्राम, हरियाणा-122 001 (हरियाणा)
पंजीकृत कार्यालय : बी-9, कुतब इंस्टीट्यूशनल एरिया, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016
क्षेत्रीय मुख्यालय : पूर्वी क्षेत्र-II मुख्यालय : सीएफ-17, एक्शन एरिया-1, सी, न्यू टाउन, कोलकाता-700156

CIN : L40101DL1989GOI038121 I www.powergrid.in I Follow us :

एक महारत्न पीएसयू

इस परिवर्तनशील समय में निर्यात के लिए दोहरा बीमा

निर्यातकों के लिए ऋण जोखिम बीमा

एवं

बैंकों के लिए ऋण जोखिम बीमा

आर्थिक अस्थिरता के इस समय में निर्यात के अनुकूल ईसीजीसी के साथ ऋण जोखिम का बीमा कराएं।

अधिक जानकारी के लिए ईसीजीसी के निकटतम कार्यालय से संपर्क करें।

ईसीजीसी लि.
(भारत सरकार का उद्यम)

पंजीकृत कार्यालय: ईसीजीसी भवन, सीटीएस नं. 393, 393/1 से 45, एम.वी. रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई - 400069, महाराष्ट्र, भारत
टेली : 6659 0500 / 6659 0510 • **टोल फ्री :** 1800-22-4500
ईमेल : marketing@ecgc.in • **वेबसाइट :** www ecgc in

IRDAI Regn. No. 124 | CIN No. U74999MH1957GOI010918 | @ecgclimited

वि.क्र.: NMD/197/214

आप निर्यात पर ध्यान केन्द्रित करें, हम जोखिम से रक्षा प्रदान करेंगे.

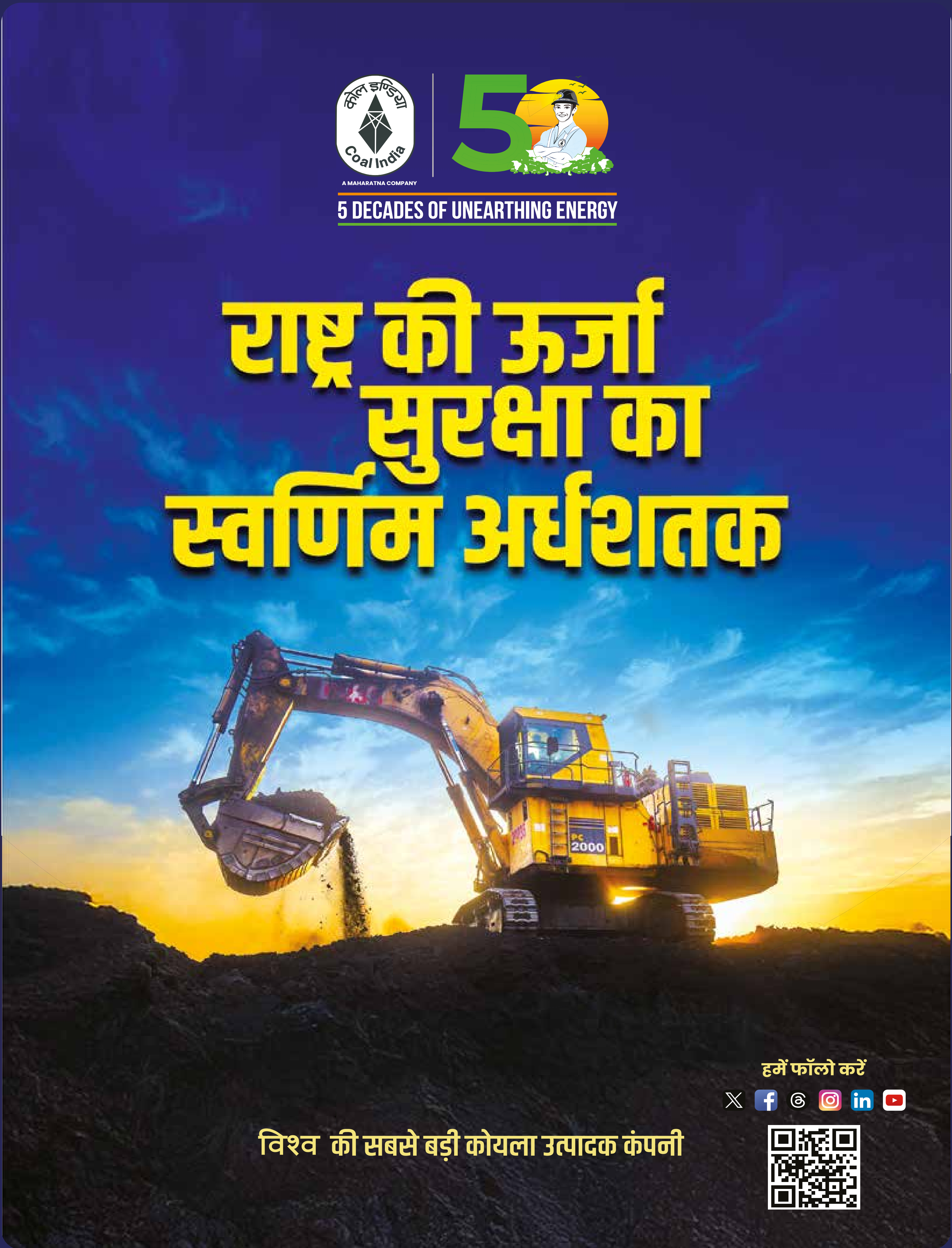
कोल इण्डिया
Coal India
A MAHARATNA COMPANY
5 DECADES OF UNEARTHING ENERGY
राष्ट्र की ऊर्जा
सुरक्षा का
स्वर्णिम अर्धशतक
PC 2000
हमें फॉलो करें
विश्व की सबसे बड़ी कोयला उत्पादक कंपनी

railwire
RailTel's Home Internet

रेलवायर के साथ रेलटेल के होम इंटरनेट से जुड़े

रेलवायर सुपर पैक 300 एमबीपीएस तक

रेलवायर से जुड़े।

रेलवायर आप तक रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि. (भारत सरकार का उपक्रम) के द्वारा पहुंचता है।

(रेल मंत्रालय के अंतर्गत एक नवरत्न, एन्टरप्राइजेज)

रेलटेल
RAILTEL

कॉल करें : 1800 1039 139

Visit : www.railwire.co.in

*निबंधन एवं शर्ते लागू

रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

ऑफिस ब्लॉक टॉवर 2, छठा तल, प्लेट-ए, एनबीसीसी बिल्डिंग, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली - 110023

वेबसाइट : www.railtelindia.com

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, संपर्क : 8820127806, ई-मेल : support@anjaniprakashan.com